Vol.22, Issue 7 | Annual Subscription ₹480

@NewsRotary

/RotaryNewsIndia

मई 2023

रोटरी समाचार

भारत

www.rotarynewsonline.org

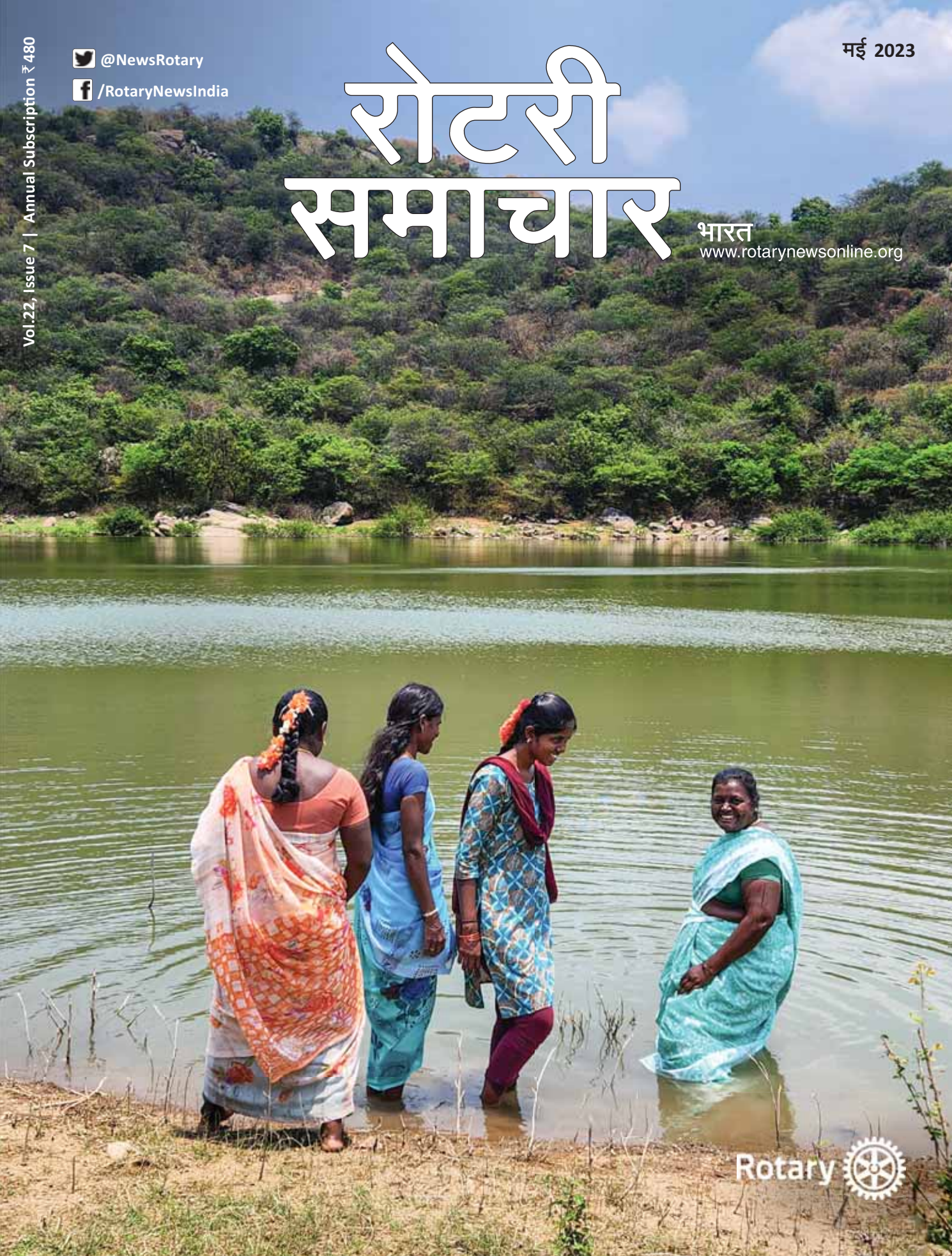

Rotary

ADVT.

PROMISE OF HEALTH AND HAPPINESS

SAY IDHAYAM • SPELL HEALTH

SATISFACTION 100% GUARANTEED

IDHAYAM
SESAME OIL

Mantra
GROUNDNUT OIL

• Unmatchable Quality and Colour • Abundant Flavour While Cooking
• Wonderful Taste • Endless Health Benefits

IDHAYAM | www.idhayam.com | office@idhayam.com | Whatsapp : 9944766661

विषयसूची

12
कृष्णागिरी में एक परिवर्तनकारी जलविभाजन परियोजना

20
एक असली बजरंगी भाईजान

28
दुनिया में उम्मीद जगाना

34
चेन्नई रोटरेकटरों ने आरआईपीई मेकिनली को चौंकाया

38
रोटेरियनों ने बोकारो के पास के एक गाँव को परिवर्तित किया

44
रेखा शेट्टी सेवा की विरासत छोड़ गई हैं

46
मुंबई में नेत्रहीनों के लिए एक सिनेमा की सौगात

48
केरल से लद्दाख तक रोटरी पीस मिशन

52
मिस्र, फराहो और पिरामिडों की भूमि

62
निःशक्त जोड़ों का भव्य सामूहिक विवाह

66
गर्मी को मात देने के कूल तरीके

68
शंकर-जयकिशन बॉलीवुड संगीत के अन्वेषक

74
हमारी प्रसन्नता हमारे पेट से जुड़ी है

76
विश्व युद्ध की कहानियां

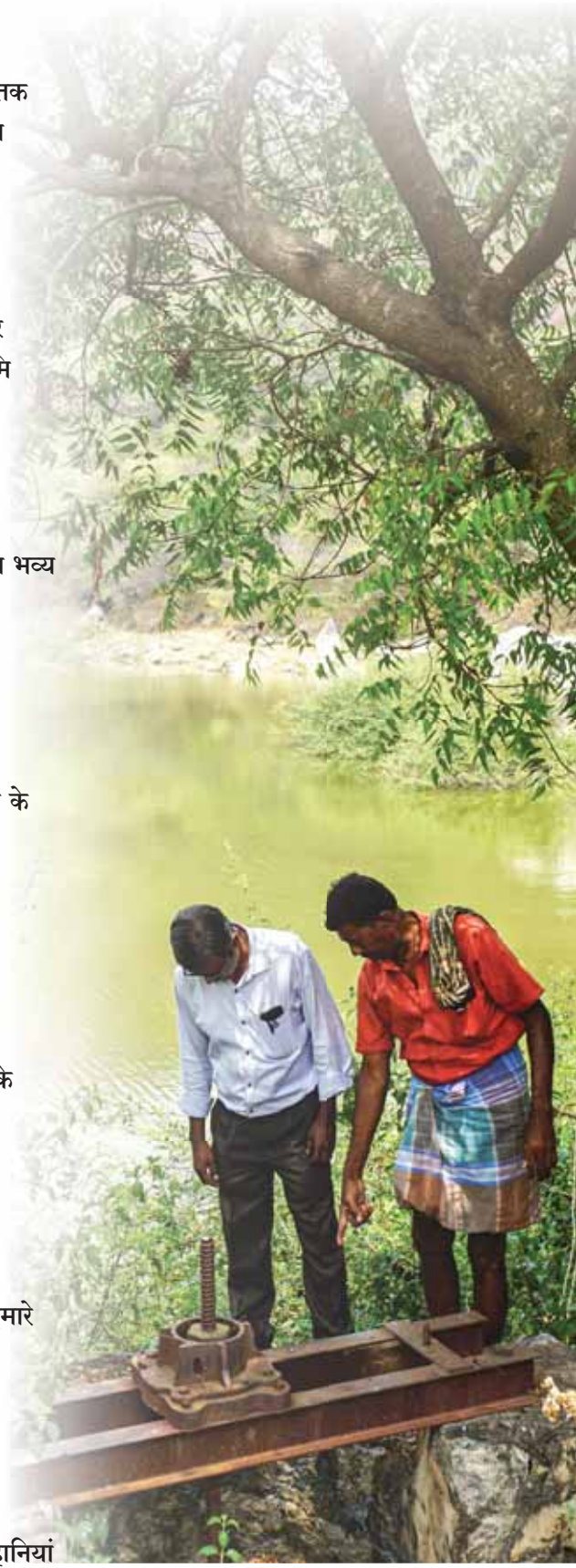

एक बढ़िया तरह से संकलित अप्रैल अंक

लड़कियों को सशक्त बनाने के लिए रो ई मंडल 3212 की एक परियोजना, *यादुमानवल* के एक सत्र से ग्रामीण स्कूल की एक छात्रा की खूबसूरत तस्वीर को अप्रैल अंक की कवर फोटो में देखकर मैं बहुत खुश हुआ। रो ई मंडल 3212 और डीजी मुत्तु द्वारा आत्म-सम्मान की कमी का मुकाबला करने के लिए युवा लड़कियों को प्रेरित करने का काम सराहनीय है। संपादक का संदेश *नारी शक्ति: कल्पना और सच्चाई* स्पष्ट रूप से लैंगिक समानता और समाज के समर्थन के महत्व को दर्शाता है जो महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए अति महत्वपूर्ण है।

रो ई निदेशक महेश कोटबागी और रो ई निदेशक ए एस वेंकटेश के संदेश दिलचस्प हैं। TRF न्यासी अध्यक्ष इयान रिसले रोटेरियनों को प्रकृति से प्यार करने और इसकी सुंदरता को संरक्षित करने के लिए प्रेरित करते हैं।

अन्य सभी लेख जैसे *पंचायत स्कूल के बच्चों ने बनाया एक टेलीस्कोप, रोटरी ने महिला ड्राइवरों को प्रशिक्षित किया,*

भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र यूथ एक्सचेंज छात्रों को लुभाता है, HIV *संक्रमितों की अपने साथियों से मुलाकात, झुग्गी महिलाओं के लिए एक* MHM *परियोजना,* RID *3000 के रोटेरियन तुर्की में भूकंप पीड़ितों की मदद करते हैं* और *एक समावेशी संगीत उत्सव* पढ़ने योग्य हैं। इसके अलावा लेख नौशाद, बॉलीवुड संगीत के कोहिनूर को पढ़कर खुशी हुई।

फिलिप मुलप्पोने एम टी
रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन
मंडल 3211

रोटरी न्यूज़ के अप्रैल 2023 के अंक को पढ़कर खुशी हुई। यह अंक कोई अपवाद नहीं है। लेख *भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र यूथ एक्सचेंज छात्रों को लुभाता है* उत्कृष्ट है। यह जानकर बहुत अच्छा लगा कि पुणे के रोटेरियनों ने RYE विद्यार्थियों को उत्तरभारत ले जाने और उन्हें इस क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से अवगत कराने की जहमत उठाई।

रो ई अध्यक्ष जेनिफर जोन्स ने अपने लेख में RYE छात्रा एनीला कैरासेडो के बारे में बात की और रोटरी यूथ नेटवर्क प्रोग्राम का शुभारंभ बिल्कुल ही अप्रत्याशित था। इसे पढ़ना दिलचस्प था।

अंत में, मैं महान संगीतकार नौशाद पर लिखे गए खूबसूरत लेख को पढ़कर अभिभूत हुआ। इस तरह की विनम्र पृष्ठभूमि से आने के बाद भी भारतीय संगीत उद्योग में उनका योगदान शानदार है। उनके बारे में पढ़ना एक शानदार अनुभव था।

एक प्रेरणादायक परियोजना

रोटरी न्यूज़ का अप्रैल संस्करण वास्तव में प्रेरणादायक है। मानव जीवन और कैसे रोटरी उन्हें सीधे तरीके से प्रभावित कर सकती है से जुड़ी अनेक सकारात्मक कहानियाँ इस अंक में मौजूद हैं, जो रोटरी के विस्तार को उजागर करती हैं। *प्रोजेक्ट सूर्या* के अंतर्गत वाई के आदिवासी घरों को रोशन करने वाली रोटरी की सफलता की कहानी मुझे रोचक लगी और इसने हमारे संगठन के रोटेरियनों की एक महान सार्वजनिक छवि प्रस्तुत की है।

सौर लैंप और स्ट्रीट लाइटें स्थापित करने के एक सरल कदम ने आदिवासियों को वन्यजीवों से बचाया जिससे इस समुदाय के बीच रोटरी की छवि कई गुना बढ़ गई है। इस भविष्यवादी परियोजना में शामिल सभी रोटेरियन प्रशंसा और सम्मान के पात्र हैं। स्थापना के बाद लाभार्थियों से मिली प्रतिक्रिया मार्मिक है और पाठकों के दिल को छू रही है। उम्मीद है कि क्लबों के ऐसे अविश्वसनीय कार्य रोटरी को हमारे देश के प्रत्येक घर तक ले जाएंगे।

डॉ जयशेखरन वी पी
रोटरी क्लब पय्यानूर - मंडल 3204

मार्च अंक में, अध्यक्ष जोन्स ने जापानी चाय मास्टर जेनशित्सु सेन के साथ हुई अपनी बैठक के अनुभवों को साझा किया जो रोटरी क्लब क्योटो के पूर्व अध्यक्ष और रो ई मंडल 2650, जापान के पूर्व गवर्नर है और जिन्होंने रोटरी क्लब क्योटो-साउथ को

आपके पत्र

जो लोग रोटरी से जुड़े नहीं है उनपर लेख प्रकाशित करना एक बढ़िया अभ्यास है जिससे यह पत्रिका अधिक रोचक, पठनीय और समृद्ध बनती है।

नारायण शग्रिथया
रोटरी क्लब मुंबई भांडुप
मंडल 3141

अप्रैल अंक की समृद्ध सामग्री के लिए बहुत-बहुत बधाई। मैंने सभी लेखों का पूरा आनंद लिया! इस अंक की प्रत्येक तस्वीर बहुत सुखद है।

मैं हमेशा संपादकीय पढ़ता हूँ और संपादक की अभिव्यक्ति की शैली से बहुत प्रभावित हूँ... जो सीधे दिल से निकलती है। मैं खुद को *नारी शक्ति* के अंतिम अनुच्छेद में देखती हूँ।

टीसीए श्रीनिवास राघवन का LBW लेख एक ऐसा पृष्ठ है जिसे मैं कभी मिस नहीं करती। कितनी कमाल की हास्यवृत्ती है! टीम रोटरी न्यूज को धन्यवाद।

चंद्रिका रघु
इनरव्हील - मंडल 318

जहाँ नफरत अभी भी राज करती है

मैंने हाल ही में मार्च अंक का संपादकीय पढ़ा जिसका शीर्षक था *नफरत पर मोहब्बत की जीत,* जो दिलचस्प तथ्यों के साथ बढ़िया तरह से संकलित किया गया है। बहुत शानदार!

मेरे क्लब में 87 सदस्य हैं। हमारे दो व्हाट्सएप ग्रुप हैं - एक का नाम रोटरी क्लब है और दूसरे का नाम 'अनऑफिशियल रोटरी' है। दुर्भाग्य से, इस अनऑफिशियल ग्रुप से सभी मुस्लिम रोटेरियनों को दूर रखा जाता है। इस संबंध में, आपका संपादकीय आंखें खोल देने वाला है। मुझे नहीं पता कि हमारे क्लब के कितने रोटेरियन इससे गुजरे हैं, काश वे सभी ऐसा करते!

जी एल वेंकटेश मूर्ति
रोटरी क्लब चिकमंगलूर - मंडल 3182

नौशाद को भावभीनी श्रद्धांजलि

हिंदी फिल्म संगीत में योगदान देने वालों में संगीतकार नौशाद पर लिखा गया लेख एस आर मधु की सर्वश्रेष्ठ श्रद्धांजलियों में से एक था। लता मंगेशकर, किशोर कुमार या मोहम्मद रफी पर श्रद्धांजलि लिखना बहुत आसान है। लेकिन नौशाद या खय्याम जैसी प्रतिभाओं पर लिखने के लिए काफी मेहनत लगती है। मैं लेखक द्वारा खय्याम पर लेख लिखे जाने के इंतजार में हूँ, और मुझे उम्मीद है कि रशीदा उन्हें लिखने के लिए जरूर कहेंगी!

संपत कुमार
पूर्व संपादक, द हिंदू बिजनेसलाइन

यह सराहनीय है कि अप्रैल अंक में अध्यक्ष जेनिफर जोन्स ने अपने लेख में इंटरेक्टर से रोटरेकटर बनी एनीला कैरासेडो के बारे में बात की। एक 18 वर्षीय इंटरेक्टर के रूप में एनीला, वेनेजुएला से अमेरिका के लिए रोटरी यूथ एक्सचेंज की एक छात्रा थी। उन्होंने महामारी की दौरान अपने सामने आने वाली चुनौतियों को याद किया। इसके अलावा, उस दौरान उनके द्वारा आयोजित की गई ऑनलाइन इंटरेक्ट बैठकों के बारे में उनका विवरण, जिसमें 80 देशों के 5,000 इंटरेक्टरों ने भाग लिया, दिलचस्प था। युवाओं के लिए उनका दृष्टिकोण इंटरेक्टरों एवं रोटरेकटरों दोनों के लिए अनुकरणीय है।

के एम के मूर्ति
रोटरी क्लब सिकंदराबाद - मंडल 3150

सुधार

जनवरी अंक के लेख *रोटेरियनों के पास जीवन बदलने की शक्ति है* के संदर्भ में, RILM कार्यक्रम के लिए छात्रवृत्ति 1 मिलियन डॉलर (₹8.2 करोड़) है न कि 1 बिलियन डॉलर जैसा कि त्रुटिपूर्ण रूप से रिपोर्ट किया गया था। इस त्रुटि के लिए खेद है।

संपादक

अधिकृत करने में मदद की। उन्होंने सेन को एक उल्लेखनीय व्यक्ति पाया जिनसे मिलकर उन्हें बहुत अच्छा लगा। हर महीने, जोन्स अपने द्वारा दौरा किए गए देशों के उन रोटेरियनों के बारे में बात करती है जिन्होंने मस्वयं से ऊपर सेवाफमें उत्कृष्ट प्रदर्शन दिखाया। दुनिया भर में निस्वार्थ रोटेरियनों के साथ उनकी बैठकें हमें सामान्य रूप से रोटरी और जिन्होंने इसके विकास में योगदान दिया है, के बारे में अधिक जानने में मदद करती हैं।

एस मुनियांडी
रोटरी क्लब डिंडीगुल - मंडल 3000

कवर पर: रोटरी क्लब मद्रास कोरोमंडल, RID 3232 ने कुप्पाचिपराई जिले में एक वाटरशेड परियोजना के तहत एक पहाड़ी के ऊपर 1,600 हेक्टेयर की एक निर्जन झील का निर्माण किया। उस झील के किनारे ग्रामीण महिलाएं।

हम आपकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत करते है। अपनी प्रतिक्रियाएं *rotarynews@rosaonline.org* या *rushbhagat@gmail.com* पर संपादक को मेल कीजिए।

rotarynewsmagazine@gmail.com पर उच्च रेसोल्यूशन वाली तस्वीरें अपनी परियोजना के विवरण के साथ मेल कीजिए।

आपके क्लब/मंडल परियोजनाओं के संदेश, Zoom मीटिंग/वेबिनार पर जानकारी और उसके लिंक केवल संपादक को ई-मेल द्वारा *rushbhagat@gmail.com* या *rotarynewsmagazine@gmail.com* पर भेजे जाने चाहिए।

WhatsApp पर भेजे संदेशों पर विचार नहीं किया जाएगा।

अधिक रोटरी परियोजनाओं के बारे में पढ़ने के लिए हमारी वेब साइट *www.rotarynewsonline.org* पर Rotary News Plus पर क्लिक करें।

रोटेरियन और सहानुभूति

मेरा मानना है कि हमारी दुनिया में यह बहादुर, साहसी और रुचिपूर्ण नेतृत्व का समय है।

पिछले महीने, इस लेख में आपने मेरी प्यारी दोस्त एनीला कैरासेडो की बात सुनी। वह हमारे रोटरी परिवार की एक अद्भुत सदस्य है और एक पूर्व इंटरेक्टर और अब एक रोटेरियन के रूप में इसी तरह की नेता है।

एनी ने पैनिक अटैक से निपटने के बारे में एक बहुत ही व्यक्तिगत कहानी साझा की थी और वैसा ही कुछ मैंने भी अनुभव किया है। इस कहानी का प्रसार और इसे मिली प्रतिक्रिया जबरदस्त है और यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम केवल अपनी ताकत को ही नहीं बल्कि अपनी कमजोरियों को भी स्वीकार करें।

जब हम रोटरी के भीतर आराम और सेवा भाव पैदा करते हुए एक दूसरे के बारे में बात करते है तो हम एक ऐसे क्लब के अनुभव का वर्णन कर रहे होते हैं जहाँ हम सभी एनी की तरह अपनी बात साझा करने में सहज महसूस कर सकें और हम सभी एक दूसरे के प्रति सहानुभूति रखते हुए एक दूसरे का समर्थन कर सकें। हम अपने जीवन में भले जो कुछ भी अनुभव कर रहे हो मगर हम जानते है कि रोटरी एक ऐसी जगह है जहाँ हम अकेले नहीं है।

हम अपनी दुनिया की मदद करने में काफी समय बिताते है, फिर चाहे वो काम पोलियो समाप्ति का हो, पर्यावरण की स्वच्छता का हो या उन समुदायों में उम्मीद जगाना हो जिन्हें इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है। कभी-कभी हम अपनी कुछ ऊर्जा और देखभाल को अपने सेवा के साथी सदस्यों और साझेदारों पर लागू करना भी भूल सकते है।

जनवरी में इंटरनेशनल असेंबली में 2023-24 के अध्यक्ष गॉर्डन आर मेकिनली और उनकी पत्नी हेतर के साथ रो ई अध्यक्ष जेनिफर जोन्स (बीच में)।

हमारे सदस्यों के आराम और उनकी देखभाल का ध्यान रखना ही उनको संतुष्ट और रोके रखने का सबसे बड़ा साधन है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि यह प्राथमिकता बनी रहे - और यह कि हम सेवा करके इन संबंधों को और मजबूत करते हैं जो मानसिक स्वास्थ्य उपचार की मांग से जुड़े कलंक को हटाने में मदद करता है और बेहतरीन देखभाल का विस्तार करता है।

इसलिए मैं न केवल रोटरी सदस्यों के लिए बल्कि हमारे द्वारा सेवा किए जाने वाले समुदायों के लिए भी वैश्विक मानसिक स्वास्थ्य प्रणाली को बेहतर बनाने में मदद करने को लेकर अध्यक्ष-निर्वाचित गॉर्डन मेकिनेली के अद्भुत विचार से बहुत खुश हूँ।

जब गॉर्डन ने ऑरलैंडो, फ्लोरिडा में इस साल की अंतर्राष्ट्रीय सभा में मानसिक स्वास्थ्य पर हमारे ध्यान की घोषणा की तो उन्होंने हमें याद दिलाया कि दूसरों की मदद करने से हमारा तनाव कम होता है और हमारी मनोदशा में सुधार होता है जिससे हमारे मानसिक स्वास्थ्य को सीधा लाभ प्राप्त होता है। अध्ययनों से पता चलता है कि दया के कार्य करना आपके अपने मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने का एक प्रभावी तरीका है। रोटरी सेवा दुनिया में आशा और हमारे जीवन में खुशी लाती है।

मानसिक स्वास्थ्य पर हमारा नया ध्यानाकर्षण चीजों को सही करने में कुछ समय लेगा मगर फिर भी यह कुछ ऐसा है जो 118 वर्षों से हमारा हिस्सा रहा है। हम *कार्यवाही करने वाले लोग* है और उस कार्यवाही के पीछे देखभाल, करुणा, सहानुभूति और समावेश शामिल है।

मानसिक स्वास्थ्य के चैंपियन बनना न केवल उचित और परोपकार की बात है बल्कि यह एक ऐसा उपकरण है जो *दुनिया में उम्मीद जगा सकता* है जैसा कि यह गॉर्डन का अपने आगामी अध्यक्षीय वर्ष का प्रेरणादायक विषय है।

यदि हम अपने सदस्यों की सेवा करते है, तो हम अपने समुदायों की सेवा करते है, और यदि हम लोगों से मिलकर उन्हें ऊपर उठाते है तो वे रोटरी की एक नवीन कल्पना करेंगे और हमारे मूल्य एवं हमारी अनंत क्षमता को पूरी तरह से समझेंगे।

जेनिफर जोन्स
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

संपादक
का संदेश

असल ज़िंदगी के हीरो

इसमें *बजरंगी भाईजान* जैसी तड़क भड़क और चकाचौंध नहीं है, करोड़ों रुपये की बॉलीवुड ब्लॉकबस्टर फिल्म जिसमें सुपरस्टार सलमान खान एक मूक-बधिर खूबसूरत छोटी बच्ची मुन्नी के लिए अपनी जान जोखिम में डाल देता है, जो गलती से पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर की सीमा से भटक कर एक भारतीय शहर में पहुँच गई है। परी जैसी दिखने वाली लड़की न तो बोल पाती है और न ही अपना ठिकाना बता सकती है और हनुमान-भक्त बजरंगी, लड़की को सीमा पार उसके घर पहुँचाने की ठान लेता है, पाकिस्तानी सुरक्षाकर्मियों के आक्रोश और क्रोध का सामना करते हुए। लेकिन हाँ, इस काम में एक पत्रकार भी उन दोनों की मदद करता है।

इस फिल्म की याद तब ताज़ा हो आई जब कुछ महीने पहले, एक बांग्लादेशी पत्रकार, शमशुल हुदा, जो एक रोटेरियन हैं और रोटरी क्लब बनानी ढाका, रो ई मंडल 3281 के सदस्य हैं, एक मानसिक और शारीरिक रूप से विकलांग युवक सुभाष से मिले, जो विकलांगों के लिए निर्मित एक सरकारी सहायता प्राप्त आश्रय गृह में रह रहा था। ये भारतीय युवक, सुभाष, जिसे उत्तर प्रदेश में उसके गाँव से तस्करी कर बांग्लादेश लाया गया था लेकिन जिसे विकलांग होने के कारण जल्दबाजी में सड़क पर छोड़ दिया गया था, वो एक ऑटो रिक्शा चालक को मिला और वह उसे पुलिस के पास ले गया। बाकी विवरण आप इस अंक में पढ़ सकते हैं।

सुभाष की अपने माता-पिता के पास वापसी के लिए सीमा के दोनों तरफ के दो रोटेरियनों की गहरी और निष्ठावान सहभागिता को धन्यवाद - बांग्लादेश में हुदा और यहां रोटरी क्लब भरूच के एक रोटेरियन रिजवाना ज़मींदार, रो ई मंडल 3060, बांग्लादेश से सुदूर पश्चिमी भारत के राज्य गुजरात — ये मानवता में आपके विश्वास को बहाल करता है। सुभाष की घर वापसी को अवरुद्ध किये हुए लालफीताशाही की मजबूत परतों को उघाड़ फेंकने के लिए हुदा और रिजवाना ने जिस दृढ़ता और जुनून के साथ कमर कस ली थी, वो देखने लायक है। विडंबना यह है कि जिस व्यक्ति को उन्होंने अपने परिवार से मिलाने में मदद की, उसकी मानसिक स्थिति के चलते वह उन्हें ठीक से धन्यवाद भी नहीं दे पाया होगा। यह अत्यंत सराहनीय है कि इस मानवीय कार्य में पीआरआईडी कमल संघवी भी शामिल थे और इस चुनौतीपूर्ण कार्य को पूरा करने के लिए उन्होंने रोटेरियन्स का मार्गदर्शन किया। अंत में, मार्च में भारत-बांग्लादेश सीमा पर जब सुभाष और उसके परिवार का पुनर्मिलन हुआ, तो वे समारोह मनाने के लिए व्यक्तिगत रूप से उपस्थित थे।

ठीक हुदा और रिज़वाना की तरह, रोटरी में और उसके बाहर हमारे जीवन में भी, चारों ओर वास्तविक नायक भरे पड़े हैं और ये लोग अलग नहीं दिखते। कोई नहीं बता सकता कि उस आदमी को क्या चीज प्रेरित करती है जो गलती से ट्रैक पर फिसल कर गिर गए किसी व्यक्ति को बचाने के लिए बिना सोचे प्लेटफॉर्म से कूद जाता है, वो भी तब जबकि सामने से ट्रेन आ रही है या आग से जलते हुए घर में फंसे हुए बच्चों अथवा पालतू जानवरों को बचाने के लिए भीतर घुस जाता है। ये फैसले एक क्षण में लिए जाते हैं, वहां सोचने का वक्त नहीं होता। इससे साबित होता है कि भलाई की भावना मनुष्य में मूल रूप से अन्तर्निहित है!

लेकिन सुभाष की घर वापसी का स्वागत करते हुए, दुनिया भर के हजारों रोटेरियनों ने रो ई मंडल 3232 से पीडीजी रेखा शेट्टी को अश्रुपूर्ण विदाई दी। हमेशा मुस्कुराती, ऊर्जावान, नवप्रवर्तक, मुखर वक्ता और ज़िंदादिल इस मददगार महिला ने रोटरी में कई शक्तिशाली पदों पर कार्य किया और उनको दी गई जिम्मेदारी को पूरी लगन और प्रसन्नता के साथ निभाया। उनके आकस्मिक निधन की खबर के साथ ही, जब सोशल मीडिया पर शोक संदेशों की बाढ़ आ गई, तब कहीं भारत में रोटरी की दुनिया को एहसास हुआ कि वह कितनी लोकप्रिय शख्सियत और विलक्षण पथप्रदर्शक थीं। एक ऐसे परिवेश में जहां महिला रोटरी नेता अभी भी कम हैं और गिनी चुनी ही नज़र आती हैं, रेखा के नेतृत्व की कमी बेहद खलेगी।

रशीदा भगत

गवर्नर्स काउंसिल

RID 2981 सेल्वनाथन वी
RID 2982 सरवनन पी
RID 3000 आई जेराल्ड
RID 3011 अशोक कंटूर
RID 3012 डॉ ललित खन्ना
RID 3020 भास्कर राम वी
RID 3030 डॉ आनंद ए झुंझुनूवाला
RID 3040 जिनेंद्र जैन
RID 3053 राजेश कुमार चुरा
RID 3054 डॉ बलवंत एस चिराना
RID 3060 श्रीकांत बालकृष्ण इंदानी
RID 3070 डॉ दुष्यंत चौधरी
RID 3080 कल्टा वी पी
RID 3090 गुलबहार सिंह रेटोले
RID 3100 दिनेश कुमार शर्मा
RID 3110 पवन अग्रवाल
RID 3120 अनिल अग्रवाल
RID 3131 डॉ अनिल लालचंद परमार
RID 3132 रुक्मेश पन्नालालजी जकोटिया
RID 3141 संदीप अग्रवाला
RID 3142 कैलाश जेठानी
RID 3150 तल्ला राजा शेखर रेड्डी
RID 3160 वोम्मिना नागा सतीश बाबू
RID 3170 वेंकटेश एच देशपांडे
RID 3181 एन प्रकाश कारंथ
RID 3182 डॉ जयगौरी हदीगाल
RID 3190 जीतेंद्र अनेजा
RID 3201 राजमोहन नायर एस
RID 3203 बी इलंगकुमारन
RID 3204 वी वी प्रमोद नयनार
RID 3211 के बाबूमोन
RID 3212 मुत्तु वी आर
RID 3231 पलनी जे के एन
RID 3232 डॉ नंदकुमार एन
RID 3240 कुषाणवा पाबि
RID 3250 संजीव कुमार ठाकुर
RID 3261 शशांक रस्तोगी
RID 3262 प्रवुदत्त सुबुद्धि
RID 3291 अजॉय कुमार लॉ

प्रकाशक एवं मुद्रक पीटी प्रभाकर द्वारा रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट के लिए रासी ग्राफिक्स प्राइवेट लिमिटेड, 40, पीटर्स रोड, रोयापेट्टा, चेन्नई - 600 014 से मुद्रित एवम दुगर टावर्स, तीसरा फ्लोर, 34, मार्शल रोड, एग्मोर, चेन्नई से प्रकाशित। संपादक : रशीदा भगत।

प्रकाशित सामग्री में अभिव्यक्त विचार योगदानकर्ताओं के स्वतंत्र विचार हैं, और आवश्यक नहीं कि वे रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट (आरएनटी) के संपादक या रोटरी इंटरनेशनल के ट्रस्टी के विचारों से मेल खाते हों। संपादकीय या विज्ञापन सामग्री से होने वाली किसी भी क्षति के लिए आरएनटी जिम्मेदार नहीं होगा। लेख और रचनाओं का स्वागत है किन्तु उन्हें संपादित किया जा सकता है। प्रकाशित सामग्री का आरएनटी की अनुमति सहित, यथोचित श्रेय देते हुए प्रयोग किया जा सकता है।

Website

निदेशकों

लक्ष्य की अहमियत

लक्ष्य सेट करना अहम है क्योंकि इससे हमारे जीवन का आकार तय होता है और हमारी कार्यवाही के लिए दिशा और उद्देश्य मिलता है। व्यक्तिगत, पेशेवर या रोटरी में, लक्ष्य सेट करने से हम अपने समय और संसाधनों के लिए प्राथमिकता निर्धारित कर सकते हैं और अपने प्रयासों को मनचाहे नतीजे तक पहुंचाने में समर्थ हो सकते हैं।

बिना लक्ष्य के, हम बेतहाशा घूमते रह सकते हैं, जिससे हमें प्रेरणा और उद्देश्य की भावना नहीं मिलती है।

जब मैं एक किशोर था, तो समय प्रबंधन में समस्याओं से जूझ रहा था और महत्वपूर्ण कार्यों पर अक्सर टालता रहता था। जब तक मैंने विशिष्ट लक्ष्य सेट करना शुरू नहीं किया, तब तक मैंने अपने विद्यार्थी और व्यक्तिगत जीवन में वास्तविक प्रगति नहीं देखी थी।

मैं बड़े कामों को छोटे, संभवतः हो सकने वाले कदमों में बाँटता था, जिससे काम करना आसान लगता था। मेरी पेशेवर जिंदगी में भी, लक्ष्य सेट करने से मुझे सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण चीजों पर ध्यान केंद्रित करने में मदद मिली है।

लक्ष्य आपको जीवन में दिशा देते हैं और स्पष्टता, उद्देश्य और प्रेरणा प्रदान करते हैं कि क्या वास्तव में महत्वपूर्ण है। यह आपके मूल्यों, विश्वासों, उत्साहों और रूचियों से संगत होता है, जिससे आप उत्साही, सक्रिय और समर्पित होते हैं अपने लक्ष्यों को हासिल करने के लिए। जब आप इन लक्ष्यों को पूरा करते हैं तो आपको आत्मविश्वास और आत्मसम्मान बढ़ाने के साथ-साथ एक पूर्णता और संतुष्टि का अनुभव होता है।

लक्ष्य मजबूती का विकास करने में मदद करते हैं, जो आपको कठिन समय में संचालित करने और विपरीत परिस्थितियों से निपटने में मदद करते हैं। वे आपको ध्यान केंद्रित, आशावादी और दृढ़ रखने में मदद करते हैं।

लक्ष्य स्वयं विश्वास को बढ़ाते हैं और आपको नए कौशल सीखने और प्रतिस्पर्धात्मक योग्यताओं का विकास करने के अवसर प्रदान करते हैं।

हाल के लक्ष्य कार्यक्रम ने आने वाले रोटरी वर्ष के लिए आने वाले नेताओं को ध्यान केंद्रित करना और महत्वपूर्ण लक्ष्यों को सेट करना सिखाया। आपके जिलों में जिला सभा और कई प्रशिक्षण कार्यक्रम हो रहे हैं।

मैं आपसे पूरी योजना बनाने की अनुरोध करता हूं। बड़ा सोचें और बड़ी कार्रवाई करें। हमारे क्लब सेवा की आत्मा होते हैं।

महेश कोटबागी
रो ई निदेशक, 2021-23

का संदेश

हमारे सदस्यों को बनाए रखना

चूंकि हम इस रोटरी वर्ष की शानदार सफलता के करीब हैं, दो गतिविधियां सबसे जीवंत क्लबों के एजेंडे पर रहती हैं। पहली आगामी वर्ष की योजना तैयार करना जिसमें समयसीमा, धन संचयन और इसके लिए जिम्मेदार टीमों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। दूसरी जिन सदस्यों की सदस्यता को जारी रखने की संभावना नहीं हैं उनकी सदस्यता बनाए रखने के तरीकों का आँकलन करना।

मैं क्लबों की इस दूसरी गतिविधि पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ। जितना सदस्यों को बनाए रखने के लिए उन्हें प्रेरित करना आवश्यक है उतना ही यह भी आवश्यक है कि इस गतिविधि पर वर्ष के अंत में ध्यान देने की बजाय पूरे वर्ष ध्यान दिया जाए। नए सदस्यों की भर्ती में हमारा क्षेत्र सबसे आगे रहा है। जहाँ प्रत्येक क्लब अपने प्रयासों के लिए बधाई का हकदार है वहीं हर साल छोड़कर जाने वाले सदस्यों की संख्या को देखना निराशाजनक है।

इस मुद्दे पर बहुत कुछ कहा गया है, फिर भी इसके प्रभाव को अनदेखा नहीं किया जा सकता! जब हम अपने दरवाजे खोलते हैं तो हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता होती है कि पीछे का दरवाजा बंद हो। कोई भी एक या दो साल बाद रोटरी को छोड़ने के लिए इसमें शामिल नहीं होता। हर कोई कुछ उम्मीद के साथ जुड़ता है और अपनी उपयोगी एवं प्रासंगिक होने की अंतर्निहित इच्छा की पूर्ति की आशा रखता है। सभी के द्वारा क्लब को जो सदस्यता भुगतान दिया जाता है वह कोई दान नहीं बल्कि एक शुल्क है। एक ऐसा शुल्क जिसके बदले में किसी चीज़ की अपेक्षा की जाती हो ।

क्लब के नेताओं से मेरा अनुरोध है कि वे पूरे वर्ष इस पहलू पर ध्यान दें। प्रत्येक सदस्य की जरूरतों और अपेक्षाओं को समझें और उनकी सभी वैध एवं उचित अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए योजनाएं बनाएं। सदस्य हर क्लब के प्राथमिक ग्राहक हैं और एक इकाई के रूप में, एक क्लब ग्राहकों की असंतुष्टी झेल नहीं सकता। जब लोग रोटरी छोड़ते हैं तो इसकी वजह शायद ही कभी रोटरी द्वारा उनके समय की मांग या इसमें शामिल लागत होती है। अधिकांश तौर पर इसका कारण क्लब में जुड़ाव की कमी का महसूस होना होता है जिससे रोटरी से उनका मोह भंग हो जाता है।

जब हम आगामी वर्ष की योजना बनाते हैं तो हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रत्येक सदस्य की कुछ भूमिका हो जिससे रोटरी में उनकी रुचि बनी रहे। हम कम से कम इतना तो कर ही सकते हैं।

ए एस वेंकटेश
रो ई निदेशक, 2021-23

न्यासी मंडल

ए एस वेंकटेश **रो ई निदेशक और अध्यक्ष, रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट**	RID 3232
डॉ महेश कोटबागी **रो ई निदेशक**	RID 3131
डॉ भरत पांड्या **टीआरएफ ट्रस्टी**	RID 3141
राजेंद्र के साबू	RID 3080
कल्याण बेनर्जी	RID 3060
शेखर मेहता	RID 3291
अशोक महाजन	RID 3141
पी टी प्रभाकर	RID 3232
डॉ मनोज डी देसाई	RID 3060
सी भास्कर	RID 3000
कमल संघवी	RID 3250
गुलाम ए वाहनवती	RID 3141

रो ई निदेशक-निर्वाचित

अनिरुध्धा रॉयचौधरी	RID 3291
टी एन सुब्रमण्यन	RID 3141

कार्यकारी समिति के सदस्य (2022-23)

डॉ दुष्यंत चौधरी **अध्यक्ष,गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3070
वेंकटेश एच देशपांडे **सचिव, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3170
डॉ एन नंदकुमार **कोषाध्यक्ष, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3232
दिनेश कुमार शर्मा **सलाहकार, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3100

संपादक
रशीदा भगत

उप संपादक
जयश्री पद्मनाभन

प्रशासन और विज्ञापन प्रबंधक
विश्वनाथन के

रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट
3rd फ्लोर, दुगर टावर्स, 34 मार्शल रोड, एग्मोर
चेन्नई 600 008, भारत
फोन: 044 42145666
rotarynews@rosaonline.org
www.rotarynewsonline.org

ROTARY NEWS
Magazine

हमारी असीम क्षमता

रोटरी एवं रोटरी संस्थान बहुत कुछ अच्छा करते है, असंख्य तरीकों से दुनिया भर के लोगों की सेवा करते है, और हम इसमें लंबे समय से है।

हम स्वयंसेवक हमारी अधिकांश परियोजनाओं को वित्तपोषित करने के साथ अक्सर उन परियोजनाओं को व्यवस्थित करने और उन्हें निष्पादित करने में महत्वपूर्ण स्वयंसेवक घंटों का योगदान करते है। रोटरी और रोटरेक्ट क्लब - 200 से अधिक देशों और भौगोलिक क्षेत्रों में हमारे विश्वसनीय साझेदार है जिनके साथ हम काम करते हैं। और जब हमारे पास किसी क्षेत्र में विशेषज्ञता की कमी होती है, तो हम विश्व स्वास्थ्य संगठन जैसे उन बाहरी संगठनों के साथ साझेदारी करते है जिनका विश्वास हमने अर्जित किया है ताकि हम जमीनी स्तर पर जीवन परिवर्तक परिणाम दे सकें।

हम एक स्थायी तरीके से समस्याओं को हल करते है। किसी भी फाउंडेशन परियोजना को शुरू करने से पहले हम समुदाय की जरूरतों का आँकलन करके उसके सदस्यों के साथ मिलकर काम करते है। फाउंडेशन भी जरूरत पड़ने पर त्वरित कार्यवाही करता है, जैसे कि हमारे आपदा प्रतिक्रिया अनुदान के माध्यम से हमने तुर्की और सीरिया में हाल ही में आए भूकंप के समय किया था।

परियोजनाओं के वित्त पोषण में हम अपने साथी सदस्यों के संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग सुनिश्चित करने के लिए राजकोषीय जिम्मेदारी और नैतिकता को लेकर रोटरी की परंपराओं को लागू करते है। रोटरी में हम अपने अनुदान के उत्कृष्ट प्रबंधक है जिसमें से अधिकांश धन मानवीय सहायता के लिए खर्च किए जा रहे है और थोड़ी बहुत राशि प्रशासनिक लागत के लिए उपयोग की जा रही है। यही कारण है कि चैरिटी नेविगेटर साल दर साल रोटरी फाउंडेशन को लगातार अपनी उच्चतम रेटिंग प्रदान कर रहा है।

चूंकि हमारा विश्वव्यापी संचालन सात ध्यानाकर्षण क्षेत्रों के लिए समर्पित है, स्वयंसेवकों और दानकर्ताओं के पास जहाँ भी अधिक आवश्यक हो वहाँ समान रूप से परिवर्तन लाने के पर्याप्त अवसर है। दरअसल, रोटरी संस्थान के माध्यम से मदद करने की क्षमता असीमित है।

इयान एच एस राइसली
ट्रस्टी अध्यक्ष, द रोटरी फौउंडेशन

हमारे संस्थान को उदारतापूर्वक योगदान दें

चूंकि हम रोटरी वर्ष के अंतिम चरण में है, तो यह समय TRF के लिए हमारे प्रयासों को दोगुना करके पुनः समर्पित करने का है। हमें अधिक करने के लिए अधिक DDF की आवश्यकता है। इसलिए, वार्षिक कोष का समर्थन करना बहुत महत्वपूर्ण है। आज वार्षिक कोष में किया गया हमारा योगदान कल अनुदान देने में हमारी मदद करेगा। मैं प्रत्येक रोटेरियन से वार्षिक कोष में आज ही निवेश करने का अनुरोध करता हूँ। इससे रोटेरियन उन जगहों पर मदद करने के लिए सशक्त होते है जहाँ इसकी सबसे अधिक आवश्यकता होती है। इन जीवन-परिवर्तनकारी सेवा प्रयासों ने अनगिनत लोगों के जीवन में सुधार किया है।

हम एक पोलियो-मुक्त दुनिया के बहुत करीब हैं। चूंकि हम सकारात्मक रूप से आगे बढ़कर पोलियो को समाप्त करने के लिए काम करते हैं इसलिए पोलियो फंड का समर्थन करना पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। रोटेरियनों के योगदान के बिना हम एक पोलियो-मुक्त दुनिया के अपने सपने को पूरा नहीं कर सकते। मैं प्रत्येक रोटेरियन से पोलियो फंड में योगदान करने का आग्रह करता हूँ।

अक्षय निधि हमारे संस्थान का भविष्य है। अक्षय निधि में हमारा निवेश यह सुनिश्चित करेगा कि रोटेरियनों की भावी पीढ़ियां रोटरी के अच्छे काम को जारी रखें।

दुनिया में तीन प्रकार के दानकर्ता होते है - एक वो जो चकमक पत्थर की तरह हथौड़ा मारे जाने पर केवल एक छोटी सी चिंगारी उत्पन्न करते है अर्थात ज़्यादा जोर दिए जाने पर थोड़ा बहुत योगदान करते है; दूसरे वो जो एक स्पंज की तरह निचोड़े जाने पर तो देते है लेकिन जल्द ही सूख जाते है अर्थात जोर दिए जाने पर तो दिल खोलकर देते है पर बाद में देना बंद कर देते है; और अन्य मधुमक्खी के छत्ते की तरह होते है जो दूसरों को उदारतापूर्वक देते ही रहते है। रोटेरियन मधुमक्खी के एक छत्ते की तरह होते हैं। वे बार-बार दिल खोलकर देते हैं।

रोटरी फाउंडेशन एकता की शक्ति है - एक रोटेरियन, एक क्लब और एक मंडल - जो कई गुना बढ़ जाती है। हम रोटेरियन हमारे समुदायों के पुनर्निर्माण, पुनर्गठन और पुनर्स्थापना में मदद कर सकते हैं। और ऐसा करने का एक बढ़िया तरीका TRF के माध्यम से है। एक साथ मिलकर हम दुनिया को बदल सकते हैं और बदलेंगे भी।

दूसरों की मदद करने के लिए आपकी उदारता और समर्पण वास्तव में प्रेरणादायक है। दुनिया में अच्छा करने की आपकी प्रतिबद्धता के लिए आपको धन्यवाद।

भरत पांड्या
ट्रस्टी, द रोटरी फौउंडेशन

Rotarians!

Visiting Chennai for business?

Looking for a compact meeting hall?

Use our air-conditioned Board Room with a seating capacity of 16 persons at the office of the Rotary News Trust.

Tariff:

₹2,500 for 2 hours
₹5,000 for 4 hours
₹1,000 for every additional hour

Phone: 044 42145666
e-mail: rotarynews@rosaonline.org

रोटरी संख्या

रोटरी क्लब	:	37,005
रोटरेक्ट क्लब	:	11,210
इंटरेक्ट क्लब	:	19,266
आरसीसी	:	12,796
रोटरी सदस्य	:	1,197,735
रोटरेक्ट सदस्य	:	174,355
इंटरेक्ट सदस्य	:	443,118

17 अप्रैल, 2023 तक

सदस्यता सारांश — 1 अप्रैल 2023 तक

रो ई मंडल	रोटरी क्लब	रोटेरियनों की संख्या	महिला रोटेरियन (%)	रोटरेक्ट क्लब	रोटरेक्ट सदस्य	इंटरेक्ट क्लब	आरसीसी
2981	136	6,413	7.48	71	462	55	255
2982	82	3,736	6.96	30	719	126	76
3000	132	5,519	10.24	103	1,624	327	215
3011	123	4,735	28.43	82	2,662	145	37
3012	151	3,757	23.10	73	1,275	95	61
3020	86	4,981	7.29	41	1,180	168	350
3030	101	5,494	14.98	122	2,171	381	383
3040	115	2,613	15.77	59	800	95	190
3053	67	2,885	16.36	35	569	55	128
3054	172	7,060	19.79	107	1,498	209	577
3060	102	5,034	14.90	67	2,415	81	144
3070	127	3,479	16.53	47	556	64	59
3080	108	4,360	12.82	120	2,211	215	116
3090	104	2,450	5.22	46	615	151	164
3100	107	2,281	13.55	15	137	39	151
3110	143	3,951	12.33	16	126	33	106
3120	89	3,709	15.77	35	398	36	55
3131	142	5,759	24.83	140	3,116	266	145
3132	91	3,682	12.95	37	514	127	168
3141	111	6,234	26.84	149	6,297	239	170
3142	103	3,913	21.21	90	3,006	149	88
3150	112	4,408	13.18	151	2,023	163	128
3160	78	2,747	9.17	32	233	26	82
3170	149	6,837	15.85	105	1,846	275	178
3181	87	3,666	10.23	37	442	224	117
3182	88	3,656	10.12	44	194	132	107
3190	169	7,079	20.36	222	5,282	294	74
3201	169	6,636	9.92	133	2,001	118	91
3203	94	4,958	7.83	76	1,003	244	39
3204	75	2,560	7.23	23	206	33	13
3211	157	5,184	8.47	9	132	37	133
3212	127	4,791	11.46	85	3,527	303	153
3231	97	3,502	8.31	37	411	99	417
3232	172	6,909	20.29	132	7,159	246	101
3240	109	3,678	16.86	71	1,433	206	226
3250	103	3,923	21.18	68	1,035	85	188
3261	91	3,302	19.93	17	61	27	45
3262	125	3,866	14.64	75	742	662	277
3291	153	4,037	25.07	135	2,045	111	706
India Total	**4,547**	**173,784**		**2,937**	**62,126**	**6,341**	**6,713**
3220	72	2,151	16.09	98	5,096	145	77
3271	171	3,426	18.68	168	2,595	304	28
3272	162	2,237	15.33	70	947	22	48
3281	312	7,372	18.08	280	2,230	157	207
3282	183	3,667	10.23	203	1,735	50	47
3292	156	5,899	18.82	184	4,951	149	135
S Asia Total	**5,603**	**198,536**		**3,940**	**79,680**	**7,168**	**7,255**

स्रोत: रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय

कृष्णागिरी में एक परिवर्तनकारी जलविभाजन परियोजना

जयश्री

NABARD और NAF के साथ मिलकर रोटरी ने तमिलनाडू के कृष्णागिरी की कुप्पाचिपराई पंचायत को एक बंजर भूमि से एक संपन्न समुदाय में बदलने में मदद की। इस साझेदारी से पहले, गाँव वाले गरीबी से जूझ रहे थे और पानी तक उनकी पहुँच सीमित थी, जिसके परिणामस्वरूप कृषि उपज कम थी, जिससे कई परिवारों को काम की तलाश में पलायन करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

चेन्नई से लगभग 270 किलोमीटर दूर कृष्णागिरी के इन गांवों के हरे-भरे खेतों से गुजरते हुए, यह कल्पना करना मुश्किल है कि कुछ साल पहले ये बंजर भूमि थी जहाँ किसान अपनी फसलों को उगाने के लिए पर्याप्त पानी की कमी से जूझ रहे थे।

लेकिन आज, रोटरी क्लब मद्रास कोरोमंडल, रो ई मंडल 3232, रोटरी क्लब स्टवान्गर इंटरनेशनल, नॉर्वे और TRF के बीच एक वैश्विक अनुदान साझेदारी की वजह से यह प्रचुर मात्रा में जल संसाधनों द्वारा पोषित हरे-भरे धान के खेतों वाला एक विशाल मरु उद्यान है। NABARD और NAF की मदद के साथ इस साझेदारी के परिणामस्वरूप इन गांवों में एक जल विभाजक और एकीकृत ग्रामीण विकास परियोजना शुरू हो पाई। इससे लगभग 2,800 घरों के 15,000 ग्रामीणों को लाभ हुआ, परियोजना अध्यक्ष जी बालासुब्रमण्यम (बाला) कहते है।

यह क्षेत्र अब आशा का प्रतीक बन गया है, जो जीवन और उत्साह शक्ति से भरा हुआ है। यह इस बात का प्रमाण है कि जब लोग एक साथ आते है और एक सामान्य लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में काम करते है तो क्या हासिल किया जा सकता है।

उत्पत्ति

2011 में, रोटरी क्लब मद्रास कोरोमंडल ने दो अन्य पड़ोसी गांवों के साथ इस समूह के बड़े गांवों में से एक कुप्पाचिपराई में 150 घरेलू शौचालय बनाने के लिए यूनिसेफ की पहल में हिस्सा लिया, जिसमें प्रत्येक शौचालय की लागत ₹10,000 आई। इस लागत में यूनिसेफ की हिस्सेदारी 50 प्रतिशत थी। पंचायत प्रमुख, कृष्णन ने कुछ अन्य ग्रामीणों के साथ मिलकर इस लागत का 40 प्रतिशत खर्च वहन किया और ''हमारा क्लब शेष 10 प्रतिशत को प्रायोजित करने के लिए सहमत हो गया,'' बाला कहते है, जो उस समय क्लब के निर्वाचित अध्यक्ष थे। ''हमने इसके बाद चेन्नई में आयोजित एक वर्ल्ड म्यूजिक शो से 15 लाख जुटाए। हमने पैसे का योगदान दिया और शौचालय बनकर तैयार हुए।''

एक साल बाद, जब उन्होंने यह देखने के लिए कुप्पाचिपराई का दौरा किया कि इस

NABARD के सहयोग से रोटरी क्लब मद्रास कोरोमंडल द्वारा बहाल की गई झील के पास एक ग्रामीण के साथ जलद्वार की जांच करते हुए क्लब के अध्यक्ष रमेश अनंत।

दक्षिणावर्त:

- *क्लब द्वारा दी गई गाय के साथ एक महिला।*
- *पंचायत नेता रोटेरियन कृष्णन ने गाय खरीदने में मदद करने के लिए एक महिला को ऋण चेक सौंपा। रोटरी क्लब मां-नगर कृष्णागिरी के अध्यक्ष वी कार्तिक राजा, रमेश अनंत, प्रोजेक्ट चेयरमैन जी बालासुब्रह्मण्यम, रोटरी क्लब मां-नगर कृष्णागिरी के सचिव जी आनंद भी चित्र में शामिल हैं।*
- *RID 3232 के डीजी एन नंदकुमार, क्लब के अध्यक्ष रमेश अनंत, परियोजना अध्यक्ष बालासुब्रह्मण्यम, RID 2982 के डीजी पी सरवनन और पीडीजी एन अशोक कुप्पाचिपराई में परियोजना के पूरा होने के अवसर पर।*
- *क्लब के अध्यक्ष रमेश अनंत एक तालाब में पानी की जांच करते हुए, कुप्पाचीपरई गांव की निवासी प्रमिला और रोटेरियन आर श्रीधर भी चित्र में शामिल हैं।*

परियोजना से ग्रामीणों को कैसे लाभ हो रहा है तो वह यह देखकर चौंक गए कि उन शौचालयों का स्टोर रूम के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा था। इसका कारण यह था कि शौचालयों के रखरखाव के लिए वहाँ पानी नहीं था और ग्रामीणों को 800-900 फीट पर भी पानी नहीं मिल पा रहा था। इसलिए बाला ने ''इस सूखाग्रस्त गांव में पानी की खोज शुरू की'' और चेन्नई में नेशनल एग्रो फाउंडेशन (NAF) से संपर्क किया, जिसके अध्यक्ष रोटरी क्लब मद्रास ईस्ट के एक सदस्य एस राजशेखर थे। NAF की स्थापना उनके पिता और पूर्व कैबिनेट मंत्री सी सुब्रमण्यम ने की थी। NAF द्वारा 2013 में कुप्पाचिपराई में एक सर्वेक्षण किया गया था। ''उन्होंने बताया कि इन गांवों में कभी-कभी बारिश होती है लेकिन पहाड़ी इलाके और कठोर मिट्टी के कारण बारिश के पानी को बचाया नहीं जा सका। NAF ने एक जलविभाजन परियोजना का प्रस्ताव रखा जिसे राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (NABARD) द्वारा संचालित किया जा सकता था।''

कार्यान्वयन चरण के दौरान इसका विस्तार तीन गांवों से आठ गाँवों तक हो गया। कुल अनुदान मूल्य 189,142 डॉलर (₹1.25 करोड़) था और NABARD का योगदान ₹1.15 करोड़ था।

क्लब ने NABARD से संपर्क किया जिसने इसे एक CSR साझेदार के रूप में स्वीकार किया जिसमें छ-ऋ एक परियोजना सुविधा एजेंसी के रूप में शामिल था। हालांकि, NABARD ने क्लब को राज्य कृषि विभाग से अनापत्ति प्रमाण पत्र प्राप्त करने की सलाह दी। बाला याद करते है, हमें अनापत्ति प्रमाण पत्र प्राप्त करने में एक साल से अधिक का समय लगा और वो भी रोटरी क्लब वेल्लोर गोल्डन सिटी के पूर्व अध्यक्ष शंकरसुब्रमण्यम की मदद से जो तब धर्मपुरी के कलेक्टर के निजी सहायक थे।

सभी कागजी कार्यवाही करते हुए क्लब ने रोटरी क्लब स्टवान्गर इंटरनेशनल, नॉर्वे के रूप में एक अंतर्राष्ट्रीय साझेदार ढूँढा, जो इसे सिर्फ एक जल विभाजन परियोजना से आगे ले जाना चाहता था। चूंकि NABARD केवल जल विभाजन परियोजनाओं में ही शामिल है, इसलिए हमने डेयरी फार्मिंग और महिलाओं के लिए सिलाई जैसी अन्य विकास परियोजनाओं के लिए 30 लाख और जोड़े, क्लब अध्यक्ष रमेश अनंत कहते है। कार्यान्वयन चरण के दौरान इसका विस्तार तीन गांवों से आठ गाँवों तक हो गया। कुल अनुदान मूल्य 189,142 डॉलर (₹1.25 करोड़) था और NABARD का योगदान ₹1.15 करोड़ था।

गांवों के लिए जल

पहले चरण में, NABARD की विशेषज्ञता की मदद से एक पहाड़ी पर स्थित 1,600 हेक्टेयर की झील से गाद निकाली गई। इस उपजाऊ गाद को झील के सामने के खेतों में फैलाया गया जिसके परिणामस्वरूप अंततः कई एकड़ों में धान की समृद्ध फसल हुई। रास्ते फलदार पेड़ों से सुसज्जित थे।

इस जल विभाजन कार्य में दो चिनाई रोधक बांध, 21 ढीले बोल्डर रोधक बांध, 6,000 जलमग्न और अंतःस्रवण तालाब, 4,300 कृषि तालाब और 1,000 पानी अवशोषण खाइयां शामिल थी। मिट्टी के कटाव को रोकने के लिए 10,000 से अधिक पेड़ लगाए गए। 110 हेक्टेयर से अधिक भूमि में चिज़ल जुताई और 5,800 क्यूबिक मीटर से अधिक जगह में कृषि बांध भी बनाए गए, बाला कहते है। ''ये सभी सुविधाएं अब पीने और खेती के लिए पर्याप्त पानी प्रदान करती है और इससे गांवों के भूजल स्तर में भी सुधार हुआ है।'' NABARD ने NAF में वैज्ञानिक कृषि पद्धतियों में किसानों को प्रशिक्षित किया जिसका उस स्थल पर एक परियोजना कार्यालय स्थित था। ''हमने उन्हें फसल संरक्षण एवं आवर्तन तकनीक और जैविक उर्वरक बनाना सिखाया, NAF के प्रवर्तक,'' महेश कहते है।

पंचायत नेता कृष्णन इस बदलाव से खुश हैं। ''इस परियोजना ने 90 प्रतिशत ग्रामीणों को गरीबी से बाहर निकाला और उनके जीवन स्तर में काफी सुधार किया,'' वह मुस्कुराते हुए कहते हैं।

महिला सशक्तिकरण

''आज गांवों की महिलाएं इस परियोजना को उन गायों के लिए अधिक याद रखेंगी जो अब उनके पास है। डेयरी फार्मिंग ने उनके हाथों में पैसा दिया है,'' बाला मुस्कुराते हुए कहते हैं। उन्हें करीब 300 दुधारू गायें सौंपी गई। ''मेरे पास अब तीन गायें है जिनमें से दो गर्भवती है। प्रत्येक गाय एक दिन में 20 लीटर दूध देती है,'' एक ग्रामीण महिला प्रमिला कहती है, जो कुप्पाचिपराई गांव में एक SHG का हिस्सा है। आविन, आरोग्य, नंदिनी और डोडला जैसे डेयरी कॉर्पोरेट उनके नियमित ग्राहक हैं।

प्रमिला का बड़ा बेटा, चिदंबरम मेडिकल कॉलेज से MBBS पूरा करने के बाद चिकित्सा में स्नातकोत्तर करने के लिए NEET की परीक्षा के लिए तैयारी कर रहा है। उसका छोटा बेटा कृषि में स्नातक है और सरकारी नौकरी की परीक्षाओं की तैयारी कर रहा है। अब इस परिवार के पास गांव में जमीन का एक छोटा सा टुकड़ा है। बाला को धन्यवाद देते हुए वह कहती है, ''हमने बहुत कठिन दिन देखे जब मैं और मेरे पति अपने बेटों को थोड़ा बहुत दलिया बनाकर खिलाने के बाद खुद सिर्फ एक गिलास पानी पीकर ही सो जाते थे। आज दूध से पर्याप्त आय और खेतों से समृद्ध पैदावार आने के साथ हम बहुत बेहतर स्थिति में है।'' इस गांव में पली-बढ़ी होने के कारण वह सूखी, पानी की कमी से जूझ रही ज़मीनों और अंतहीन एकड़ की सूखी धरती को याद करती है। ''हमने जिस समय यह मान लिया था कि हमारा भविष्य अंधकारमय है तब बाला सर ने उम्मीद की किरण दिखाई,'' वह हाथ जोड़कर नम आंखों के साथ कहती है।

> आज दूध से पर्याप्त आय और खेतों से समृद्ध पैदावार आने के साथ हम बहुत बेहतर स्थिति में है।
>
> **प्रमिला**
> कुप्पुचिपराई से एक ग्रामीण महिला।

NAF ने महिलाओं को तकनीक-प्रेमी बनने के लिए तैयार किया। वे अपने बैंक खातों की जांच करने के लिए आसानी से अपने मोबाइल फोन का उपयोग करती है। डेयरी कंपनियां उन्हें

अपने मोबाइल फोन पर उस दिन आपूर्ति किए गए दूध की अपडेट देती है - वसा का प्रतिशत, लीटर में दूध की मात्रा और राशि सीधे उनके खाते में जमा हो जाती है।

गर्मियों में मवेशियों के लिए प्राकृतिक चारे की कोई गुंजाइश नहीं होने के कारण महिलाओं को कृमि खाद, चारा और सिलेज से ग्रीष्मकालीन

कुप्पाचिपराई के उपजाऊ धान के खेतों में रोटेरियन और ग्रामीण।

चारा बनाना सिखाया गया। उन्हें स्वयं सहायता समूह बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। उद्योग ग्रेड सिलाई मशीनों के साथ कुप्पाचिपराई में परिधान बनाने के लिए एक रोटरी प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किया गया। कृष्णन कहते है, 100 से अधिक महिलाओं ने अपना प्रशिक्षण पूरा किया है। उनमें से कई कृष्णागिरी-होसुर बेल्ट में स्थित कपड़ा कारखानों में कार्यरत है। इन महिलाओं ने हाल ही में तमिलनाडु एकीकृत बाल विकास योजना के तहत 700 स्कूल यूनिफॉर्म वितरित की है।

कुछ महिलाओं ने स्वयं सहायता समूहों द्वारा दिए गए ऋण से सिलाई मशीनें खरीदी और वे अपने घरों से इस नौकरी का काम कर रही है। दो लड़कों की मां मौफजा मुस्कुराते हुए कहती है, ''मैं एक सप्ताह में कम से कम ₹600-700 कमाती हूँ और मुझे खुशी है कि मैं किसी तरह से अपने परिवार की मदद कर पा रही हूँ।'' गांवों में 20 सौर्य स्ट्रीट लाइटें लगाई गई है।

परियोजना की प्रगति की निगरानी करने के लिए रोटरी क्लब मां-नगर कृष्णागिरी, रो ई मंडल 2982 को परियोजना स्थल से निकटता होने के कारण शामिल किया गया। पिछले 8-9 वर्षों से हमारे पूर्व अध्यक्ष RCMC और ग्रामीणों के बीच एक पुल के रूप में काम कर रहे है, कृष्णागिरी क्लब के अध्यक्ष कार्तिक कहते है, जिसके सदस्य कृष्णन भी है।

एक दशक पुरानी इस परियोजना को मार्च में आधिकारिक तौर पर रो ई मंडल 3232 के DG एन नंदकुमार, रो ई मंडल 2982 के DG पी सरवनन और अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में पंचायत समिति को सौंप दिया गया।

''हमने TRF द्वारा शुरुआत में जारी की गई राशि के 60 प्रतिशत हिस्से से इस परियोजना को पूरा किया और मैं शेष 40 प्रतिशत हिस्से को संस्थान को सौंप रहा हूँ। हम इस परियोजना की सफलता का श्रेय NAF और NABARD को देते है। अन्यथा, मैं कृषि के बारे में कुछ भी नहीं जानता और मैंने केवल एक मुहावरे के रूप में जल विभाजन के बारे में सुना है,'' बाला मुस्कुराते हुए कहते है, जिनकी तेल और पेट्रोलियम उत्पादों में विशेषज्ञता है।

इस परियोजना ने रो ई का ममहत्वपूर्ण उपलब्धि पुरस्कारफ जीता और NABARD ने इसे 'सर्वश्रेष्ठ जल विभाजन परियोजना' के रूप में मान्यता दी और हमें ₹60 लाख के वित्त पोषण के साथ एक नया काम सौंपा है। NAF इसे KFW जर्मनी की सहायता से पूरा करेगा। यह एक जलवायु अनुकूलन कार्यक्रम है जिसमें मृदा स्वास्थ्य सुधार, जैविक कृषि और थोड़ी कृषि प्रौद्योगिकी शामिल है, जो कुछ गतिविधियों के लिए लागत को कम करके किसानों की आय में सुधार लाती है, बाला कहते है।

चित्र: जयश्री

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

फ़रवरी 2023 तक मंडल टीआरएफ योगदान

(अमेरिकी डॉलर में)

मंडल संख्या	एनुअल फण्ड	पोलियो प्लस फंड	एंडोमेंट फण्ड	अन्य निधि	कुल योगदान
India					
2981	33,399	566	0	1,184	35,149
2982	32,307	5,562	5,561	75,739	119,168
3000	52,509	4,844	0	100	57,454
3011	64,628	13,847	27,127	483,527	589,129
3012	16,424	752	75,335	309,160	401,671
3020	124,862	14,204	45,000	2,155	186,220
3030	98,520	5,132	10,000	2,791	116,444
3040	23,729	2,046	0	91,297	117,072
3053	58,970	136	0	40,757	99,862
3054	20,430	850	8,434	35,114	64,829
3060	110,985	5,013	1,000	160,906	277,904
3070	80,011	2,625	51,495	11,296	145,427
3080	36,940	9,558	0	80,262	126,761
3090	13,157	0	6,253	0	19,410
3100	65,740	500	25,012	0	91,252
3110	56,516	454	24,304	790,970	872,244
3120	33,076	411	0	0	33,488
3131	434,886	12,260	118,436	1,107,070	1,672,652
3132	46,739	7,693	50,000	5,602	110,034
3141	851,255	40,859	138,499	2,504,831	3,535,444
3142	257,370	4,430	28,669	250,407	540,876
3150	97,857	34,757	160,077	66,102	358,793
3160	13,823	3,453	0	3,675	20,951
3170	213,888	39,384	21,006	32,474	306,753
3181	112,219	1,205	25	4,096	117,546
3182	76,489	4,423	0	0	80,912
3190	175,935	14,187	108,411	381,511	680,044
3201	186,595	33,843	65,792	808,538	1,094,767
3203	31,797	14,508	7,049	76,209	129,563
3204	11,764	818	0	15,142	27,725
3211	168,748	6,065	20,000	2,399	197,212
3212	257,994	96,215	305	81,306	435,820
3231	62,227	23,506	32,278	11,569	129,579
3232	109,387	72,749	92,257	626,177	900,570
3240	111,221	19,080	1,000	3,850	135,151
3250	20,183	290	0	34,179	54,652
3261	21,330	917	0	5,277	27,523
3262	49,491	463	700	34,165	84,819
3291	80,083	1,986	64,981	11,346	158,395
India Total	**4,313,484**	**499,590**	**1,189,006**	**8,151,184**	**14,153,263**
3220 **Sri Lanka**	51,922	10,843	4,000	226	66,992
3271 **Pakistan**	127	25,715	0	250	26,092
3272 **Pakistan**	6,555	12,687	0	6,000	25,242
3281 **Bangladesh**	63,036	5,814	23,125	184,245	276,220
3282 **Bangladesh**	48,866	6,701	2,000	10,320	67,887
3292 **Nepal**	188,534	20,311	94,167	61,773	364,784
South Asia Total	**4,672,524**	**581,660**	**1,312,298**	**8,413,998**	**14,980,480**

वार्षिक कोष (AF) में SHARE, फोकस के क्षेत्र, विश्व कोष और आपदा प्रतिक्रिया शामिल हैं।

स्रोत: रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय

ADVT.

Rotary | MELBOURNE 2023

Join us to celebrate a colourful evening

SOUTH ASIA RECEPTION 2023

at Rotary International Convention
Melbourne, Australia

To Meet and Greet

Under the Australian Sky!!!

Register Soon..!!

Registration Fee: Rs 6,000 / US $75 per person

Date: May 28, 2023 | Time: 05:00 pm to 08:00 pm

Venue: Crown Conference Centre, 8 Whiteman Street,
Southbank VIC 3006, Australia

Bank Details:

Muruganandam. M
Account no: 00000035443584016
IFSC Code: SBIN0001363

AS Venkatesh
RI Director
Convener - South Asia Reception

Dr Mahesh Kotbagi
RI Director
Co - Convener - South Asia Reception

MMMTRICHY

PDG AKS Rtn Muruganandam M

B.E., M.B.A., M.S., M.F.T., PGDMM., DEM.,

Chairman - South Asia Reception - 2023 RI Convention, Melbourne

Chairman - Mahabs 21 (Rotary Zone Institute)
RPIC - Zone 5 (2023-2026) | District Trainer (2023-24)
District Governor (2016-17) | RID 3000
Chairman - Excel Group of Companies

PDG Rtn Sridhar J
Secretary - South Asia Reception

/mmmtrichy | www.mmmtrichy.com | Mail: mmmrotary@excelgroup.co.in | Ph: +91 93825 50001

Further Details Contact: Rtn Afroze S H: +91 75029 77555 | Rtn Pavithra C: +91 91599 90345

बाएं से: शम्सुल हुदा, PRID कमल संघवी, रिज़वाना ज़मींदार, सुभाष प्रसाद (व्हीलचेयर पर) टॉलकिन ज़मींदार, सुनीता और लक्ष्मण प्रसाद।

Rotary PEOPLE OF ACTION

एक असली बजरंगी भाईजान

रशीदा भगत

कुछ साल पहले सलमान खान की बजरंगी भाईजान ने बॉक्स ऑफिस पर रिकॉर्ड तोड़ कमाई की थी। यह अत्यंत ही हृदय विदारक, दिल दहला देने वाली कहानी थी। एक छोटी सी प्यारी और मासूम लड़की, जो बोल नहीं सकती, गलती से पाकिस्तान से कश्मीर सीमा पार कर भारत आ जाती है। नायक उसे उसके माता-पिता के पास वापस पाकिस्तान पहुंचाने के लिए अपनी जान की बाजी लगा देता है और इस काम में उन दोनों की मदद एक पत्रकार करता है।

खैर, वो तो एक काल्पनिक कहानी थी; भारत और बांग्लादेश में कुछ रोटेरियनों द्वारा सम्मिलित रूप से किये गए लगातार कठिन प्रयासों को शुक्रिया, उस लोकप्रिय फिल्म की काल्पनिक कहानी वास्तव में चरितार्थ हुई थी, फर्क सिर्फ इतना था, वास्तविक जीवन की प्रतिकृति में पाकिस्तान की जगह बांग्लादेश ने ले ली थी।

इसकी शुरुआत जून 2021 में हुई, जब ढाका से लगभग 400 किलोमीटर दूर, उत्तरी बांग्लादेश में निलफामारी जिले के एक इलाके में एक ऑटो रिक्शा चालक को सड़क के किनारे करीब 20 साल का एक मानसिक और शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्ति मिला। वह आदमी बीमार, घायल और बोलने-चलने में भी असमर्थ था, लगता था कि वहां उसे कोई छोड़ गया था। नेकदिल सामरी ने उसे अपने ऑटो में बिठाया और सीधे डिमला थाने ले गया।

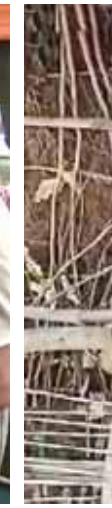

ऊपर से दाएं दक्षिणावर्त: केयर होम में सुभाष प्रसाद; सुभाष की माँ, पिता और दो बहनें; भारत-बांग्लादेश सीमा पर बेटे को देख फूट-फूट कर रोई मां सुनीता; (दाएं से) PRID कमल संघवी, पिता लक्ष्मण प्रसाद, सुभाष, टॉलकिन ज़मींदार, मां सुनीता और रिज़वाना ज़मींदार; एक ऑटो रिक्शा चालक ने सुभाष को सड़क से उठा कर सुरक्षित किया।

चूंकि वह बीमार और घायल था, इसलिए पुलिस ने उसे 13 जून, 2021 को रंगपुर मेडिकल कॉलेज के न्यूरोसर्जरी विभाग में भर्ती करा दिया।

सामान्य उपचार के लिए वहां उसे करीब तीन महीने रखा गया था। युवक को हिप जॉइंट रिप्लेसमेंट सर्जरी की ज़रूरत थी, लेकिन न तो उसके पास पैसे थे और न ही कोई देखभाल करने वाला इसलिए कोई सर्जरी नहीं हुई। उसने अपना नाम सुभाष प्रसाद बताया था।

इसके बाद सुभाष ने अस्पताल के गलियारे में रह कर लगभग एक महीना गुजारा, तत्पश्चात रंगपुर के मुख्य मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट ने विकलांगों के आश्रय स्थल *ग्लोरी शोमाज उन्नायन शोंगस्थ* संस्था की देखरेख में उसे भेज दिया।

अब इस कहानी में प्रवेश होता है एक पत्रकार, शमशुल हुदा, *एकटोर टेलीविज़न* 71 के एक वरिष्ठ कैमरामैन का जो रोटरी क्लब बनानी ढाका के सदस्य और एमेच्योर रेडियो सोसाइटी बांग्लादेश के आयोजन सचिव हैं, जो यहां रह रहे बेघर विकलांग व्यक्तियों की पूरी स्थिति के बारे में जानकारी लेते रहते हैं। इस आश्रय गृह में, उनकी नज़र विशेष रूप से सुभाष पर पड़ी क्योंकि वो बांग्ला नहीं बोल सकता था और उसे अपने मूल स्थान के बारे में कुछ याद नहीं था। वो सिर्फ अपना नाम बता सकता था और केवल हिंदी में

बातचीत कर सकता था। ''वो मुझे घर का पता नहीं बता पाया था, लेकिन उसने इतना ज़रूर बताया कि वह रामनागकांडा से था,'' हुदा ने बताया ।

यह अगस्त 2022 की बात है। इस नाम से अपनी खोज शुरू करते हुए रोटेरियन्स ने गूगल मैप्स और सर्च इंजन का इस्तेमाल किया और पाया कि यह गांव उत्तर प्रदेश के बहराइच जिले में है और लखनऊ से लगभग 200 किमी की दूरी पर स्थित है। शमशुल ने 2 अगस्त को तुरंत बहराइच जिले के पुलिस अधीक्षक केशब कुमार चौधरी से संपर्क किया और उसे पुलिस वाले के मोबाइल फोन पर व्हाट्सएप के ज़रिये सुभाष की तस्वीर भी भेजी।

इस दिशा में कोई विशेष प्रगति नहीं हुई लेकिन हुदा ने हार नहीं मानी, उन्होंने लखनऊ में अपने शौकिया रेडियो नेटवर्क की तरफ रुख किया। इस बार वो सही दिशा में बढे थे। लखनऊ में एक शौकिया रेडियो ऑपरेटर, दिनेश चंद्र शामरा ने उनके लिए सुभाष के ग्राम पंचायत के नेता सूबेदार का संपर्क नंबर लिया, जिन्होंने सुभाष की तस्वीर देखकर तुरंत पुष्टि की, कि वह युवा को व्यक्तिगत रूप से जानते थे, साथ ही इस तथ्य की भी कि वह काफी समय से गायब था।

अंततः, समय का चक्र घूमने लगा! कुछ ही मिनटों में सूबेदार ने हुदा

और सुभाष के पिता लक्ष्मण प्रसाद, मां और सुनीता, दो बहनें अंजनी और शांजीभान के बीच व्हाट्सएप वीडियो कॉल की व्यवस्था कर दी।

वो हुदा और रिज़वाना ने एक युवा और मानसिक रूप से विकलांग नौजवान को उसके माता-पिता से मिलाने के लिए सात महीने तक लगातार काम किया है। यह रोटरी का अद्भुत अंतरराष्ट्रीय चरित्र है और यह साबित करता है कि देश अलग-अलग हो सकते हैं।

PRID कमल संघवि

''मैंने बहराइच जिले के निधिपुरवा में उनके घर के पते की पुष्टि की। इसके बाद वीडियो कॉल पर एक बहुत ही भावनात्मक पारिवारिक पुनर्मिलन हुआ, लगभग डेढ़ साल बाद और उनके परिवार के सदस्य फूट-फूट कर रोने लगे। सुनीता, उनकी मां ने सुभाष की सेहत के बारे में बारे में काफी सवाल पूछे क्योंकि वह खुद अपनी देखभाल नहीं कर सकता, उसके इलाज के लिए वह दवाइयां भी बताईं जो उसे तब दी जा रही थीं जब वह घर पर रहता था,'' हुदा बताते हैं।

माता-पिता दिहाड़ी मजदूर हैं और वे एक जंगली इलाके में रहते हैं और इसलिए उन्होंने सोचा था कि सुभाष को कोई जंगली जानवर उठा कर ले गया है।

अब ध्यान गया सुभाष को उसके परिवार से मिलाने पर ; ये कोई आसान काम नहीं था क्योंकि इसमें दो देश शामिल थे - भारत और बांग्लादेश - और सुभाष के पास किसी भी तरह का कोई कागजात या पहचान प्रमाण नहीं था। उसकी स्वदेश वापसी में शामिल लोगों को आज भी नहीं पता है कि वह बांग्लादेश में उस स्थान पर कैसे पहुंचे। यह अनुमान है, शायद, उसकी तस्करी की गई थी, लेकिन मानसिक और शारीरिक रूप से विकलांग होने के कारण, उसका किसी भी तरह से उपयोग नहीं किया जा सकता था, और इसलिए बेरहमी से उसे सड़कों पर छोड़ दिया गया था।

युवक की घर वापसी के लिए, उसका पहचान पत्र बनाने के साथ, दोनों तरफ में बहुत सारी कागजी कार्रवाई करने की ज़रूरत थी। पूर्वी भारत में रोटेरियनों के माध्यम, से शारीरिक और मानसिक रूप से विकलांग युवक को उसके परिवार के साथ फिर से मिलाने के कई असफल प्रयासों के बाद, आखिरकार हुदा ने पश्चिमी भारत में, गुजरात में एक

रोटेरियन रिजवाना जमींदार, रोटरी क्लब भरूच, रोई मंडल 3060 की सदस्य के साथ संपर्क किया, जो कोविड महामारी के दौरान WIRI (वीमेन इन रोटरी इंटरनेशनल) नेटवर्क में शामिल हुई थीं। अपने क्लब की पूर्व अध्यक्ष, रिजवाना 2015 में रोटरी से जुड़ीं थी और उनके पति टॉकिन भी भरूच क्लब के एक पुराने सदस्य हैं।

उसी ढाका क्लब की एक अन्य महिला रोटेरियन, शाहिदा नाज़ हुदा, ने सुभाष की भारत वापसी और उनके परिवार के पुनर्मिलन की व्यवस्था करने के लिए सोशल मीडिया पर एक समर्पित टीम बनाने की पहल की। अंत में, नवंबर 2022 में, WIRI समूह के माध्यम से, रिजवाना के इस प्रयास में दिलचस्पी दिखाई, जिसे उनके पति टॉकिन का पूरा समर्थन मिला। रिज़वाना पहले इनर व्हील सदस्य रह चुकी थी और एक इनर व्हील क्लब की

अध्यक्ष भी, ''लेकिन चूंकि मैं समाज सेवा में और अधिक जुड़ना चाहती थी, इसलिए रोटरी से जुड़ गई। मैं भरूच में कई सामाजिक संस्थाओं में अपने रोटरी क्लब के माध्यम से सक्रिय हूं, और कलेक्टर द्वारा शुरू की गई *माई लिवेबल भरूच* कार्यक्रम की समिति में सदस्य हूं। इसके अंतर्गत, भरूच शहर की रिहायशी स्थिति में सुधार करने में स्थानीय नागरिक, सक्रिय रूप से शामिल हैं, जिसमें स्वच्छता, स्वास्थ्य वितरण, स्वच्छता और विधवाओं और अन्य वंचित नागरिकों की मदद करने जैसी कई सामुदायिक पहल शामिल हैं।''

वह अपने क्लब की भी एक सक्रिय सदस्य हैं, जो 1944 में और स्वतंत्रता से पहले स्थापित हुए भारत के पुराने क्लबों में से एक था। इसके 150 से अधिक सदस्य हैं और वह इसकी पहली महिला अध्यक्ष थीं। ''कोविड के दौरान, मैं क्लब का सचिव थीं और उस समय हमने बहुत सारी ऑनलाइन मीटिंग आयोजित कीं और न केवल पूरे भारत में बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी संबंध बनाए। इन ऑनलाइन मीटिंग्स ने दुनिया भर के लोगों से मिलना और संपर्क बनाना बहुत आसान बना दिया है। इसलिए जब जूलिया गंगवानी ने WIRI की शुरुआत की, तो मैं उसमें शामिल हो गई और उन्होंने मुझे सदस्यता समन्वयक बना दिया। तो इस तरह रोटरी क्लब बनानी ढाका की शाहिदा नाज मुझ तक पहुंचीं। ''

उन्होंने बेंगलुरु रोटरी क्लब से पायल बिस्वास से संपर्क किया; जो मुझे जानती है और मुझसे पूछा कि मैं क्या मदद कर सकती हूं। उन्होंने कई रोटेरियन से संपर्क किया लेकिन कोई वालंटियर नहीं मिल रहा था। मैंने कहा कि मैं यह करूंगी।

दिलचस्प बात तो यह है कि रिज़वाना के अपने ''मित्रों ने उसे ''सावधानी बरतने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि यह मसला भारत और बांग्लादेश के बीच है; आपका फोन टैप भी किया जा सकता है, इस मामले की परिस्थितियां थोड़ी सदिग्ध लगती हैं, आदि। यहां तक कि पीआरआईडी कमल सांघवी, जिन्होंने हमारी इतनी मदद की है, मुझे सलाह दी कि फोन कॉल पर होने वाली बातचीत को इस मामले तक ही सीमित रखें और इससे ज्यादा कुछ नहीं।''

यह बात है अक्टूबर 2022 की। इसके पश्चात रिजवाना ने शमशुल हुदा के साथ मिल कर काम शुरू कर दिया। सुभाष बांग्लादेश में कैसे पहुंचा, यह

वो मुझे घर का पता नहीं बता पाया था, लेकिन उसने इतना ज़रूर बताया कि वह रामनागकांडा से था।

शम्सुल हुदा

पूछे जाने पर वह कहते हैं, ''वास्तव में ये कोई नहीं जानता। हमने फैसला किया था कि हम कैसे और क्यों के मामले में नहीं पड़ेंगे; पुलिस पहले से जांच कर रही थी और यह उनका काम था। हमने अपना ध्यान कागजी कार्रवाई को आगे बढ़ाने पर केंद्रित किया। मैं ढाका में भारतीय उच्चायोग को नियमित रूप से फोन करती थी और बस इतना ही कहती : मैं गुजरात, भारत से फोन कर रही हूं, और अपने भारतीय नागरिक सुभाष प्रसाद की वापसी प्रक्रिया के बारे में बात करना चाहती हूं! और शमशुल उनकी सरकार के साथ काम करेंगे। हमारा उद्देश्य सुभाष को भारत में उनके घर और परिवार में वापस पहुँचाना था।

रिज़वाना के संकल्प को इस बात से और दृढ़ता मिली थी कि ''एक बार मलेशिया में हमारा पासपोर्ट खो गया था और रोटरी और रोटेरियन के लिए को धन्यवाद, 24 घंटे के भीतर भारत वापस आने के लिए ज़रूरी दस्तावेज की व्यवस्था हो गई थी। मैंने और मेरे पति दोनों ने महसूस किया कि अब इसे लौटने की बारी हमारी थी कि हम किसी और की मदद करें।''

इस परियोजना के लिए वह महत्वपूर्ण पुलिस अधिकारी के निरंतर संपर्क में थी - पश्चिम बंगाल में डीएसपी स्पर्श निलंगी जो बांग्लादेश सीमा पर उन लोगों के साथ मिलकर काम करता है। उन्होंने वास्तव में आव्रजन प्रक्रिया को सरल बनाने में मदद की। बहराइच के डीएसपी राजीव सिसोदिया ने भी अपनी तरफ से कागजी कार्रवाई में मदद की थी।

आखिरकार दस्तावेज बन गए; हुदा ने सुभाष की भारत वापसी को हरी झंडी दिखाने के लिए बांग्लादेश में विदेश मंत्रालय और पुलिस अधिकारियों के साथ

स्पर्श निलंगी, SDPO बगदाह, पश्चिम बंगाल, टॉलकिन और रिज़वाना ज़मिंदार की उपस्थिति में PRID संघवी द्वारा सम्मानित की गई।

काम किया; रिजवाना ने भारतीय उच्चायोग से अपने आपातकालीन यात्रा दस्तावेज़/पासपोर्ट प्राप्त करने के लिए काम किया, और अंत में, रिजवाना और टॉकिन कोलकाता पहुँचे ''जहाँ हमें उस शहर में PRID कमल संघवी के खूबसूरत घर में ठहराया गया था।''

20 मार्च को सुभाष के माता-पिता के साथ एक अन्य ग्रामीण को निधिपुरवा गांव से बहराइच रेलवे स्टेशन तक कोलकाता की यात्रा करने के लिए एक कार की व्यवस्था की गई थी. लेकिन चूंकि उनकी ट्रेन टिकट कन्फर्म नहीं हो रही थी, इसलिए उनके लिए फ्लाइट टिकट (लखनऊ से कोलकाता तक) मौके पर ही तत्काल बुक कर दिए गए और उन्हें रात भर लखनऊ के एक होटल में भी ठहराया गया। इन सबका मतलब अतिरिक्त खर्च था, लेकिन ज़मींदार दंपत्ति ने मदद के लिए कदम बढ़ाया। ''हाँ, हमें अपनी जेब से पैसे खर्च करने थे लेकिन मेरे पति ने कहा अच्छा काम है, चलो करते हैं!''

अब तक सांघवी भी इस में शामिल हो चुके थे और जब सुभाष के माता-पिता को कोलकाता से लगभग 90 किमी दूर भारत-बांग्लादेश सीमा पेट्रापोल ले जाने का दिन आया, तो वे तीन घंटे की कार यात्रा कर ज़मींदारों के साथ शामिल हो गए; दूसरी तरफ सुभाष के साथ शमशुल हुदा थे।

सुभाष ने अपने माता-पिता को पहचान लिया और माता-पिता के साथ बेटे का पुनर्मिलन अत्यंत भावनात्मक था। भावुक संघवी ने कहा, ''यह साबित करता है कि एक रोटेरियन के लिए एक व्यक्तिगत मानव जीवन का क्या मूल्य है हुदा और रिजवाना ने एक युवा और मानसिक रूप से विकलांग नौजवान को उसके माता-पिता से मिलाने के लिए सात महीने तक लगातार काम किया है। यह रोटरी का अद्भुत अंतरराष्ट्रीय चरित्र है और यह साबित करता है कि देश अलग-अलग हो सकते हैं और सीमाओं से विभाजित हो सकते हैं लेकिन लोगों के भीतर धड़कने वाले दिल दयालु होते हैं। यह रोटरी और उसके मानवीय पक्ष के अंतर्राष्ट्रीय चरित्र का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।''

रिज़वाना ने यूपी के बहराइच में सुभाष और उनके परिवार के सदस्यों के सत्यापन के प्राथमिक समन्वय के लिए डीजी अनिल अग्रवाल, रो ई मंडल 3120 की मदद की भी सराहना की। पीआरआईडी संघवी ने पूरी प्रक्रिया के तहत हमारा सकारात्मक प्रोत्साहन करते हुए निरंतर मार्गदर्शन और समर्थन दिया है।''

पेट्रोपोल में जीरो पॉइंट पर इस मार्मिक कहानी की रिपोर्ट करने के लिए बांग्लादेश मीडिया का एक बड़ा समूह मौजूद था। उस शाम कोलकाता में, RIDE अनिरुद्धा रॉयचौधरी ने इस ''अंतर्राष्ट्रीय शांति कार्यक्रम'' का जश्न मनाने के लिए एक रात्रिभोज का आयोजन किया था। लेकिन वास्तविक उत्सव तो निधिपुरवा के जंगल क्षेत्र में आयोजित किया गया था, जहां पूरा गांव सुभाष की वापसी का जश्न मना रहा था... तीन साल के लंबे अंतराल के बाद एक विकलांग बेटे का अपने माता-पिता के साथ पुनर्मिलन वास्तव में उनके मुश्किलों भरे जीवन में एक जगमगाता पल था।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

हमने फैसला किया था कि हम कैसे और क्यों के मामले में नहीं पड़ेंगे; पुलिस पहले से जांच कर रही थी और यह उनका काम था। हमने अपना ध्यान कागजी कार्रवाई को आगे बढ़ाने पर केंद्रित किया।

रिज़वाना ज़मिंदार

ADVT.

KURIL FOUNDERS B-SCHOOL www.kfb-school.org

KFBS

Kuril Founders B-School

The Business School for Entrepreneurs and Family Business

ADMISSION NOW OPEN

START 03 JULY

PROGRAMS STUDY

- Entrepreneurship & Innovation Management
- Family Business Management
- SCM & Logistics
- 100+ Certificate programs Essential to Business

ABOUT US

Autonomous Private Business School Based out of Mumbai. Provide Hybrid mode Programs.

Contact Us
+91- 86556 58744
admission@kfb-school.org

REGISTER NOW 30% OFF

दुनिया में उम्मीद जगाना

वी मुत्तुकुमारण

मैं अच्छे से जानता हूँ कि रोटरी का कार्य इवांसटन, शिकागो स्थित वन रोटरी सेंटर की 18वीं मंजिल पर ही नहीं किया जाता बल्कि यह 200 से अधिक देशों और भौगोलिक क्षेत्रों में स्थित 37,000 से अधिक क्लबों में से हर एक में प्रत्येक रोटेरियन की भागीदारी के साथ किया जाता है ताकि दुनिया में उम्मीद जगाई जा सकें," आरआईपीई गॉर्डन मेकिनली ने कहा। चेन्नई में रो ई मंडल 3232 और 3231 द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किए गए एक *मीट एंड ग्रीट* कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि वह स्कॉटलैंड रग्बी टीम के बहुत बड़े प्रशंसक हैं जो मएक साथ मिलकर काम करती हैफ और इसके सभी 15 बेहद प्रतिभाशाली खिलाड़ी, सफल होने के लिए एक टीम के रूप में आगे बढ़ते है।

उन्होंने दो घटनाओं को याद किया जहाँ रोटरी ने बहुत ही कष्टमय जीवन जीने वाली युवा लड़कियों में उम्मीद जगाई थी। 2006 के मध्य में वह और हेतर पूर्वी अफ्रीका के रवांडा की यात्रा पर गए थे जहाँ वे "मैरी की दुर्दशा को देख आहत हुए, वह एक युवा लड़की थी जो 12 साल की उम्र में ही अनाथ हो गई थी। 1994 के नरसंहार के दौरान उसके पिता की हत्या कर दी गई थी और नागरिक सेना की गैंग द्वारा उसकी मां का यौन उत्पीड़न किया गया था जिससे एचआईवी से संक्रमित होने के कारण उनकी मृत्यु हो गई थी। "बहुत ही कम उम्र में मैरी को अपने दो छोटे भाइयों की देखभाल करने के साथ अपने परिवार को चलाना पड़ा।" लेकिन उसे ब्रिटेन में रोटरी क्लबों के साझेदार एक गैर सरकारी संगठन, होप एंड होम फॉर चिल्ड्रन के रूप में एक प्रायोजक मिला जिसकी वजह से उसे नि:शुल्क शिक्षा और सुरक्षित आवास मिला और वह दोबारा स्कूल जा पाई।

जहाँ रोटरी ने केवल हाई स्कूल तक मैरी की शिक्षा प्रायोजित की थी, वहीं वह आगे की पढ़ाई करना चाहती थी। इस मोड़ पर, एक स्कॉटिश वकील ने सामने आकर किगाली विश्वविद्यालय में उसकी शिक्षा को वित्त पोषित किया। अब वह स्नातक है और एक उद्यमी है।

पिछले साल अगस्त में, उन्होंने मनीला के रोटरी क्लबों के एक विशाल बाल हृदय चिकित्सा कार्यक्रम के अंतर्गत चार साल की एक लड़की की दिल की सर्जरी होते देखी। उन्होंने कहा कि रोटरी बार-बार दुनिया भर के पीड़ित लोगों में उम्मीद जगाती है।

मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता

लंबे समय से मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे इसके साथ जुड़े सामाजिक कलंक के कारण एक निषिद्ध विषय रहे हैं और इस धारणा को बदलना होगा। विशेष रूप से बच्चे और युवा वयस्क कोविड के बाद इससे अधिक जूझ रहे हैं। "मैं चाहता हूँ कि क्लब अपने समुदायों की मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के लिए एक समर्थन प्रणाली का विस्तार करें, मेकिनली ने कहा। उन्होंने क्लबों से मानसिक बीमारी से निपटने हेतु कार्यवाही की योजना तैयार करने से पहले अपने समाज की आवश्यकताओं को जानने के लिए मआवश्यक मूल्यांकनफ करने का आग्रह किया।

आगामी वर्ष रो ई मंडल 3232 के लिए विभाजन से पहले का 'अंतिम अवसर' होगा और "क्या आप इस अंतिम वर्ष को सर्वश्रेष्ठ बनाने की चुनौती के लिए तैयार हैं," रो ई निदेशक ए एस वेंकटेश ने नवनिर्वाचित अध्यक्षों से पूछा। "हमारे सामने कई मुद्दे और महत्वपूर्ण मामले हैं लेकिन हमें यह समझने की आवश्यकता है कि टकराव से कुछ हासिल नहीं होगा और आपसी सहयोग ही आगे बढ़ने का एकमात्र रास्ता है," उन्होंने कहा।

आरआईपीई का प्रतिनिधियों से परिचय कराते वक्त वेंकटेश ने याद किया कि 2007-09 में जब मैकनली रो ई निदेशक थे तब वह डिस्ट्रिक्ट गवर्नर थे। 26 साल की उम्र में मैकनली, एडिनबर्ग में एक सफल दंत सर्जन के रूप में खुद को प्रमाणित करने के बाद 1984 में रोटरी क्लब साउथ क्वीन्सफेरी से जुड़े। एक बेकेस्ट सोसाइटी के सदस्य के रूप में यह आरआईपीई स्कॉटिश हास्य के हुनरबाज, बेहद मैत्रीपूर्ण एवं एक मिलनसार नेता है। वेंकटेश ने आगे कहा कि "उन्हें स्वादिष्ट भोजन और संगीत बहुत पसंद है जबकि उनकी साथी हेथर एक संगीत शिक्षक

RIPE गॉर्डन मेकिनली और हेतर के साथ (बाएं से) रो ई मंडल 3232 के निर्वाचित सचिव राजगोपाल, पीडीजी जे श्रीधर, RID ए एस वेंकटेश, पीडीजी कृष्णन वी चारी, PRID पी टी प्रभाकर, शोभना और डीजीई रवि रमन, PDGs एस कृष्णास्वामी, जे बी कामदार, डीजी एन नंदकुमार, रो ई मंडल 3234 के डीजीएन एन एस सरवनन, पीडीजी नटराजन नागोजी, रो ई मंडल 3234 के डीजीएनडी विनोद सरोगी, रो ई मंडल 3203 के PDGs पी एम शिवशंकरन और ई के सगादेवन चेन्नई में।

एवं एक महान गायिका हैं। मेकिनली चाहते है कि "रोटरी को हर जगह उन सभी के अनुरूप मौजूद होना चाहिए जो हमारा हिस्सा बनकर दुनिया में अच्छा करने में हमारी मदद करने की इच्छा रखते हैं।"

रो ई मंडल 3232 ने 890 नए सदस्यों और पांच नए क्लबों को जोड़ा है, और हम जून के अंत तक टीआरएफ को देने के लिए 2.15 मिलियन डॉलर के अपने लक्ष्य को पार कर लेंगे, डीजी एन नंदकुमार ने कहा। कुल मिलाकर, चेन्नई क्लबों ने ₹53.76 करोड़ की लागत वाली 4,755 सेवा परियोजनाएं

लंबे समय से मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे इसके साथ जुड़े सामाजिक कलंक के कारण एक निषिद्ध विषय रहे हैं और इस धारणा को बदलना होगा।

RIPE गॉर्डन मेकिनली

की हैं और *प्रोजेक्ट शक्ति* स्तन कैंसर की शुरुआती पहचान और उपचार के लिए महिलाओं की जांच करने की एक महत्वाकांक्षी परियोजना है।

रो ई मंडल 3231 के डीजी जे के एन पलानी ने बताया कि *प्रोजेक्ट वेलिचम* (उजाला) के अंतर्गत प्रत्येक में पांच सिलाई मशीनों वाले 45 व्यावसायिक केंद्रों ने अब तक 20,000 महिलाओं को सिलाई का प्रशिक्षण दिया है। जहाँ 175,000 डॉलर के एक वैश्विक अनुदान की मदद से एक मैमोग्राफी बस शुरू की जाएगी वहीं पीडीजी अबीरामी रामनाथन जैसे उदार दानकर्ताओं की वजह से छह एम्बुलेंस सेवारत हैं, उन्होंने कहा। हरित मिशन के अंतर्गत 2.5 लाख से अधिक ताड़ के बीज वितरित किए गए; विभिन्न शिविरों में लगभग 2,600 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया; और चिकित्सा एवं नेत्र जांच शिविरों से 1,000 से अधिक लोग लाभान्वित हुए। "मैंने श्रीलंका के लिए 43 सदस्यीय टीम का नेतृत्व किया था और हमने जाफना, किलिनोची और मुल्लईतिवु के सरकारी अस्पतालों को चिकित्सा उपकरण दान किए और प्रोजेक्ट धनवंतरी के तहत बच्चों को स्कूल की आवश्यक सामग्री वितरित की, उन्होंने आगे कहा।

इससे पहले डीजीई रवि रमन ने कहा कि उनके कार्यकाल के दौरान संयुक्त क्लब बैठकों और सहयोगी परियोजनाओं को प्रोत्साहित किया जाएगा। "आगामी वर्ष के लिए, मेरे पास 23 नए क्लबों (मौजूदा 172 क्लबों के साथ) के गठन का लक्ष्य है, जिसमें 1,200 नए सदस्य (5,873) और 500 नए रोटेरेकटरों (7,155) को जोड़ना भी शामिल हैं," उन्होंने कहा। रमन का लक्ष्य 400,000 डॉलर के वार्षिक कोष के साथ टीआरएफ को देने के लिए 2.6 मिलियन डॉलर एकत्रित करने का है। प्रत्येक क्लब के पास रोटेरियन और एन्स के मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े मुद्दों पर सामयिक हस्तक्षेप करने के लिए एक समग्र कल्याण पीठ मौजूद होगी, उन्होंने कहा।

AKS सदस्य एस वी वीरमणि, पीडीजी रामनाथन, पीडीजी जेबी कामदार, पूर्व अध्यक्ष रंजीत प्रताप और विजय भारती (रोटरी क्लब मद्रास), डीजीएनडी विनोद सरावगी और देव दामोदरन को मैकनली द्वारा सम्मानित किया गया। पीडीजी जे श्रीधर को टीआरएफ को देने के 2.5 मिलियन डॉलर के लक्ष्य के अंतर्गत पोलियो कोष के लिए 155,000 डॉलर से अधिक एकत्रित करने हेतु संस्थान प्रशस्ति

डीजी नंदकुमार, RIPE मेकिनली और हेतर को (बाएं से) रोटेरियन डॉ रामकुमार, लक्ष्मी, विनीता, RID वेंकटेश, सुमेधा और रो ई मंडल 3231 के डीजी जे के एन पलानी की उपस्थिति में एक प्लाक भेंट करते हुए।

पत्र देकर सम्मानित किया गया। चेन्नई के आसपास की सात झीलों को बहाल करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय विज्ञापन एजेंसी के ओलिव क्राउड अवार्ड्स से ग्रीन क्रूसेडर ऑफ द ईयर अवार्ड पाने वाले रोटरी क्लब मद्रास के पूर्व अध्यक्ष पी एन मोहन को आरआईपीई द्वारा सम्मानित किया गया।

उन्होंने 600 एकड़ में फैली बर्बाद झीलों को पुनः बहाल करने के लिए रोटेरियनों की एक टीम का नेतृत्व किया, जिससे आठ लाख लोगों और 1,000 एकड़ से अधिक खेत लाभान्वित हुए।

चित्र: वी मुत्तुकुमारण

पीडीजी सगादेवन के लिए अंतर्राष्ट्रीय पोलियो पुरस्कार

टीम रोटरी न्यूज़

रशीदा भगत

RIPE गॉर्डन मेकिनली ने हेतर और RIDE अनिरुद्धा रॉय चौधरी की उपस्थिति में पीडीजी ई के सगादेवन को पुरस्कार प्रदान किया।

रो ई मंडल 3203 के पीडीजी ई के सगादेवन के पोलियो उन्मूलन और पोलियो कोष के लिए धन एकत्रित करने के इतने सालों के कार्य को कोलकाता में *लक्ष्य* बैठक में मान्यता दी गई जहाँ उन्हें नवनिर्वाचित रो ई अध्यक्ष गॉर्डन मेकिनली द्वारा अंतर्राष्ट्रीय पोलियो पुरस्कार और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। यह भी बताया गया कि पोलियो उन्मूलन के लिए उनकी सेवा 1992 में उनके रोटरी से जुड़ने के साथ ही शुरू हुई थी। स्वयं एक सर्जन होने के नाते वह एक सच्चे ''पोलियो उन्मूलन चैंपियन और पोलियो योद्धा'' हैं जिन्होंने पोलियो उन्मूलन से संबंधित अनेक गतिविधियों पर अपना ध्यान केंद्रित रखा। वह चार साल तक एंड पोलियो नाउ के सदस्य रहे और उन्होंने पोलियो उन्मूलन में रोटेरियनों और आम जनता दोनों को शामिल होने हेतु प्रेरित करने के लिए जोन 4, 5, 6 और 7 में एक प्रमाण पत्र के साथ अपनी तरह की पहली एंड पोलियो पिन के साथ-साथ पोलियोप्लस सोसाइटी पिन की शुरुआत की।

पीडीजी सगादेवन इंडिया नेशनल पोलियोप्लस सोसाइटी के सदस्य थे और पोलियो कोष के एक नियमित योगदानकर्ता होने के साथ ही उन्होंने दूसरों को योगदान करने हेतु प्रेरित किया। पोलियो की बूंद पिलाने में विभिन्न क्लबों द्वारा उठाए गए कदमों की निगरानी करने में उनका योगदान उत्कृष्ट है। ■

आइये, हम मेलबर्न में मिलते हैं

बड़े नाम वाले वक्ताओं और ब्रेकआउट सत्रों से लेकर ध्वज समारोह और हाउस ऑफ फ्रेंडशिप तक, मेलबर्न में 2023 रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन सौंदर्य और प्रेरणा से भरा होगा।

इस महीने मेलबर्न में, लाइबेरिया की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता लेमाह गबोवी को लड़कियों को सशक्त बनाने के बारे में सम्मेलन के मुख्य मंच से अपनी कहानी सुनाते हुए सुनें। रोटरी सदस्य और विशेषज्ञ रोटरी एक्शन प्लान को जीने के तरीके के बारे में सुझाव साझा करेंगे, दुनिया की सबसे बड़ी चुनौतियों का सामना करने के लिए आप जो कुछ भी कर सकते हैं, अपने नेतृत्व कौशल को चमका सकते हैं, क्लब विविधता को बढ़ा सकते हैं, और नए लोगों को उनके पसंद की रुचि दे सकते हैं।

फिर, क्लबों, फैलोशिप, एक्शन ग्रुप और भागीदारों द्वारा परियोजनाओं के बारे में जानने के लिए हाउस ऑफ फ्रेंडशिप देखें जो आपको अपने क्लब के प्रभाव का विस्तार करने के लिए सक्रिय करेंगे। उदाहरण के लिए, प्रोजेक्ट पार्टनर शेल्टरबॉक्स से नमूना आपातकालीन आश्रय के अंदर कदम रखें।

ऑस्ट्रेलिया के रोटरी क्लब/ऑफ/सोशल इम्पैक्ट नेटवर्क के चार्टर अध्यक्ष रेबेका फ्राई का कहना है कि हाउस/ ऑफ /फ्रेंडशिप रोटरी का एक सच्चा त्योहार है और रोटरी की वैश्विक पहुंच की भावना प्राप्त करने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक है।

2022 कन्वेंशन के 'हाउस ऑफ़ फ्रेंडशिप' में आभासी वास्तविकता अनुभव।

प्रदर्शनी मंजिल दोस्तों के साथ मिलने, अपने रोटरी नेटवर्क में जोड़ने और उन परियोजनाओं के नेताओं की तलाश करने के लिए एक प्रमुख स्थान है, जो आपकी रुचि को चिंगारी देते हैं।

इसके अलावा, यह बहुत मजेदार है। पिछले हाइलाइट्स में चीनी शेर नर्तक और कोरल रीफ बहाली परियोजना के बारे में एक आभासी वास्तविकता का अनुभव शामिल है। एक्सपो, 27 -31 मई के सम्मेलन के हर दिन मेलबर्न कन्वेंशन और प्रदर्शनी केंद्र में है।

अधिक जानें और **convention.rotary.org** *पर रजिस्टर करें।*

क्या आपने
रोटरी न्यूज़ प्लस
पढ़ा है?
या यह आपके जंक
फोल्डर में जा रही है?

हम हर महीने आपकी परियोजनाओं को प्रदर्शित करने के लिए ऑनलाइन प्रकाशन **ROTARY NEWS PLUS** निकालते हैं। यह प्रत्येक सदस्य को महीने के मध्य तक ई-मेल द्वारा भेजा जाता है।

रोटरी न्यूज़ प्लस हमारी वेबसाइट www.rotarynewsonline.org पर पढ़ें।

लक्ष्य के कुछ पल

टीआरएफ ट्रस्टी अज़ीज़ मेमन ने RIPE गॉर्डन मेकिनली और हेतर को (बाएँ से) RIDE टीएन सुब्रमण्यन, PRIP शेखर मेहता, राशी, RID महेश कोटबागी, RIDE अनिरुद्धा रॉय चौधरी, शिप्रा, PRID कमल संघवी और पीडीजी ई के सगादेवन की उपस्थिति में स्मृति चिन्ह भेंट किया।

शिप्रा और RIDE चौधरी अपने पोते के साथ।

RIPE मेकिनली के साथ RIDE चौधरी।

पीडीजी रवि वदलामणि, RID कोटबागी, राशि, PRIP मेहता, RID चौधरी, शिप्रा और PRID संघवी की उपस्तिति में लक्ष्य अध्यक्ष सगादेवन ने दीप प्रज्वलित किया।

पीडीजी सगादेवन और RIDE चौधरी, RIDE सुब्रमण्यन को एक प्लाक भेंट करते हुए।

हेतर और शिप्रा के साथ RIDE सुब्रमण्यन।

बाएं से: PRID कमल संघवी, रोटेरियन रविशंकर डाकोजू और PDG सुरेश हरि।

DGEs रितु ग्रोवर (बैठे हुए) और (बाएं से) जयश्री मोहंती, आशा वेणुगोपाल, मंजू फड़के और बी सी गीता के साथ PRIP मेहता और राशि।

ट्रस्टी मेमन और राशी।

चित्र : रशीदा भगत और के विश्वनाथन

रुपरेखा: कृष्णा प्रतीश एस

चेन्नई रोटरेकटरों ने आरआईपीई मेकिनली को चौंकाया

किरण ज़ेहरा

चेन्नई में तमिलनाडु रुबिक्स क्यूब एसोसिएशन में प्रशिक्षण ले रहे दो युवा छात्रों ने रो ई के निर्वाचित अध्यक्ष गॉर्डन मेकिनली के लिए शहर की उनकी यात्रा के दौरान उनके लिए एक यादगार सप्राइज़ तैयार किया जहाँ उन्होंने रो ई मंडल 3232 के रोटरेकटरों को संबोधित किया। लिखितेश (7) और जिवितेश (8) ने उनके लिए एक विशेष उपहार तैयार करने के लिए 567 रूबिक्स क्यूब्स को हल करने में दो घंटे बिताए। डीआरआर गौतम राज ने कहा, "हम उन्हें कुछ ऐसा देना चाहते थे जिसे वह कभी नहीं भूल पाएं।" मेकिनली ने एथिराज कॉलेज में रोटरेकटरों से मुलाकात की और वह तब आश्चर्यचकित रह गए जब उन्होंने अपने 2023-24 की अध्यक्षीय थीम, *क्रिएट होप इन द वर्ल्ड* को प्रदर्शित करने वाली 5 बाय 4 फीट की फ्रेम का अनावरण किया।

उन्होंने उन दोनों लड़कों और चेन्नई के रोटरेकटरों का आभार व्यक्त करते हुए कहा, "इतना यादगार उपहार पाकर मैं अभिभूत हूँ। दिल को छू लेने वाला यह भाव उस प्रभाव को दर्शाता है जो युवा किसी पर भी डाल सकते है। आप ऊर्जा और उत्साह के साथ खुले दिल से देते हैं।" अपनी थीम के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा "इस थीम का लक्ष्य दुनिया में लोगों में आशा पैदा करना और संघर्षों से उबरने में उनकी मदद करना है। हमारी दुनिया को अब पहले से कहीं ज्यादा उम्मीद की आवश्यकता है।"

रोटरेक्ट क्लब एथिराज कॉलेज के रोटरेकटरों द्वारा भरतनाट्यम के प्रदर्शन के साथ रोटरेकटरों ने मेकिनली और उनकी पत्नी हेतर का पारंपरिक लोक नृत्य के साथ स्वागत किया। मेकिनली ने मज़े लेते हुए रोटरेकटरों के साथ नृत्य किया और उनकी यात्रा में एक सांस्कृतिक स्पर्श डालने के उनके प्रयासों की सराहना की।

आश्चर्य आगे भी जारी रहा जब इन नवनिर्वाचित रो ई अध्यक्ष को एक तस्वीर भेंट की गई, जो उन्होंने सभा को संबोधित करने के लिए मंच पर आने से कुछ ही क्षण पहले नवनिर्वाचित रोटरेक्ट अध्यक्षों और सचिवों के साथ ली थी। "आप लोग शानदार हैं। यह बहुत दिलचस्प होता जा रहा है," उन्होंने चकित होकर कहा।

रोटरेकटरों ने उनके वर्ष की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। मेकिनली ने कहा कि "आपके काम और समुदाय में सकारात्मक प्रभाव डालने के प्रयासों से पूरी तरह से प्रभावित है। आप आकार और कार्यवाही के मामले में पूरी दुनिया के सबसे बड़े

रोटरेक्ट केवल रोटरी का भविष्य नहीं है, यह रोटरी का वर्तमान है। नि:संदेह यह हमारा आज है। हमारी उम्मीद आप पर टिकी है।

गॉर्डन मेकिनली
रो ई के निर्वाचित अध्यक्ष

फ्रेम का अनावरण करने के बाद आरआईपीई गॉर्डन मेकिनली और उनकी पत्नी हेतर के साथ (बाएं से) सुमेधा नंदकुमार, डीआरआर गौतम राज, मंडल रोटरेक्ट सचिव केसिक्का कुमारागुरु, लिखितेश, जिवितेश, डीजी एन नंदकुमार, रोटेरियन और रोटरेक्टर्स।

RIPE मेकिनली, दर्शकों को फ्रेम की हुई तस्वीर दिखाते है जो उन्होंने आने वाले रोटरेक्ट अध्यक्षों और सचिवों के साथ ली थी। (बाएं से) डीजी नंदकुमार, डीआरआर गौतम राज, हेतर और आरआईडी ए एस वेंकटेश भी चित्र में शामिल हैं।

रोटरेक्ट मंडलों में से एक हैं। मैं यहाँ खड़े होकर आपको और आपके द्वारा प्राप्त की गई उपलब्धियों को देखकर यह कह सकता हूँ कि उम्मीद जागेगी।"

एक संगठन के रूप में रोटरी की स्थिरता के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने जवाब दिया कि "रोटरेक्ट केवल रोटरी का भविष्य नहीं है, यह रोटरी का वर्तमान है। नि:संदेह यह हमारा आज है। रोटरेक्ट के साथ हम एक और 118 साल पूरा करने में सक्षम होंगे। हमारी उम्मीद आप पर टिकी है।"

कार्यक्रम का समापन मंडल के विभिन्न रोटरेक्ट क्लबों द्वारा आर आई पी ई मेकिनली और हेतर को सम्मानित करने के साथ हुआ। इस कार्यक्रम में रो ई निदेशक ए एस वेंकटेश और डीजी एन नंदकुमार भी मौजूद थे।

चित्र: किरण ज़ेहरा

Rotary PEOPLE OF ACTION

महाराष्ट्र में एक आदिवासी समाज के लिए वाटरव्हीलस

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब डोंबीवली मिडटाउन की ओर से दिए गए वाटर व्हील्स के साथ ग्रामीण।

रोटरी क्लब ऑफ डोम्बिवली मिडटाउन, रो ई मंडल 3142 ने मुंबई से 150 km दूर स्थित मोखाडा जिले में कुटुंबों को जलवाचक वितरित किए। यह कुटुंबों दो आदिवासी गांवों - डोंगरवाड़ी और कुरलोद में रहते हैं, जहां कोई सही जल आपूर्ति योजना नहीं है। "वे पास के जंगल में स्थित कुओं और तालाबों से पानी लाने के लिए लम्बा फासला तय करते हैं," क्लब के अध्यक्ष अजय कुलकर्णी ने कहा, "स्त्रियों अपने सिर और कूल्हों पर रखे बर्तनों में हर रोज़ 10-15 लीटर पानी ले जाती हैं, जिससे वे शक्तिहीन और थके हुए हो जाते हैं।"

क्लब ने इनोविंक एस्पायर और शिलर हेल्थकेयर से CSR फंड और ₹50,000 के अपने योगदान सहित, खाद्य-ग्रेड, उच्च घनत्व वाले पॉलीथीन से बने वॉटरव्हील खरीदे। गांव के मुखिया द्वारा निर्देशित कुलकर्णी ने कुछ दूसरे सदस्यों के साथ घरों में पानी के पहिये वितरित किए। हर एक कंटेनर में 45 लीटर पानी रखा जा सकता है और इसकी गर्दन पर फिट किए गए हैंडल की सहायता से खींचा जा सकता है। क्लब के अध्यक्ष ने कहा, "यह साधन पानी को ले जाने के बोझ को बहुत कम कर देगा और गांव की ले जाने हेतु काम को आसान बना देगा।" ■

चिकित्सा मिशन बारीपदा

2007 और 2023 में

राजेन्द्र साबू

मयूरभंज कलेक्टर और जिला मजिस्ट्रेट विनीत भारद्वाज बारीपदा में चिकित्सा मिशन का उद्घाटन करते हुए, पीआरआईपी राजेंद्र साबू चित्र में शामिल हैं।

कोविड महामारी के तीन साल बाद, हमारा एक मेडिकल मिशन इस वर्ष मार्च 2023 में बारीपदा, ओडिशा गया था। बारीपदा से हमारी 16 साल पहले की यादें जुडी हैं। हमने रोटरी में चिकित्सा मिशन तब शुरू किये थे जब उषा ने मुझे सीमाओं के पार जा कर सेवा करने के लिए कहा था और हमने पहले मिशन की शुरुआत 1998 में युगांडा से की थी। हमने भारत में भी ऐसे ही चिकित्सा मिशन करने का निर्णय लिया और 2006 में, हमने कालाहांडी, उड़ीसा के अत्यंत गरीब इलाके को चुना। 2007 में अगला बारीपदा था।

पीडीजी डीएन पाधी के सहयोग से सब कुछ आसानी से हो गया। डीजी ध्यानचंद ने मिशन के लिए पीडीजी सुभाष गर्ग से परियोजना निदेशक बनने के लिए का अनुरोध किया था जो मार्च 6-14, 2007 से आयोजित होना था। हमारे आदर्श वाक्य, *स्वयं से ऊपर सेवा* की भावना के साथ, हमारे साथ 27 डॉक्टरों और स्वयंसेवकों की समर्पित टीम थी। डीजी ध्यानचंद और पीडीजी सुभाष, उनकी पत्नी प्रवीण, मैं और मेरी पत्नी उषा ने दिल्ली से भुवनेश्वर के लिए उड़ान भरी।

दोपहर का भोजन हमने भद्रक में होटल ओरियन में किया, जिसकी व्यवस्था रोटरी क्लब भद्रक मिड-टाउन के अध्यक्ष अजय अग्रवाल ने की थी, जिसके बाद हम अपने गंतव्य बारीपदा के लिए रवाना हुए। रोटरी क्लब बारीपदा का नेतृत्व डीजी प्रमोद रथ ने किया था।

बारीपदा पहुंचकर हमारे डॉक्टरों ने जिला अस्पताल का मुआयना किया तो बड़े हताश हो गए। हालांकि, हम जिला कलेक्टर वीके पांडियन के निर्देशन में जिला प्रशासन और अस्पताल के पदाधिकारियों के आभारी हैं, जिन्होंने हमारी मदद की। अस्पताल में कोई आधुनिक उपकरण नहीं था, खासकर डेंटल विभाग जिसमें डेंटल चेयर भी नहीं थी। युवा जिला कलेक्टर ने स्वास्थ्य अधिकारियों को आवश्यक व्यवस्था करने का आदेश दिया। हम प्रभावित हुए जब उन्होंने यह सब 48 घंटों के भीतर कर लिया। जब हमने अस्पताल छोड़ा, तो सुविधाओं में काफी सुधार हुआ था, अस्पताल का पूरा स्टाफ खुश था और हमारी टीम का आभारी था।

हजारों मरीजों की जांच की गई थी। विशिष्ट सर्जनों द्वारा की गई कुछ सर्जरी तो बहुत ही मुश्किल थीं। इसके अलावा निम्नलिखित सर्जरी और प्रक्रियाएं सफलतापूर्वक निष्पादित की गईं: नेत्र संबंधी: 106 मोतियाबिंद, 108 ओपीडी; त्वचा: 1,431 ओपीडी; प्लास्टिक: 32+50 अतिरिक्त प्रक्रियाएं; त्र्यूरशस्त्री रोग : 25 प्रमुख सर्जरी; अस्थि : 62 मरीज, 132 प्रक्रियाएं + 85 ओपीडी; दन्त: 405 मरीज, 2 बड़ी सर्जरी और 446 प्रक्रियाएं, ईएनटी: 12 सर्जरी + 85 ओपीडी। ओपीडी के मरीजों को दवाएं भी उपलब्ध कराई गईं।

वहां दो साल के बच्चे का एक गंभीर मामला आया था, जिसकी एनेस्थिसियोलॉजिस्ट डॉ प्रमिला चारी के सहयोग से विशेषज्ञ प्लास्टिक सर्जन डॉ पीएस चारी ने क्लेफ्ट-ख सर्जरी की थी। ऑपरेशन के एक घंटे के भीतर ही बच्चे के माता-पिता ने सहानुभूतिवश वश, बच्चे को खाना दे दिया जिससे उसका दम घुटने लगा। स्थिति बिगड़ने के कारण उसका बचना मुश्किल लग रहा था। डॉक्टर प्रमिला चारी रात भर बच्चे की देखभाल करती रहीं, प्रोटोकॉल देती रहीं और हम सबने रात में बच्चे के लिए प्रार्थना की थी। ईश्वर ने सुन ली और सुबह 4 बजे उन्होंने फोन किया कि बच्चा अब सुरक्षित है।

हर प्रमुख क्षेत्र से विशेषज्ञ डॉक्टर वहां मौजूद थे :शोभित घई, जीएस बरार, एसके सैनी, विजय सहगल, जयंत नवानी, रमन अबरोल,

पीएस चारी, प्रोमिला चारी, विजय पाल, वनिता गुप्ता, जीके बेदी, तापोशी पटनायक, गुलशन ठकराल, रश्मी ठकराल और सहायक डॉक्टर अर्पिता गुप्ता, मालिनी सहगल, रावत और राजीव कुमार।

अंतिम दिन हमने भंडारा आयोजित किया था जिसे हजारों लोगों ने ग्रहण किया। लौटने से एक रात पहले, जिला अधिकारियों ने एक स्थानीय सांस्कृतिक कार्यक्रम, रात्रिभोज का आयोजन किया और हम सभी को स्मृति चिन्ह भेंट किए। हमारी वापसी पर, यशवीर सिंगला ने पुरी में जगन्नाथ मंदिर के दर्शन की व्यवस्था की थी। रात हमने वहीं गुजारी फिर अगली सुबह हम अपनी फ्लाइट पकड़ने के लिए भुवनेश्वर निकल लिए।

अब बारीपदा में फरवरी 2023 के चिकित्सा मिशन की तरफ चलते हैं। डॉक्टरों और स्वयंसेवकों की हमारी टीम ने उड़ानें भरीं और हवाई अड्डे पर उनका स्वागत डीजी प्रवुदत्त सुबुद्धि और मंडल के अन्य नेताओं ने किया। होटल में हमारी टीम का स्वागत पीडीजी डीएन पाढ़ी और उनकी पत्नी दीपा ने किया। हमारे स्वागत में आयोजित रात्रि भोज पर मंडल के पूर्व गवर्नरों से मुलाकात हुई।

मिशन के सूत्रधार पीडीजी सुभाष गर्ग और हमारे मेंटर पीडजी डॉ आरएस परमार थे। सभी डॉक्टर और स्वयंसेवकों को होटल एवीए गेस्ट हाउस में रुकवाया गया था जो काफी आरामदेह था। हमारे साथ गए थे डॉक्टर शंकर गोसावी, सुरिंदर सोढ़ी, भूषण कुमार, कृष्णा शशांक, अनिल कुमार, आरएस परमार, गिरीश गुने, आर भरत, सरला मल्होत्रा, विनीत नागपाल, अनिल वर्मा, प्रज्ञा सैनी, निवेदिता सिंह, सुशील सैनी, रवजीत सिंह, देवेंद्र पालीवाल, सुरिंदर मक्कड़ और मान सिंह। प्रवीण गर्ग ने सभी सदस्यों से हमारी मुलाकात करवाई, डीजी वेद काल्टा, डीजीई अरुण मोंगिया, बृज परमार, गुनीत आनंद, चारु मोंगिया, सुनीता सैनी, उषा और मैं।

इस मिशन का उद्घाटन 13 फरवरी को बारीपदा के उपायुक्त द्वारा किया गया था। इसके उपरान्त, हमारे डॉक्टरों ने स्थानीय डॉक्टरों के साथ मिल कर विभिन्न ओटी में सभी विशिष्टताओं की सर्जरी करना शुरू कर दिया। हमने देखा कि सिविल अस्पताल में पैरा स्टाफ के साथ सभी मशीनें और उपकरण उपलब्ध थे,और सभी सामग्री व उपकरण नवीनतम थे।

प्रोजेक्ट चेयरमैन पीपी बीरेंद्र साहू और क्लब अध्यक्ष राकेश सिंह की अगुआई में हुई बैठक में हमारा परिचय स्थानीय क्लब के स्वयंसेवकों से कराया गया। प्रवीण गर्ग स्वयंसेवकों गुनीत और चारू के साथ चाय/कॉफी और दोपहर के भोजन की व्यवस्था देख रहे थे। वहीं मौजूद डीजीई अरुण मोंगिया जहां आवश्यकता थी, वहां सेवा दे रहे थे।

उषा और अरुण मोंगिया वरिष्ठ नागरिकों के पास गए, वे सभी बहुत बूढ़ी और अकेली महिलाएँ थीं, उनमें से कुछ की याददाश्त चली गई थी और उनके लिए दोपहर का विशेष भोजन तैयार किया। अगले दिन, उषा और अरुण कुष्ठ-निगेटिव रोगियों के घर गए और उन्हें भोजन कराया। उनकी आँखों से कृतज्ञता के आंसू बह रहे थे। एक अन्य दिन, उषा, प्रवीण गर्ग और बृज परमार मानसिक रूप से विकलांग लड़कियों से मिलने गए, उन्हें नाश्ता और आइसक्रीम दी। उन्होंने गाने गाये और नृत्य किया, हम में से कुछ लोग, हमारे मेजबान राजकुमार खंडेलिया के कहने पर, सुबह उनके खेत और आस पास के क्षेत्रों में टहलने निकल गए थे।

बालासोर रोटेरियन महाशिवरात्रि के दिन हमें रोटरी आई हॉस्पिटल ले जाना चाहते थे, हम वहां भी गए। डॉ परमार के साथ मैंने वो अस्पताल देखा और प्रभावित हुआ कि यह रोटेरियनों द्वारा स्थापित किया गया था और बिना अनुदान के रोटेरियनों द्वारा चलाया जा रहा था। मुख्य मेजबान आईपीडीजी शांतनु पाणि थे, जिसमें राजकुमार खंडेलिया सहित अन्य प्रमुख रोटेरियन भी उपस्थित थे।

मिशन के दौरान ये सर्जरी की गईं: प्लास्टिक 31, आई 120, ईएनटी 13, ऑर्थो 32, जनरल 91, स्त्री रोग 58, और डर्मेटोलॉजी 462, कुल मिलाकर 810। बारीपदा ओपीडी में लगभग 4,000 मरीजों का मुफ्त इलाज किया गया और मुफ्त दवाएं दी गईं। एक संतोषजनक मिशन पूरा कर, हमने 20 फरवरी को बारीपदा में अपने मेजबानों से विदाई ली और वापस घर लौट आए।

बारीपदा, ओडिशा में चिकित्सा मिशन टीम के साथ पीआरआईपी साबू और उनकी पत्नी उषा।

लेखक पूर्व रो ई अध्यक्ष है

Rotary PEOPLE OF ACTION

रोटेरियनों ने बोकारो के पास के एक गाँव को परिवर्तित किया

रशीदा भगत

रोटरी क्लब बोकारो स्टील सिटी, रो ई मंडल की वजह से झारखंड राज्य में स्टील सिटी बोकारो से लगभग 30 किमी दूर अलगोरा नामक एक गांव में रोटरी को हर कोई जानता है। क्लब के सदस्य 2017 से यहाँ नियमित रूप से आते हैं, जब उन्होंने लगभग 2,500 लोगों के इस गांव को गोद लेने का फैसला किया था। इस गांव में रविवार की शाम को अधिकतर इस क्लब के रोटेरियन बच्चों के लिए कुछ न कुछ खाने को लाते हैं!

समर्पित प्रयासों, कड़ी मेहनत, ध्यान केंद्र और अनेक कल्याणकारी गतिविधियों की वजह से अल्गोरा में आज एक सुसज्जित प्ले स्कूल है जहाँ पर आपको मुस्कुराते हुए चेहरे नज़र आते है, जिसमें पांच कक्षाएं है और एक अन्य कमरा है जिसमें क्लब एक होम्योपैथी क्लिनिक चलाता है। इस क्लिनिक में क्लब ने बुखार, पेट दर्द, अन्य दर्द और विकारों जैसी साधारण बीमारियों के इलाज के लिए एक डॉक्टर को नियुक्त किया है ताकि प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल सेवाएं प्रदान की जा सकें इसके अलावा ग्रामीणों के लिए अन्य बीमारियों की जांच करने हेतु नियमित रूप से चिकित्सा शिविर भी आयोजित किए जाते है और गंभीर चिकित्सा समस्या के लिए बोकारो शहर भेजा जाता है। यह होम्यो क्लिनिक हर महीने लगभग 500-600 रोगियों को चिकित्सा सेवा प्रदान करता है।

गांव में क्लब द्वारा संचालित होम्योपैथी क्लीनिक।

मुखपृष्ठः अल्गोरा गांव में रोटरी क्लब बोकारो स्टील सिटी द्वारा निर्मित प्ले स्कूल में एक कला कार्यक्रम प्रगति में।

यह पूछे जाने पर कि 78 सदस्यों वाले इस क्लब ने इसी गांव को गोद लेने का फैसला क्यों किया तो क्लब के सचिव घनश्याम दास ने कहा कि 2017 में जब क्लब के नेतृत्वकर्ताओं ने एक गांव में कुछ कल्याणकारी परियोजनाएं करने का फैसला लिया तो अलगोरा गाँव के सरपंच को जानने वाले एक सदस्य ने क्लब द्वारा इस गांव को गोद लिए जाने का सुझाव दिया ताकि क्लब के सदस्य पंचायत के नेताओं और उनके सदस्यों के साथ परामर्श करके सामुदायिक कल्याणकारी गतिविधियों की योजना बना सकें।

''सबसे पहले हम एक स्कूल बनाना चाहते थे और पंचायत के सदस्यों ने हमें ऐसा करने की अनुमति प्रदान करने के साथ ही एक भूखंड भी दिया जिस पर हमने छह कमरों का निर्माण किया। इनमें से पांच कमरों में हम प्ले स्कूल चलाते हैं जहाँ हमने B Ed डिग्री धारक सात शिक्षकों को नियुक्त किया है, जिनके वेतन का भुगतान हम करते हैं। पहले यहाँ लगभग 150 बच्चे कक्षाओं में उपस्थित रहते थे, जहां बुनियादी शिक्षा तथा प्राथमिक व्यवहार जैसे अच्छा शिष्टाचार जिसके अंतर्गत विनम्रता से बोलने के तरीके आदि सिखाये जाते हैं। लेकिन कोविड के बाद, केवल 130 बच्चे ही वापस लौटे, वह कहते हैं।

क्लब की अध्यक्ष निरूपमा सिंह आगे कहती हैं कि इस प्ले स्कूल, जिसे रोटेरियनों ने आशा की किरण नाम दिया है, में अंग्रेजी और हिंदी की वर्णमाला, संख्या और गिनती जैसे बुनियादी अंकगणित पढ़ाए जाते हैं। बच्चों को यूनिफ़ॉर्म, स्टेशनरी, किताबें, पानी की बोतलें, जूते और मोजे उपहार में दिए जाते हैं।

दास आगे कहते हैं कि यह स्कूल 30-35 छात्रों के कुछ बैचों के लिए चित्रकारी और कला के लिए तीन महीने का एक पाठ्यक्रम भी चलाता है। एक सेवानिवृत्त और प्रसिद्ध कला शिक्षक मोहन आजाद हमें नि:शुल्क सेवा प्रदान करते हैं और विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करते हैं। हमारे विद्यार्थी अंतर-शहरी और अंतर-राजकीय प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं और हर साल वे पुरस्कार जीतकर हमारे क्लब को गौरवान्वित करते हैं।

जन्मदिन, शादी की सालगिरह, त्योहारों आदि जैसे विशेष अवसरों पर क्लब के सदस्य पैसे दान करते हैं और रविवार को इस पैसे का उपयोग बच्चों के लिए खान-पान और अन्य जरूरी चीजों के प्रबंधन हेतु किया जाता है, जिसके अंतर्गत रोटेरियन उनके लिए नाश्ता, जूस, स्टेशनरी आदि लाते हैं।

इस प्ले स्कूल परिसर का उपयोग शाम को 15 वयस्कों के बैचों के लिए वयस्क साक्षरता कक्षाएं चलाने के लिए भी किया जाता है, ''जहाँ हम उन्हें बुनियादी शिक्षा प्रदान करते हैं ताकि वे अपने नाम पर हस्ताक्षर कर सकें,'' बैंक में अपना खाता खोल सकें और इसे स्वयं संचालित कर सकें, निरुपमा आगे कहती हैं।

जब डीजी संजीव कुमार ठाकुर ने इस गांव का दौरा किया तो क्लब ने बच्चों को यूनिफ़ॉर्म वितरित किए और फलों के पेड़ लगाए।

क्लब इन 2,500 ग्रामीणों के लिए नियमित स्वास्थ्य देखभाल और जांच शिविरों का आयोजन करता है। क्लब के सदस्य और बाल रोग विशेषज्ञ, डॉ एस सी मुंशी द्वारा इन शिविरों की योजना और उनका निष्पादन किया जाता हैं साथ ही हृदय रोग विज्ञान, नेत्र विज्ञान, दंत चिकित्सा, स्त्री रोग, त्वचा रोग आदि जैसी विभिन्न विशिष्टताओं वाले उनके 10 परिचित चिकित्सक ग्रामीणों की जांच करते हैं और जिन लोगों में कुछ समस्याएं होती है उनको लगभग एक महीने तक दवाएं देते हैं। गंभीर बीमारियों वाले या सर्जरी की आवश्यकता वाले रोगियों को बड़े केंद्रों पर भेजा जाता है।

जहाँ कुछ वयस्क रोजगार की तलाश में शहरों की ओर चले गए, वहीं एक या दो एकड़ की छोटी सी ज़मीन वाले अधिकांश ग्रामीण कृषि में लगे हुए हैं और अनाज के साथ-साथ गन्ना भी उगाते हैं। रोटेरियनों द्वारा कृषि के लिए जल संसाधनों के साथ उनकी मदद करने के बारे में पूछे जाने पर दास ने कहा कि गांव में एक तालाब है जिसमें पर्याप्त पानी है। ''और सरकार ने कई क्षेत्रों में हैंडपंप लगाए हैं ताकि ग्रामीणों को अपनी दैनिक जरूरतों के लिए

प्ले स्कूल में डीजी संजीव कुमार ठाकुर (बैठे, बीच में), (उनके दाईं ओर) उनकी पत्नी पूनम और क्लब अध्यक्ष निरुपमा सिंह।

महिलाएं गांव में वयस्क साक्षरता कक्षा में भाग लेती हुई।

पानी की समस्या का सामना न करना पड़े। बेशक हमारे स्कूल में हमने पानी के पाइप का कनेक्शन दिया है और लड़कों एवं लड़कियों के लिए अलग-अलग शौचालय भी बनाए हैं।

इस परियोजना की सफलता और 2017 में जब हमने इस गांव को गोद लिया था, तब से लगातार और ''सुचारू रूप से चल रही गतिविधियों के माध्यम से गांव के विकास का श्रेय मैं अलगोरा परियोजना के चार स्तंभों को दूंगा - हमारे क्लब के पूर्व अध्यक्ष अशोक तनेजा, जयवंत शेठ, अशोक जैन और पी ए ज़कारियाह,'' दास कहते है। पिछले छह वर्षों में क्लब ने इस गांव के परिवर्तन पर लगभग ₹10 लाख खर्च किए हैं। यूनियन बैंक भी कभी-कभी अपने CSR कोष के माध्यम से इस गांव में कल्याणकारी गतिविधियों के निधियन में मदद करता है।

प्ले स्कूल परिसर का उपयोग शाम को वयस्कों के लिए वयस्क साक्षरता कक्षाएं चलाने के लिए भी किया जाता है, जहाँ उन्हें बुनियादी शिक्षा प्रदान की जाती हैं ताकि वे अपने नाम का हस्ताक्षर कर सकें।

भावी योजनाओं के बारे में वह कहते हैं कि क्लब के सदस्य अलोरा में अपनी गतिविधियों का विस्तार करना चाहते हैं। ''अब हमारे पास केवल एक प्ले स्कूल है; धीरे-धीरे हम कक्षा 1 और 2 को जोड़ना चाहते हैं। अभी बच्चे पास के गांव के एक स्कूल में जाते हैं। हाल ही में, जब हमारे डीजी संजीव कुमार ठाकुर ने इस गांव का दौरा किया तो हमने बच्चों को यूनिफ़ॉर्म वितरित की और अमरूद, आम जैसे फलों के पेड़ लगाए। नियमित वृक्षारोपण के साथ इस क्षेत्र को हरा-भरा करना हमारी एक और नियमित गतिविधि है।'' ■

ADVERTORIAL

District 3110

Prachi & Pawan Agarwal
District Governor, RID 3110

Global Grant Projects

It's a matter of great pride for our District that our clubs have got approval for 6 Global Grants this year so far, worth Rs 2 Crores. The list of approved Global Grant Projects is as under:"

Details of Approved Global Grants

Srl.	Host Club	Project Title	Project Cost ($)
01	RC Nainital	Provide & upgrade Medical Equipment at Indersheel Charitable Hospital for Comminities of Mehragaon & Bhimtal	38,131
02	RC Mathura Central, Aligarh Central, Bareilly Heights, Kanpur & Kashipur	Cervical Cancer Awareness, Screening and Pre-Cervical Cancer Lesion Treatment Camps.	30,038
03	RC Rudrapur	Establishing a center for the affordable treatment of Varicose Veins & Diabetic Foot Ulcer disease	38,500
04	RC Kanpur Metro	Providing advanced opthalmic equipment for eyecare services at Dr. JLRM Eye Hospital, Kanpur	30,000
05	RC Bareilly South	Promoting education by facilitating multi-purpose activities area at Rotary Public School, Bareilly	35,500
06	RC Agra Sapphire	Providing advanced medical equipment at SSB Trauma Centre, Firozabad, UP, India	76,829
		TOTAL	2,48,998

CSR Projects

Our District has done 12 CSR projects in the current year with a total investment of more than Rs 5.5 Crores. The list of CSR projects done so far is as below :

Srl	PROJECT TITLE	Total Cost (INR)	Total Cost (USD)
1	Donation of E-Tablets to meritorious Class 9th girl sudent of Govt. School	79,79,000	1,01,000
2	Complete modernization of three Govt. schools under CSR	79,79,000,	1,01,000
3	Complete transformation of Govt. Primary School, Harinagar, Kashipur under CSR by "Andritz"	31,60,000	40,000
4	Upgradation of existing NBSU to SNICU at L.D. Bhat Sub district Hospital, Kashipur by KVS	26,07,000	33,000
5	Providing medical equipments for diagnosis of Caner at SSB Trauma Center, Firozabad	1,05,26,320	1,31,579
6	Providing advance Eye care, ENT and ICU equipments at L. D. Bhatt Sub Distt. Hospital, Kashipur, Uttarakhand	26,50,000	33,125
7	Establishment of Computer Labs in 8 Schools of Kashipur	25,01,000	30,500
8	"Supporting free of Cost Pediatric Cardiac Procedures of 35 needy children at Palwal, Haryana	47,89,474	58,408
9	Sponsoring Free of Cost Pediatric Cardiac Procedures of 15 needy children at SSS Sanjeevani Hospital, Palwal, Haryana	20,52,632	24,731
10	Providing quality open care incubators to ensure better new born child healthcare at various hospitals	82,33,227	1,00,405
11	Establishment of Computer Labs in six schools by Valmet Technologies Private Ltd.	26,52,631	32,349
12	Establishment of Computer Labs in Four Schools by Sidharth Papers Private Ltd.	17,47,369	21,052
	TOTAL	5,68,77,653	7,07,149

Advt

District 3110 in ACTION

Distribution Nutrition Kits to TB Patients

Wheel Chairs Distribution

Dental Check-up Camp

Food Items Distribution

Cemented Seats Installation at TB Hospital

School Furniture Distribution

Installation of Water Tanks

Awareness regarding Distribution of Artificial Limbs

Rtn. Raj Mehrotra
CDS (Admin)

PDG Devender Kr. Agarwal
ARRFC

Congratulations

PDG Sharat Chandra
DRFC

Major Donors

Congratulations
Rtn Umesh Gupta & Rtn Meera Gupta
RC Agra & RC Agra Royal

Congratulations
Rtn Ram Sharan Mittal
RC Agra

रेखा शेट्टी सेवा की विरासत छोड़ गई हैं

शेखर मेहता

जयश्री

इंदौर जोन संस्थान में अपोलो अस्पताल के सहयोग से निष्पादित प्रोजेक्ट पॉज़िटिव हेल्थ के तहत रोटेरियन के लिए चिकित्सा परीक्षण के लिए एक विशेष बूथ के उद्घाटन में पीडीजी रेखा शेट्टी। PRIP मार्क मेलोनी ने PRIP शेखर मेहता, TRF ट्रस्टी भरत पांड्या और PRID कमल संघवी की उपस्थिति में बूथ का उद्घाटन किया।

28 मार्च की सुबह रोटरी जगत यह सुनकर स्तब्ध रह गया कि उसकी एक सितारा शख्सियत पीडीजी रेखा शेट्टी नहीं रहीं। खबर अविश्वसनीय थी लेकिन अफ़सोस कि ये सच थी। सदैव मुस्कुराती, शालीन, दूसरों की देखभाल और ख़याल रखने वाली रोटेरियन रेखा के बारे में संदेशों से सोशल मीडिया अटा पड़ा था। वस्तुतः यह रोटरी और भारत में रोटरी के लिए एक भारी क्षति थी।

रेखा के निधन के बारे में सुन कर राशि और मैं तो सकते में रह गए। रेखा और जय को हम पिछले 25 सालों से जानते थे, जिस वर्ष हम दोनों गवर्नर-इलेक्ट बने थे। कलकत्ता में हमारी पहली मुलाकात मुझे भली भांति याद है जब वो मेरे ही शहर और मंडल में गेट्स और रोटरी इंस्टिट्यूट में भाग लेने आई थी। हम अच्छे दोस्त बन गए और इन वर्षों में हमारे सम्बन्ध और प्रगाढ़ हुए थे।

वह तत्कालीन-रो इ अध्यक्ष, कैप्टन कार्लो रवीज़ा के टू ओउ ओउ क्रू के सितारों में से एक थीं। वह विचारों से परिपूर्ण थी कि दुनिया में कैसे बदलाव लाया जाए। ऐसा लगता था कि वह जन्मजात नेता हैं और बड़ी सहजता से नेतृत्व के पदों को संभालती हैं और उनके साथ पूरा न्याय करती हैं। 1999-2000 के भारतीय गवर्नरों के बैच में यह बिलकुल साफ़ हो गया था कि रेखा को रोटरी सेवा में लम्बी यात्रा तय करनी है।

गवर्नर कार्यकाल समाप्त होने के बाद, रेखा ने न केवल अपने क्षेत्र में बल्कि पूरी रोटरी दुनिया में अपने पंख फैलाए, फेलोशिप, रोटरी एक्शन ग्रुप में भाग लिया, क्षेत्रीय नेतृत्व के पदों पर रहीं और अंतर्राष्ट्रीय समितियों की सदस्य रहीं । राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वह अत्यन्त लोकप्रिय रोटेरियन थीं।

मैंने रोटरी इंडिया लिटरेसी मिशन के आशा किरण कार्यक्रम में उनके साथ काम किया है और मेरा अपना अनुभव शानदार रहा। अध्यक्ष के रूप में, यह कार्यक्रम उनके दिल के बहुत नज़दीक था। उनके द्वारा आशा किरण कार्यक्रम के शुभंकर बनाए गए थे जिन्हें चेन्नई शिखर सम्मेलन में लॉन्च किया गया था। हजारों बच्चों को वापस स्कूल भेजने के लिए उन्होंने आशा किरण कार्यक्रम को जोर शोर से लागू किया। यह उनके नेतृत्व का ही कमाल था जिस ने सपूर्ण भारत के रोटेरियन्स को प्रेरित किया और इस कार्यक्रम के अंतर्गत लगभग 50,000 से अधिक बच्चों को वापस स्कूल पहुंचे।

इसी प्रकार, कई परियोजनाओं के कार्यान्वयन में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा, जिसने समाज के कई लोगों के जीवन को प्रभावित किया। पोलियो उन्मूलन और साक्षरता को बढ़ावा देने की दिशा में उनके प्रयास अतुलनीय थे।

व्यक्तिगत रूप से कहूँ तो रेखा और जय के साथ हमारे संबंध काफी अच्छे थे और रेखा बहुत ही स्नेहमयी थीं। लोगों की मदद करने के बारे में उनके पास हमेशा नए नए तरीके, विचार होते थे। वह सदैव अधिक से अधिक करना चाहती थी। उनकी एक यात्रा के दौरान हमें अपने घर उनकी आवभगत करने का सौभाग्य मिला और हमें यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि कुछ ही देर में वह मेरी माँ के साथ घुल मिल गईं, जो उन्हें तुरंत पसंद करने लगीं। रेखा सच में जादुई व्यक्तित्व की धनी थीं। सोशल मीडिया पर उमड़ रही श्रद्धांजलि उनके प्रति रोटेरियनों के प्रेम का प्रमाण है

रोटरी में योगदान देने के अलावा, रेखा एक सिद्धहस्त लेखिका भी थीं। उन्होंने नेतृत्व, प्रबंधन और व्यक्तिगत प्रभावशीलता पर कई पुस्तकें लिखीं हैं। *द अल्टीमेट कॉम्पिटिटिव एडवांटेज* और *द हैप्पीनेस कोशेंट* सहित उनकी पुस्तकों को पाठकों ने जम कर सराहा और कई लोगों को एक बेहतर जीवन जीने में सहायक हुईं।

PRIP मेहता और राशि के साथ PDG रेखा।

एक समर्पित रोटेरियन थीं रेखा जिन्होंने अपने व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में रोटरी के आदर्शों को आत्मसात किया। वह अपने पीछे सेवा की वो विरासत छोड़ गई हैं जो आने वाली पीढ़ियों को लम्बे समय तक प्रेरित करती रहेंगी। उनकी दयालुता, ज्ञान और परिवर्तन लाने का जुनून एक मिसाल है जिसे कभी नहीं भुलाया जा सकेगा।

उनके मित्रों, परिवार और सहकर्मियों सहित संपूर्ण रोटरी समुदाय को उनकी कमी खलेगी। इस कठिन समय में हम उनके प्रियजनों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे।

लेखक रो ई के पूर्व अध्यक्ष है

रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय डेस्क से

Rotary.org के माध्यम से रोटरी फाउंडेशन (भारत) के लिए दिशानिर्देश

- दोहरी आई डी निर्मित होने से बचने और अपने क्लब के अंतर्गत अपने योगदान को समय से जमा कराने के लिए *My Rotary* पर लॉगिन करें
- *My Rotary* लॉगिन की अनुपस्थिति में ऑनलाइन योगदान करते समय या तो एक नया लॉगिन बना लें या फिर अपने पंजीकृत ईमेल पते का उपयोग करें
- पारिवारिक न्यास /कंपनी से योगदान के मामले में, RISAO को चेक/बैंक ड्राफ्ट भेजें। *My Rotary* के माध्यम से योगदान न करें
- अपनी 80G की रसीद पर सही PAN नंबर सुनिश्चित करने हेतु अपने PAN की दोबारा-जांच करें
- सभी ऑनलाइन योगदानों के लिए 80जी की रसीद केवल उस प्रेषक के नाम पर जारी की जाएगी जिसके *My Rotary* लॉगिन का उपयोग योगदान करने हेतु किया गया है।

प्रत्येक रोटेरियन, प्रत्येक वर्ष

प्रत्येक रोटेरियन को वार्षिक निधि के लिए एक व्यक्तिगत उपहार देने और हर साल एक संस्थान अनुदान या कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। ये योगदान रोटेरियनों को अपने समुदायों को बेहतर बनाने के लिए स्थानीय एवं अंतर्राष्ट्रीय परियोजनाओं की एक विस्तृत श्रृंखला को निष्पादित करने में मदद करता है।

EREY ब्रोशर को डाउनलोड करने के लिए इस लिंक का उपयोग करें: https://my.rotary.org/en/document/every-rotarian-every-year-brochure हर साल, जो क्लब EREY में उत्कृष्ट दान करने का श्रेय प्राप्त करते है, यानी प्रति व्यक्ति 100 डॉलर का न्यूनतम वार्षिक कोष योगदान, जिसमें प्रत्येक सदस्य वार्षिक कोष के लिए कम से कम 25 डॉलर का दान देता है, उन क्लबों को 100% *प्रत्येक रोटेरियन, प्रत्येक वर्ष* क्लब बैनर से सम्मानित किया जाता है। वर्तमान रोटरी वर्ष में इस बैनर को प्राप्त करने में अपने क्लब की मदद करें। ■

मुंबई में नेत्रहीनों के लिए एक सिनेमा की सौगात

रशीदा भगत

विकलांगों के लिए काम करने वालों के लगातार प्रयासों को धन्यवाद, अब नेत्रहीनों के लिए पढ़ने और सुनने के उपकरण सुलभ हो गए हैं, लेकिन *विजुअल ट्रीट* (दृश्य उपकरण) के साधन अभी भी उपलब्ध नहीं हैं। फिल्म देखना हमारे देश की जनता का बुनियादी मनोरंजन है, जिसमें निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के लोग भी शामिल हैं। लेकिन नेत्रहीन व्यक्ति इस साधारण आनंद से वंचित हैं। ''थिएटर जाने का कार्य भी हमारे समुदाय का एक अभिन्न अंग है, क्योंकि यह दोस्तों और परिवार के साथ सामूहिक रूप से आनंददायक गतिविधि करते हुए सामाजिक होने का अवसर उपलब्ध करता है,'' रोटरी क्लब नवी मुंबई सनराइज, रो ई मंडल 3142 के अध्यक्ष-निर्वाचित संजय पाणिग्रही कहते हैं। .

दो साल पहले, क्लब के पूर्व अध्यक्ष प्रकाश काकड़े ने, अपने अध्यक्षीय वर्ष के दौरान, कुछ दृष्टिबाधित युवाओं को मुंबई में एक थिएटर में ले जा कर सिनेमा अनुभव देने के बारे में विचार किया, इस तरह क्लब ने ''व्हिस्परिंग सिनेमा'' शीर्षक से एक परियोजना शुरू की। इसका यह नाम इसलिए रखा गया क्योंकि सिनेमा देख रहे दो या तीन अंधे व्यक्ति, जो सिनेमा अनुभव के लिए जा रहे हैं, उनके बीच एक फुसफुसाहट करने वाला (दबी आवाज़ में) बैठता हैं, जैसे जैसे फिल्म आगे बढ़ती है, वो अपने साथियों को स्क्रीन पर चल रहे दृश्यों के बारे में दबी आवाज़ में कहानी सुनाता रहता है।

हालाँकि वह अनुभव केवल लगभग 60 व्यक्तियों तक सीमित था, इस अभ्यास के लिए चयनित लोगों ने इसका भरपूर आनंद उठाया था। इसलिए कुछ महीने पहले,

ऊपरः थिएटर में दृष्टिबाधित लोगो अपने ''व्हिस्परर'' के साथ।

नीचेः फिल्म देखने के लिए तैयार बच्चे।

काकड़े और वर्तमान क्लब अध्यक्ष मनोज नायक के मार्गदर्शन में, क्लब ने इसे बड़े स्तर पर ले जाने निर्णय किया और नवी मुंबई में - बालाजी मल्टीप्लेक्स में - जहां अमिताभ बच्चन की फिल्म *उंचाई* चल रही थी, एक पूरा मूवी हॉल बुक कर लिया। दृष्टिहीनों के लिए प्रमुख शैक्षिक संस्थानों जैसे नेशनल एसोसिएशन फॉर द ब्लाइंड, हेलेन केलर और छह अन्य फाउंडेशनों और एनजीओ से कुल 167 दृष्टिहीन व्यक्तियों को स्वयंसेवकों के साथ ''व्हिस्परिंग सिनेमा'' अनुभव देने के लिए, रोटेरियन उन्हें थिएटर ले गए।

पाणिग्रही ने बताया कि इस विशेष थिएटर कॉम्प्लेक्स को चुना गया था क्योंकि मालिक दयालु है, हमें जानता है और वह मुफ्त में फिल्म दिखा कर काफी अनुग्रहित था, ''क्योंकि इसका उपयोग हम एक धर्मार्थ कार्यक्रम के लिए कर रहे थे। हमने नेत्रहीन व्यक्तियों और उनके संस्थानों द्वारा भेजे गए स्वयंसेवकों को और कुछ शिक्षकों को स्वादिष्ट नाश्ता कराया और शो के दौरान पॉपकॉर्न और शीतल पेय और स्नैक्स पर लगभग ₹60,000 खर्च किए।''

उनका कहना है कि रो ई मंडल 3142 के रोटेरियनों सहित डीजी कैलाश जेठानी, जिन्होंने दर्शकों को क्लब और मंडल की विभिन्न कल्याणकारी परियोजनाओं के बारे में जानकारी दी, ने दृष्टिबाधित व्यक्तियों के साथ फिल्म देखी और यह देखकर संतुष्ट हुए कि क्लब में 11-35 वर्ष के युवाओं ने फिल्म का खूब आनंद लिया, विशेष रूप से इसलिए क्योंकि इसमें अमिताभ बच्चन नायक थे। निश्चित रूप से बच्चन की भारी और गूंजती आवाज ने आँखों से फिल्म देखने के आनंद की कमी की थोड़ी बहुत भरपाई ज़रूर की होगी।

इस कार्यक्रम के उपरान्त प्रत्येक दर्शक को पैक्ड लंच पैकेट दिए गए। नेत्रहीनों के लिए परियोजना जारी रखते हुए, ''व्हिस्परिंग सिनेमा'' कार्यक्रम के दो महीने बाद, क्लब ने, जिसमें 80 सदस्य हैं, 25 नेत्रहीन व्यक्तियों को 25 एलेक्सा उपकरण (प्रत्येक की कीमत ₹3,500) उपहार में देने के लिए अपने सदस्यों से कुछ और पैसे जुटाए थे।

फिल्म देखने के बाद, बी ए तृतीय वर्ष के दृष्टिबाधित छात्र रमेश, जो दूसरों को कंप्यूटर विज्ञान भी पढ़ाते हैं, ने कहा कि उनका पूरा अनुभव अच्छा रहा। ''सच कहूं, जब उन्होंने मुझे बताया कि मुझे ''व्हिस्परिंग सिनेमा'' ट्रीट के लिए अन्य नेत्रहीन व्यक्तियों के साथ ले जाया जा रहा है, तो मुझे नहीं पता था कि यह वास्तव में क्या होगा। इसलिए मैंने इस पर शोध किया और मैं फिल्म देखने के लिए उत्साहित था। सौभाग्य से, जो व्यक्ति मुझे दृश्यों के बारे में समझा रहा था, वह मेरा एक अच्छा दोस्त था, और जानता था कि उसे मुझे क्या और कैसे टिप्पणी देनी चाहिए... जैसे जब स्क्रीन पर कुछ लिखा गया हो, या जहां दृश्य तत्व प्रमुख हों। इसलिए मुझे ठीक वही मिला जो मुझे फिल्म का पूरा मज़ा लेने के लिए चाहिए था। इस के लिए मैं प्रकाश सर को धन्यवाद देता हूं।''

''व्हिस्परिंग सिनेमा'' परियोजना का समन्वय और व्यवस्था रोटरी के सनराइजर्स द्वारा की गई थी, जिसका नेतृत्व इसके पूर्व अध्यक्ष काकडे और इसके अध्यक्ष नायक ने किया था।

इस नूतन पहल के लिए डीजी जेठानी ने रोटरी क्लब नवी मुंबई सनराइज को बधाई दी, जो समाज में समावेशिता लाने की दिशा में दूर तक जायेगी और रो इ के डीईआई मंत्र का एक मूल तत्व है। ■

केरल से लद्दाख तक रोटरी पीस मिशन

किरण ज़ेहरा

कथकली, स्वादिष्ट *करी मीन* और प्रभावशाली साक्षरता दर की भूमि से एक मलयाली होने के नाते मुझे हमेशा लगता है कि केरला से बेहतर कोई जगह नहीं है,'' रोटरी क्लब अंगामल्ली, रो ई मंडल 3201 के अध्यक्ष, टोजो जोस कहते है, जिन्होंने हाल ही में सात अन्य रोटेरियनों के साथ 21 दिवसीय रोटरी शांति रैली पूरी की जिसे डीजी राजमोहन नायर ने लेह, लद्दाख के लिए अंगामल्ली, केरल से हरी झंडी दिखाकर शुरू किया था। रैली के दूसरे दिन कर्नाटक से कुछ ही मील की दूरी पर ''हमने विशाल खेतों, नारियल के पेड़ों और आकर्षक गांवों के रमणीय ग्रामीण परिदृश्यों को देखा जो सभी मेरे गृहनगर की तरह सुंदर लग रहे थे। हमने सड़क किनारे स्थित एक छोटी सी कैंटीन में तवा से निकला हुआ गरमागरम घी *मसाला डोसा* खाया और अचानक *करी मीन* कम आकर्षक लगने लगी। इस रैली ने मुझे मेरी पक्षपाती धारणाओं से दूर करने के साथ ही हमारे अंदर अन्य संस्कृतियों के लिए सहानुभूति और सम्मान की भावना जागृत की।''

3,400 किलोमीटर के इस रैली मार्ग में राजमार्गों और ग्रामीण सड़कों का मिश्रण शामिल था जिससे नई भूमि, नए लोगों और नए अनुभवों से उनका परिचय हुआ। ''हमने चार रोटरी क्लबों का दौरा किया, झंडों का आदान-प्रदान किया और देश भर में रोटरी द्वारा किए जा रहे अद्भुत कार्यों को प्रत्यक्ष रूप से देखा। हम परियोजनाओं से प्रभावित थे और हमने वापस आकर अपने समुदाय की मदद करने हेतु और अधिक करने के लिए प्रेरित महसूस किया,'' जोस कहते हैं।

***बाएं से:** लद्दाख के खारदुंगला में रोटेरियन लियो जोस, बायजू चाको, आनंद थेक्केकरा, एल्धो जैकब, क्लब के अध्यक्ष तोजो जोस, जिम जोस और सुनील वर्गीस।*

रैलीकर्ताओं ने एक गुरुद्वारे का दौरा किया और वे ये देखकर बहुत प्रभावित हुए कि कैसे ''लंगर में भोजन करने के लिए सबका स्वागत किया जा रहा था जिससे समावेशिता, विविधता और विनम्रता को बढ़ावा मिल रहा था जो रोटरी में विविधता को अपनाकर विनम्रता के साथ जरूरतमंद लोगों की सेवा करने जैसा ही प्रतीत हो रहा था।'' भोजन अपने आप में सरल और पौष्टिकता से परिपूर्ण था जिसमें दाल, रोटी, सब्जी और खीर जैसी मूल वस्तुएं शामिल थी। ''इस भोजन में कोई आडंबर नहीं था फिर भी यह मेरे जीवन के सबसे अच्छे भोजनों में से एक था।''

उन्हें सबसे अधिक निराशा गुजरात के सरदार वल्लभ भाई पटेल स्मारक का दौरा करने पर हुई। ''करोड़ों रुपये की लागत से बनी इस प्रतिमा की भव्यता को देखकर हम अचंभित थे। हालांकि, यहाँ के शौचालयों में सफाई व्यवस्था बहुत ही खराब थी। इस तरह के प्रतिष्ठित पर्यटन स्थल पर आने वाले आगंतुकों के लिए उचित सुविधाओं के अभाव को देखकर हम आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रह सके,'' जोस कहते हैं। वह उस समय को भी याद करते हैं जब उनकी कार अत्यधिक गरम होने के कारण खराब हो गई थी और एक ट्रक ड्राइवर ने पानी की तलाश करने के लिए किसी भी दो व्यक्तियों को अपने साथ ले जाने की पेशकश की थी।

गोरखपुर, महाराष्ट्र में।

जब रोटेरियनों को मालाबार मसाले वाली *सुलेमानी चाय* पीने की तड़प महसूस हुई तो वे अमृतसर के बाहरी इलाके में एक स्थानीय पंजाबी ढाबे पर रुक गए। ढाबे के मालिक ने उन्हें अपनी रसोई में न सिर्फ चाय बनाने की अनुमति दी बल्कि ''वह इसके स्वाद से इतना प्रभावित हुआ कि उसने अपने ढाबा मेनू में इस स्वादिष्ट चाय को भी जोड़ दिया,'' जोस मुस्कुराते हुए कहते हैं।

लद्दाख में भारत और पाकिस्तान के बीच नियंत्रण रेखा के पास स्थित तुरतुक गांव में वे वहाँ के लोगों की साधारण जीवन शैली से बहुत प्रभावित हुए। बड़े आरामदायक घरों, कारों और फैंसी गैजेट्स की विलासिता तक पहुंच न होने के बावजूद भी इस गांव के लोग संतुष्ट लग रहे थे जो सब्जियों के एक छोटे से बगीचे और कुछ जानवरों के साथ रहते थे। यह आंखें खोल देने वाला अनुभव था, जोस के लिए, जिन्होंने अपने जीवन और उनके जीवन के बीच के अंतर का स्पष्ट अनुभव किया।

वह कहते हैं, ''उस गांव में सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक थी बच्चों के लिए शिक्षा तक पहुंच की कमी। यहाँ रोटरी के पास एक परिवर्तन लाने का अवसर है। एक साक्षरता परियोजना शुरू करके हम इन बच्चों के जीवन को बदल सकते हैं और लंबे समय में इस गांव के भविष्य को भी।'' यहाँ के ग्रामीण समुदाय की मदद करने के लिए उन्होंने अपने दोस्तों और परिवार के लिए कुछ स्मृति चिन्ह खरीदें।

उन्होंने बताया कि रोटरी पीस रैली उनके क्लब के सदस्यों के लिए अपने आरामदायक क्षेत्र से बाहर निकलकर नए संपर्क बनाने और अजनबियों पर भरोसा करना सीखने का एक बढ़िया अवसर था। ''यह अनुभव हमें और करीब लाया और इसने क्लब के भीतर उत्साह पैदा करने में हमारी मदद की। इसने हमें इस बात की स्पष्ट समझ दी कि कैसे रोटेरियन अपने समुदायों में शांति बनाने के लिए एक साथ आकर और अन्य संगठनों के साथ मिलकर काम कर सकते हैं।''■

हरियाणा के कुरुक्षेत्र में एक गुरुद्वारा के बाहर टीम।

रोटरी क्लब SPIC नगर ने मनाई स्वर्ण जयंती

वी मुत्तुकुमारन

रोटरी क्लब SPIC नगर, रो ई मंडल 3212 के स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रमों के अंतर्गत PRIP शेखर मेहता ने DG वी आर मुत्तु और पूर्व मंडल गवर्नरों की उपस्थिति में 110 विकलांगों को कृत्रिम अंग, कैलिपर और बैसाखी दी। लाभार्थियों के साथ बातचीत के दौरान मेहता को यह जानकर दुख हुआ कि तमिलनाडु के एक दक्षिणी तटीय जिले, तूत्तुकुडी के आसपास के गांवों में पोलियो पीड़ित एक कठिन जीवन जी रहे है।

उन्होंने क्लब को सलाह दी कि वो इस विरासत परियोजना के लिए साझेदार क्लबों के साथ गठजोड़ करने के बजाय अपना खुद का अंग निर्माण और वितरण केंद्र शुरू करें जो हम 2015 से कर रहे है। जिन लोगों को कृत्रिम अंग मिले थे, उन्हें या तो कैलिपर या बैसाखी दी गई, क्लब के अध्यक्ष अरुण जयकुमार कहते हैं। क्लब 1990 से नियमित रूप से कैलिपर वितरित कर रहा है,

PRIP शेखर मेहता एक महिला को कृत्रिम अंग देते हुए। (बाएं से) पीडीजी एस शेख सलीम और बी अरुमुगापांडियन, एस आर रामकृष्णन, निदेशक, SPIC ग्रुप, और रोटरी क्लब SPIC नगर के अध्यक्ष अरुण जयकुमार भी चित्र में शामिल हैं।

***(बाएं से)** रोटरी क्लब SPIC नगर के सचिव ए सरवनाकुमार, डीजी वीआर मुत्तु, PRIP मेहता, क्लब के अध्यक्ष जयकुमार और AG आर राधाकृष्णन स्वर्ण जयंती कार्यक्रम में छात्र लाभार्थियों के साथ।*

वह आगे कहते है। ''अब तक, हम रोटरी क्लब कोयंबटूर मिडटाउन के साथ साझेदारी में आयोजित विशेष शिविरों में लगभग 250 कृत्रिम अंग दे चुके है। इस साल, हमने अंग वितरण के लिए रोटरी क्लब तिरुपुर ईस्ट के साथ हाथ मिलाया। 25 पोलियो पीड़ितों से बात करने के बाद मेहता ने क्लब से गांवों में ऐसे मरीजों की पहचान करने का आग्रह किया ताकि उन्हें कस्टम डिजाइन किए गए कैलिपर वितरित किए जा सकें।''

मेहता द्वारा तूत्तुकुडी में वयस्क साक्षरता पर एक सर्वेक्षण करने का सुझाव दिए जाने के बाद, ''हमने मंडल शिक्षा अधिकारियों से संपर्क किया जिन्होंने वयस्क निरक्षरों पर एक डेटाबेस तैयार करने के हमारे प्रयासों का समर्थन करने का आश्वासन दिया।''

ऐतिहासिक परियोजनाएं

2012 में, क्लब ने तीन सरकारी स्कूलों के 30 ग्रामीण छात्रों को गोद लिया और उन्हें भोजन, कपड़े, प्रसाधन सामग्री और स्कूल से संबंधित आवश्यक सामग्री जैसे किताबें, स्टेशनरी और यूनिफ़ॉर्म प्रदान करके उनकी मासिक जरूरतों को पूरा कर रहा है। ''दिवाली और पोंगल जैसे त्योहारों पर हम उन्हें नए कपड़े एवं मिठाई देते है और उनके साथ मजेदार गतिविधियां करते है।''

अब तक, प्रोजेक्ट गोल्डन हार्ट कैंप के अंतर्गत 89 नि:शुल्क बाल हृदय सर्जरियाँ की गई जिसके लिए उन्होंने अपोलो चिल्ड्रन हॉस्पिटल, चेन्नई के साथ हाथ मिलाया है। ''अब तक सात हृदय शिविरों में 450 बच्चों की जांच की जा चुकी है। इस साल 23 बच्चों की सर्जरियाँ की गई और पांच अन्य बच्चे अपनी बारी आने का इंतजार कर रहे है। कॉलेज के लगभग 600 छात्र 10 आवासीय RYLA से लाभान्वित हुए और 80 मूल स्थान वाले RYLA से प्रत्येक कार्यक्रम में कॉलेज के 130-140 विद्यार्थी लाभान्वित हुए।''

श्री कामाक्षी विद्यालय मैट्रिक हायर सेकंडरी स्कूल और SPIC नगर हायर सेकंडरी स्कूल के दो इंटरेक्ट क्लब और SPIC नगर के रोटरेक्ट क्लब को इस क्लब द्वारा प्रायोजित किया गया। अपने रजत जयंती वर्ष का उत्सव मनाते हुए श्री कामाक्षी विद्यालय के इंटरेक्टर अनेक गतिविधियों के साथ सक्रिय है। हमारे इंटरेक्टरों ने WinS परियोजना शुरू की है, एक स्मार्ट क्लास स्थापित की है, कक्षाओं में छोटे पुस्तकालय बनाए और रोटरी परियोजनाओं को समर्थन प्रदान किया है।

एक विज्ञान प्रदर्शनी वैन, विज्ञान रथम जैसी परियोजनाओं में क्लब की भागीदारी ने 5,000 छात्रों को लाभान्वित किया; *प्रोजेक्ट पंच* के अंतर्गत B.Ed के 740 प्रशिक्षुओं के लिए अंग्रेजी बोलने की सात कार्यशालाएं आयोजित की गई; और *प्रोजेक्ट कलाम* के अंतर्गत अब तक कक्षा 10-12 के 1,400 से अधिक विद्यार्थियों को कैरियर परामर्श दिया गया। ''हम जल्द ही प्रोजेक्ट *यदुमनावल* (वह सबकुछ है) का पहला सत्र आयोजित करेंगे।''

मेहता और मुत्तु ने विभिन्न लाभार्थियों को सिलाई मशीनें और एक ट्राईसाइकिल वितरित की और आथूर के सरकारी हायर सेकंडरी स्कूल को कंप्यूटर प्रदान किए गए। आसपास के गांवों की पांच आंगनवाड़ियों को फर्नीचर और खाना पकाने के बर्तन दान किए गए; और स्वर्ण जयंती कार्यक्रमों के अंतर्गत पांच अनाथालयों को किराने का सामान दिया गया। इस मौके पर PDG वी षणमुगम, अरुमुगपांडीयन, चिन्नादुरई अब्दुल्ला, शेख सलीम, PNB मुरुगादॉस, के विजयकुमार, DGE मुथैया पिल्लई और DGND दिनेश बाबू उपस्थित थे। SPIC समूह के निदेशक, एस आर रामकृष्णन विशिष्ट अतिथि थे।

यह 28 सदस्यीय क्लब 21 जनवरी, 1974 को चार्टर्ड किया गया था। जयकुमार आगे कहते है कि SPIC ग्रुप और AM फाउंडेशन के अध्यक्ष अश्विन सी मुथैया अपने CSR अनुदान और क्लब परियोजनाओं के वित्तपोषण हेतु दान करने में उदार है। ■

मिस्र, फराहो और पिरामिडों की भूमि

रशीदा भगत

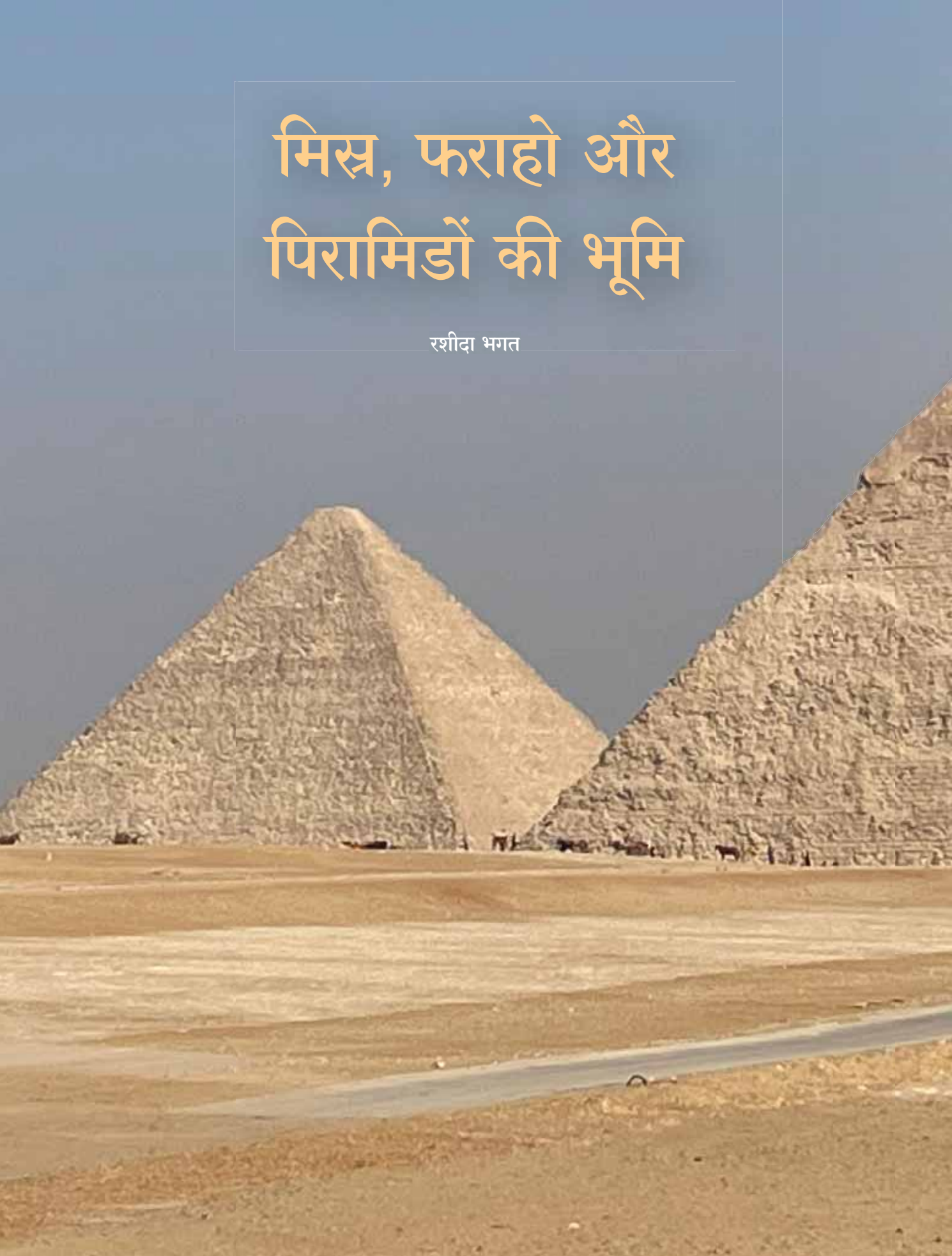

मिस्र की यात्रा काफी अरसे से हमारी बकेट लिस्ट में थी और उस खूबसूरत, ऐतिहासिक देश की यात्रा के लिए लम्बा समय इसलिए लगा क्योंकि हम इसे इज़राइल या इराक के साथ जोड़ने की कोशिश कर रहे थे, जहां हम 2002 से जाते रहे हैं, कर्बला और नजफ की तीर्थयात्रा पर। बेशक, पहली दो यात्राओं को तो मेरे भीतर बैठे पत्रकार ने काम के साथ जोड़ कर इसे व्यावसायिक यात्रा बना लिया था, अपने पाठकों को, मैं तब *हिंदू बिजनेसलाइन* में काम किया करती थी, अमेरिकियों द्वारा सद्दाम हुसैन के शासन को उखाड़ फेंकने के बाद, उस संकटग्रस्त और अभागे देश में चल रहे घटनाक्रम का प्रत्यक्ष विवरण देने के लिए। खैर, मेरे इराक अभियान की चर्चा हम फिर कभी करेंगे।

मिस्र को इराक या इज़राइल के साथ जोड़ने के प्रयास विफल रहे, पहले मामले में तो वीजा कारणों से - शिया मुसलमानों के लिए इराक में प्रवेश का सबसे आसान तरीका सामूहिक वीजा है, लेकिन समूह की न्यूनतम संख्या 10 होनी चाहिए। और दूसरे मामले की वजह थी, एक लम्बी और थकाऊ उड़ान के साथ अदीस अबाबा में 12 घंटे का ठहराव और देर रात में लंबी ड्राइव थी। अंतरराष्ट्रीय यात्रा के मामले में, चेन्नई अभी काफी पीछे है, यहां तक कि बेंगलुरु के पास भी उड़ान के बेहतर विकल्प हैं।

तो तय हुआ, इस जनवरी मिस्र! हमने आठ का समूह सोच कर अपनी योजना बनानी शुरू की, लेकिन जैसे ही आकर्षक 'मिस्र' का ज़िक्र किया, कई मित्रों ने इसमें शामिल होने की मंशा जताई ! जल्द ही ये समूह बढ़कर 14 का हो गया और बस, हमें रोक लगानी पड़ी थी। कहते हैं न कि छोटा सुंदर होता है, लेकिन अब हम 'छोटा समूह' नहीं रह गए थे।

लेकिन यह समूह था बहुत ही मजेदार; उत्तर और दक्षिण भारतीय सैलानियों का बहुत ही दिलचस्प मिश्रण; रोचक बात यह है कि हमारी उस 10-दिवसीय यात्रा से जो सबसे महत्वपूर्ण यादें हैं वो महिला समूह द्वारा की गयी मस्ती की यादें हैं - वरिष्ठ नागरिकों और प्रौढ़ महिलाओं का संयुक्त मिश्रण - हिंदी और तमिल दोनों गीतों पर सभी नृत्य कर रहे थे और हमारी वैन 60, 70, 80 किमी की रफ़्तार से दौड़ रही थी ! एक इस्लामी देश में, सड़कों पर हो रही इस घटना के दिलचस्प नज़ारे का अंदाज़ा बखूबी लगाया जा सकता है। घर वापसी के दौरान भी हवाई अड्डे के मार्ग पर उसी वैन पर नृत्य

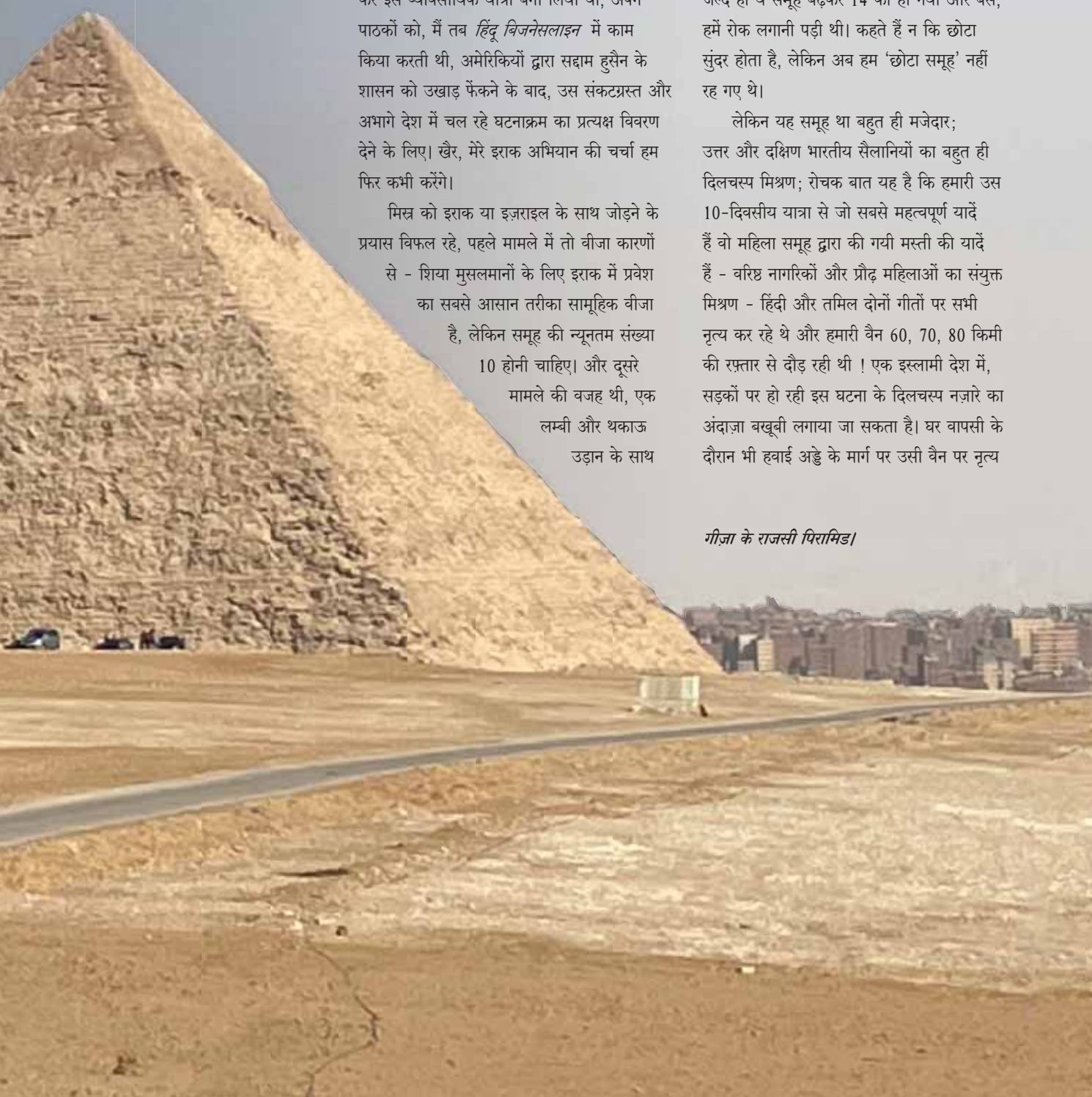

गीज़ा के राजसी पिरामिड।

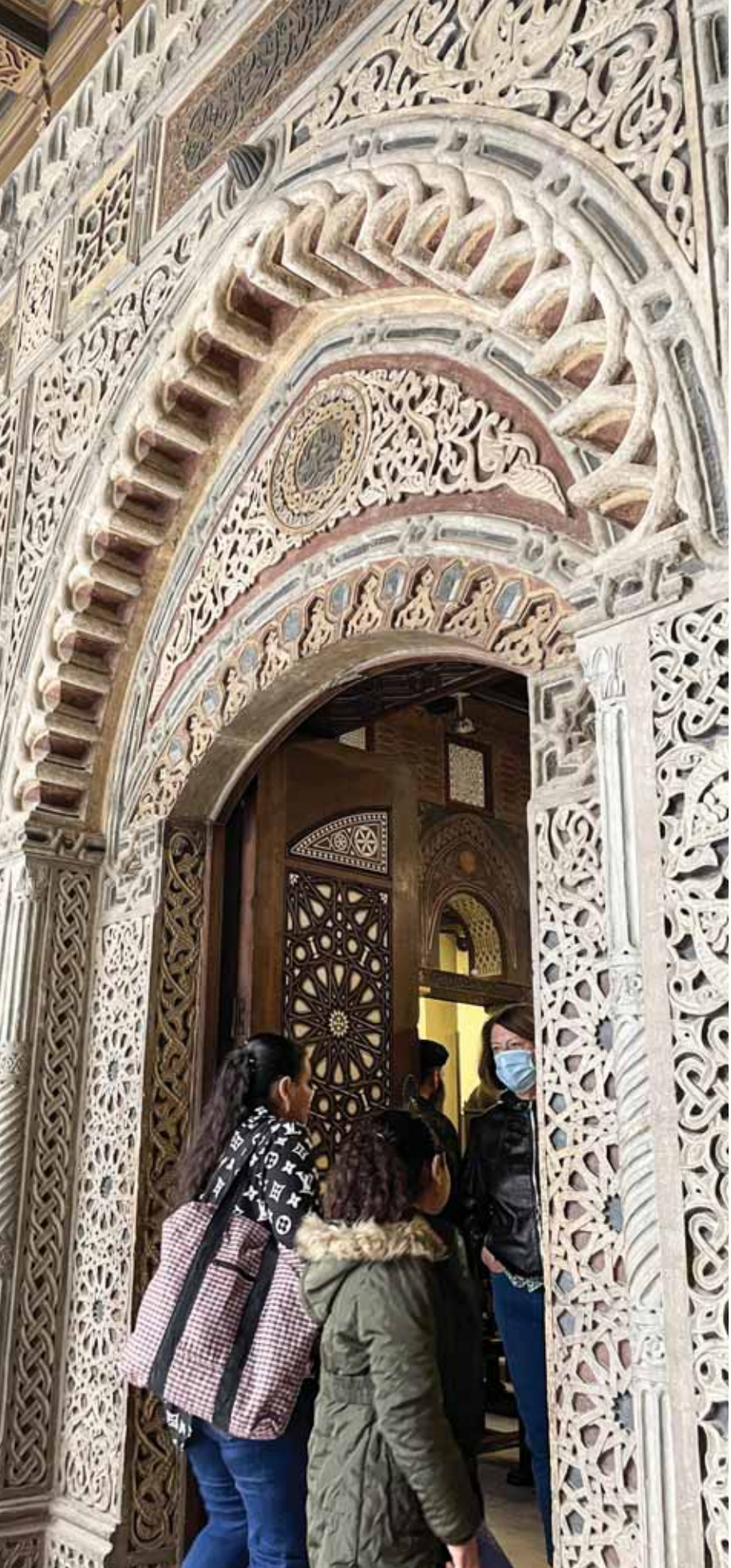

जारी रहा, बगल से गुजरने वाले और दूसरी लेन से जाने वाले लोग प्रशंसा की दृष्टि से देख रहे थे, मुस्कुरा रहे थे, ताली बजा रहे थे और अंगूठा दिखा कर शाबाशी दे रहे थे!

देश की बात करें, तो नाम लेते ही गीज़ा पिरामिडों की तस्वीरें ज़ेहन में उभर आती हैं। कभी दुनिया के सात आश्चर्यों में नामित, तीन पिरामिडों का निर्माण तीन राजाओं के लिए किया गया था; सबसे पुराना और सबसे बड़ा राजा खुफ़ु के लिए, विराट आधार की औसत लंबाई 230 मीटर; दूसरे की लंबाई 216 मीटर और सबसे छोटे की लंबाई 109 मीटर है। हालांकि, अब यह विनाश और अपक्षय के कारण थोड़ा कम हो गई है। ये दफन कक्ष थे और उस समय प्रचलित धारणाओं और प्राचीन राजाओं के विश्वास के अनुसार, ये मूलतः ये पिरामिड सोने और अन्य क़ीमती सामान के खजाने से भरे हुए थे, और अन्य सामान भी

जिनकी ज़रुरत फराहो को मृत्यु बाद पड़ेगी। लेकिन तीनों पिरामिडों को प्राचीन और मध्ययुगीन दोनों समय में कई बार लूटा गया था, और समय के साथ इनकी वास्तविक ऊंचाई कम हो गई क्योंकि बाहरी ढाँचे पर लगा सफेद चूना उतर गया था।

सबसे बड़े या महान पिरामिड मूलतः पीले चूना पत्थर से बना है और इन पिरामिडों का निर्माण उस समय का इंजीनियरिंग चमत्कार है - 2550 से 2490 ईसा पूर्व। पिरामिड का निर्माण कैसे हुआ, कितने लोगों ने इन पर काम किया और उन्हें पूरा करने में कितने साल लगे, इस बारे में तमाम बातें हैं। प्राचीन यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस का अनुमान है कि ग्रेट पिरामिड को बनाने में 20 साल लगे, और इसमें 100,000 खेतिहर मजदूर लगे थे, जब उनकी भूमि नील नदी के पानी में डूब गई थी और खेतों में कोई काम नहीं बचा, उन्होंने केवल पिरामिडों पर काम किया था।

लेकिन, *ब्रिटानिका एनसाइक्लोपीडिया* के अनुसार, ''20वीं शताब्दी के अंत तक, पुरातत्वविदों को इस बात का सबूत मिला है कि एक सीमित कार्यबल - करीब 20,000 - ने वहां स्थायी रूप से कार्य किया होगा।''

स्वाभाविक है अगला प्रश्न इन विशाल संरचनाओं के निर्माण के सम्बन्ध में था वो भी मशीनीकरण के बिना उस काल में। ब्रिटानिका का कहना है कि मिस्रवासियों ने ईंट, मिट्टी और रेत के एक ढेर का इस्तेमाल किया, जो पिरामिड की ऊंचाई के बढ़ने के साथ साथ ऊंचाई और लंबाई में बढ़ता गया था; लगभग 2.5 टन के पत्थर के ब्लॉक स्लेज, रोलर्स और लीवर द्वारा रैंप पर खींच कर लाये गए थे। जरा आंखें बंद करें और इसमें शामिल भारी मात्रा में लगने वाले

ऊपर से (दक्षिणावर्त): अलेक्जेंड्रिया में पुस्तकालय; एक कुरान जिस के पन्नो पर सोने की सुलेख है; काइरो में एक चर्च।

शारीरिक श्रम की कल्पना करें... सिर्फ सोच कर ही चक्कर आने लगेंगे !

इस विशाल संरचना में प्रयोग की जाने वाली सामग्रियों पर, यकीनन इस ग्रह पर अब तक का सबसे बड़ा निर्माण, यह कहता है: ''पत्थर के लगभग 2.3 मिलियन ब्लॉकों को काटा गया, उनका परिवहन किया गया, और 5.75 मिलियन टन का ढांचा खड़ा करने के लिए इकट्ठा किया गया, जो तकनीकी कौशल और इंजीनियरिंग क्षमता का बेजोड़ नमूना है। भीतरी दीवारों के साथ-साथ कुछ बाहरी पत्थर के जोड़, जो अभी भी जगह पर टिके हुए हैं, प्राचीन मिस्र में निर्मित किसी भी अन्य चिनाई की तुलना में बेजोड़ हैं।''

पर किसी ना किसी स्तर पर, उस धूल भरे इलाके में जहां चिकने और चमकदार चूने के सफेद पत्थर के आवरण में लिपटे विशाल पिरामिड अपने पूरे गौरव और भीतर शानदार खजाने के साथ आरूढ़ हैं,, मैं कुछ निराश

कभी दुनिया के सात आश्चर्यों में नामित, तीन पिरामिडों का निर्माण तीन राजाओं के लिए किया गया था; सबसे पुराना और सबसे बड़ा राजा खुफु के लिए।

हो चली थी। शायद यह रेगिस्तानी सूरज की तीव्रता के कारण होने वाली थकान, हवाओं के चलते धूल में हो गए हमारे चेहरे, देर तक पैदल चलने और चारों तरफ भूरा रंग दिखने की वजह से, मिस्र के पौराणिक पिरामिडों को देख कर मेरी लंबे समय से पल रही इस भूमि की यात्रा की इच्छा कुछ अतृप्त सी रही।

लेकिन भला हो हमारी टीम के एक सदस्य का, जिसने एक शाम को पिरामिड ध्वनि और प्रकाश शो बुक करा दिया था। रात के अंधेरे में, समुचित प्रकाश व्यवस्था और जानकारी के साथ - जिसे निश्चित रूप से और बेहतर किया जा सकता था - प्राचीन मिस्र की आभा, पिरामिडों की भव्यता और इस अद्भुत भूमि का इतिहास को हमारे लिए फिर से रचा गया था।

स्वाभाविक रूप से काहिरा में हमारा अगला प्रमुख पड़ाव अल तहरीर स्कायर स्थित मिस्र का संग्रहालय है। लेकिन मिस्र के फिरौन और रानियों के खजाने के बारे में चर्चा करने से पहले, गौर करने वाली बात ये है कि मिस्र की लगभग 42,000 कलाकृतियाँ यूरोपीय और अमेरिकी संग्रहालयों में हैं। कम से कम हम भारतीयों को इससे आश्चर्य नहीं होना चाहिए क्योंकि हमारी प्राचीन संपदा का अधिकांश हिस्सा भी ब्रिटिश संग्रहालयों में कैद हैं!

120,000 से अधिक कलाकृतियों के खजाने के साथ काहिरा संग्रहालय एक समृद्ध संग्रहालय है, जिसमें रामसेस प्रथम के बेटे तूतनखामेन की कब्र और 19 वीं शताब्दी के बाद से खोजी गई अधिकांश ममी सम्मिलित हैं। यहां ग्रीको-रोमन काल से ले कर प्राचीन मिस्र के पुरातन साम्राज्य (लगभग 2700 ईसा पूर्व) की वस्तुएं प्रदर्शित हैं। यहां एक दिलचस्प पैनल राजा नर्मर को ऊपरी और निचले मिस्र को जोड़ते हुए, प्रतीकात्मक रूप में दिखाया गया है ... जो एक घटना नहीं बल्कि घटनाओं की एक श्रृंखला थी... मिस्र के इतिहास में दो भूमियों का एकीकरण बहुत महत्वपूर्ण है।

जैसा कि सर्वविदित है, मिस्र के फिरौन और अन्य राजघरानों का मृत्युपयन्त जीवन में अटूट विश्वास था और बड़ी सावधानी और ध्यान से उन्होंने अपने अंतिम विश्राम या दफन स्थल की योजना बनाई थी। वे अपने साथ महंगे आभूषणों और अन्य बेशकीमती

मिस्र के फिरौन और अन्य राजघरानों का मृत्युपयन्त जीवन में अटूट विश्वास था और बड़ी सावधानी और ध्यान से उन्होंने अपने अंतिम विश्राम या दफन स्थल की योजना बनाई थी।

कलाकृतियों के रूप में अपनी संपत्ति का एक बड़ा हिस्सा ले गए थे। स्वाभाविक रूप से, दफन के पूर्व स्थानों पर चोर अक्सर धावा बोल दिया करते थे और उनका धन छीन लिया जाता था। इसलिए, बाद के शासक अपनी कब्रों की सुरक्षा को ले कर और अधिक सतर्क हो गए। नवंबर 2022 को बालक राजा तूतनखामेन के मकबरे की खोज को ठीक 100 साल हो गए। उन्हें नील नदी के पश्चिमी तट पर किंग्स घाटी में दफनाया गया था। लूट के दो प्रयासों के बावजूद, यह फरोहा के मकबरों में अब तक का सबसे अक्षुण्ण मकबरा है, और इसकी उत्कृष्ट खोज 1922 में हावर्ड कार्टर के नेतृत्व में हुई थी।

लेकिन, दुख की बात इस के साथ जुडी एक किंवदंती है कि तूतनखामेन का मकबरा शापित है, और जो कोई भी इसे छूता है वह अभिशप्त हो जाता है। आठ साल बाद हावर्ड कार्टर की मौत की घटना भी इसी से जुड़ी है।

खैर, अटकलों से वास्तविक तथ्यों की ओर चलते हैं, तूतनखामेन मिस्र के सर्वाधिक महत्वपूर्ण फिरौन में से एक है। अपने पिता रामेसेस प्रथम के निधन के बाद जब वो राजा बने वो बालक थे, जबकि संग्रहालय में वर्णित जानकारी बताती हैं, ''तूतनखामेन शीघ्र ही मिस्र की पहचान बन गया, जिसने दुनिया भर को अपनी संस्कृति, शैली और आश्चर्यों से प्रभावित किया। उस मकबरे में 5,000 से अधिक कलाकृतियाँ थीं, जिन्हें गीज़ा के केंद्र में बन रहे आकर्षण न्यू ग्रैंड इजिप्ट संग्रहालय में प्रदर्शित किया जाएगा। एक दुर्घटना के बाद उनकी मृत्यु हो गई और उन्हें बेशकीमती कीमती खजाने के साथ दफन किया गया था।''

इस संग्रहालय में आप वो सब जान सकेंगे कि कैसे पेट के अंदरूनी अंगों को निकालकर एक कंटेनरों में संरक्षित किया गया और फिर मृतकों के साथ दफनाया गया। दिल को शरीर में ही रहने दिया था। बाद में अंगों को चार कैनोपिक जार में रखा जाता था जिन्हें एक लकड़ी के बक्से में रखा गया था।

ये हो ही नहीं सकता, आप मिस्र की राजधानी से कुछ घंटों की ड्राइव पर स्थित काहिरा जाएँ और अलेक्जेंड्रिया नहीं जाएँ । जब सिकंदर महान ने 332 ईसा पूर्व में मिस्र पर धावा बोला था, तो मिस्र हेलेनिस्टिक सभ्यता का हिस्सा बन गया और फिर सिकंदर के एक प्रमुख नेता टॉलेमी प्रथम के शासन में आ गया। उन्होंने 305 ईसा पूर्व में शहर को एक स्वतंत्र टॉलेमिक साम्राज्य घोषित किया और यह 30

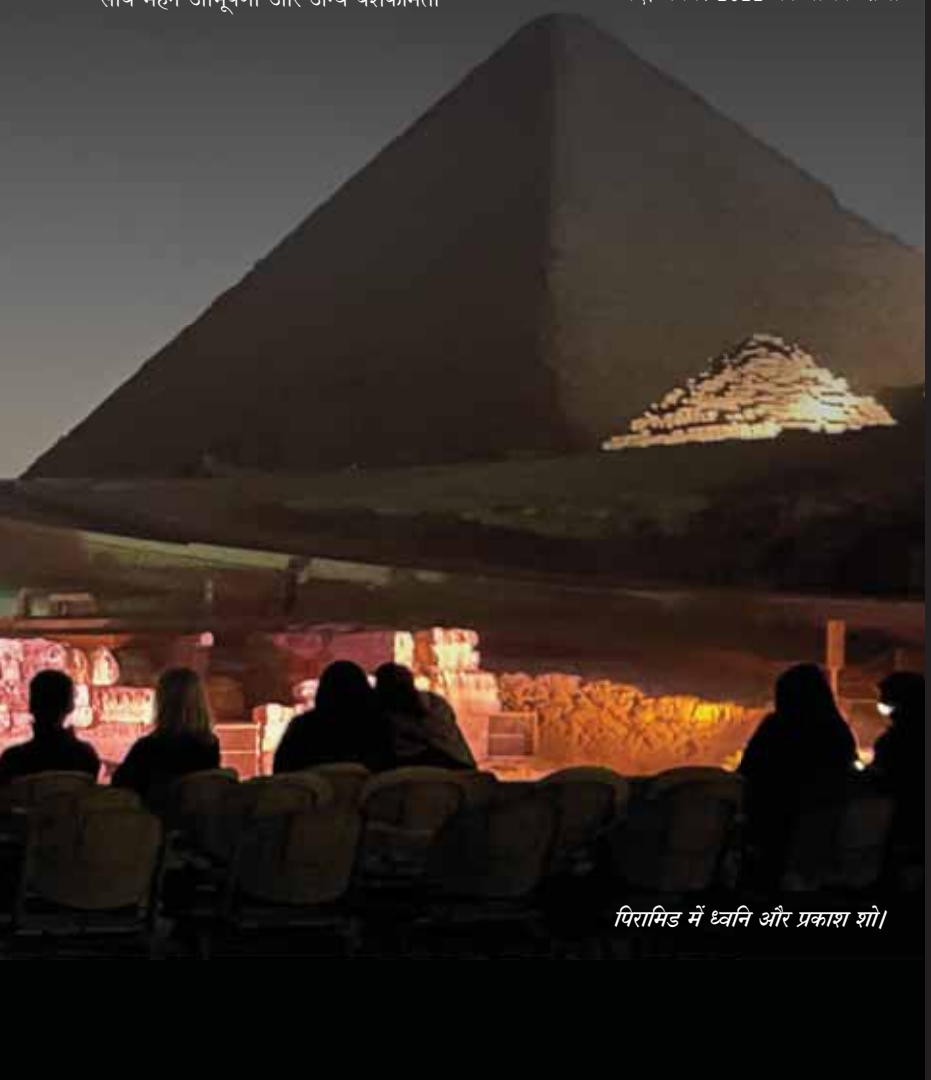

पिरामिड में ध्वनि और प्रकाश शो।

ईसा पूर्व में रोमन आक्रमण तक बना रहा। इस अवधि में कई सांस्कृतिक परिवर्तन हुए क्योंकि तब अलेक्जेंड्रिया मिस्र की राजधानी बन गया था। अपने पुस्तकालय और संग्रहालय के माध्यम से, यह जल्द ही भूमध्यसागरीय क्षेत्र में विज्ञान, संस्कृति और कला का सार्वभौमिक केंद्र बन गया। वास्तुकला और कृषि दोनों फले-फूले और सिंचाई के आधुनिक तरीकों की खोज की गई, जैसे पानी के पहिये और पानी के ड्रम और मिस्र भूमध्यसागरीय देशों की खाद्य टोकरी बन गया। अलेक्जेंड्रिया अपने थिएटरों, व्यायामशालाओं और सार्वजनिक स्नानागारों के लिए भी प्रसिद्ध था।

हमारी यात्रा का पहला पड़ाव पोम्पी स्तंभ था, यह नाम अलेक्जेंड्रिया में एक रोमन विजयी स्तंभ को दिया गया था। 298-302 ईस्वी के बीच विशाल कोरिंथियन स्तंभ मूल रूप से रोमन सम्राट डायोक्लेटियन के सम्मान में स्थापित किया गया था, इस पर कवच में सम्राट अलेक्जेंड्रिया की एक विशाल मूर्ति स्थापित की गई थी। बलुआ पत्थर से निर्मित, यह एक प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण स्मारक है और हालांकि यह आज एक निर्जन रूप में है, हमें नहीं भूलना चाहिए कि यह 11,000 से अधिक वर्षों तक मानव सभ्यता का एक उत्कृष्ट अवलोकन केंद्र था।

लेकिन जब कोई अलेक्जेंड्रिया का उल्लेख करता है तो एक इमारत दिमाग में आता है यहां का प्रसिद्ध पुस्तकालय। अलेक्जेंड्रिया का महान पुस्तकालय प्राचीन दुनिया में सबसे बड़े और सबसे प्रतिष्ठित पुस्तकालयों में से एक था। यह एक बड़े शोध संस्थान का हिस्सा था, जिसे माउसियन कहा जाता था, जो कि मूसा या कला की नौ देवियों को समर्पित था।

डेमेट्रियस एक यूनानी राजनीतिज्ञ था। एथेंस में सत्ता पलटने के बाद, उसने राजा टॉलेमी (297 ईसा पूर्व) के दरबार में शरण ली और राजा का सलाहकार बन गया। डेमेट्रियस के अपार ज्ञान से प्रभावित हो कर टॉलेमी ने उसे पुस्तकालय और माउसियन स्थापित करने का काम दिया। यहाँ ग्रीक साहित्य का एक बड़ा हिस्सा रखा गया था। इस पुस्तकालय में अरस्तू की पुस्तकों के संग्रह रखे गए हैं, किताबों से जुडी टॉलेमीज़ की दिलचस्प कहानियाँ हैं। किताबों के लिए वो किसी भी हद तक जा सकता था, वो अलेक्जेंड्रिया आने वाले प्रत्येक जहाज की तलाशी लेता और यदि उसे कोई अच्छी पुस्तक मिलती, तो उसे किनी ना किसी प्रकार से हथिया लेता था! एक जगह लिखा है कि इस पुस्तकालय में कभी 500,000 पुस्तकें हुआ करती थीं। हालाँकि अधिकांश पुस्तकों में ग्रीक लेखन और साहित्य, और मिस्र इतिहास के अभिलेख शामिल थे, टॉलेमी ने भी दुनिया भर से पुस्तकें प्राप्त की थीं ।

अलेक्जेंड्रिया के महान पुस्तकालय को कैसे नष्ट किया गया - वास्तव में पहले दो हुआ करते थे, क्योंकि पुस्तकों की लगातार बढ़ती संख्या को बाद में किसी अन्य स्थान पर समायोजित किया

किताबों के लिए किसी भी हद तक जा सकता था, वो अलेक्जेंड्रिया आने वाले प्रत्येक जहाज की तलाशी लेता और यदि उसे कोई अच्छी पुस्तक मिलती, तो उसे किनी ना किसी प्रकार से हथिया लेता था!

व्यंजनः (ऊपर बाएं दक्षिणावर्त से): बिरयानी का मिस्री संस्करण; चिकन के साथ चावल; हम्मस, बाबा गनौश, सलाद; पीटा ब्रेड बनाने वाली महिलाएँ; वैन में नृत्य; कुनाफा।

जाना था - इस पर विवाद उठना लाजिमी था। एक लेख तो कहता है कि 642 ईस्वी के बाद, जब अरब के जनरल अम्र इब्न अल-अस ने मिस्र को जीत लिया और अलेक्जेंड्रिया पर कब्जा कर लिया, तो उन्होंने पुस्तकालय में रखी पुस्तकों को जलाने का आदेश दिया था। लेकिन *ब्रिटानिका* के अनुसार विजय के पश्चात पांच शताब्दी से भी अधिक समय तक अरबों द्वारा एलेक्जेंडरियन पुस्तकालय को जलाने का कोई संदर्भ कहीं नहीं मिलता। लेकिन 13 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में, अचानक, एक रिपोर्ट सामने आई कि अम्र ने अलेक्जेंड्रिया की प्राचीन लाइब्रेरी की किताबों को किस तरह जलाया था। ''कहानी में एक कल्पना का पुट अधिक लगता है,'' अंत में ये निष्कर्ष निकला।

मिस्र में गाइड आपको ये ज़रूर बताएंगे कि ''पुस्तकालय को मुसलमानों ने नष्ट नहीं किया था और यह युद्ध के दौरान हुई एक दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना थी।'' 48 ईसा पूर्व में, मिस्र में क्लियोपेट्रा और उसके भाई टॉलेमी XIII के बीच एक गृहयुद्ध हुआ था, जिसमें सीज़र ने क्लियोपेट्रा का पक्ष लिया था और जब भूमि और समुद्र की तरफ से टॉलेमिक बलों द्वारा उसे घेर लिया गया, तो उसने दुश्मन के जहाजी बेड़े को जलाने का आदेश दिया, जिसकी वजह से आग भड़क उठी और फैल गई, इसने विश्व प्रसिद्ध पुस्तकालय सहित शहर की काफी इमारतों को नष्ट कर दिया था।

खैर सच्चाई जो भी हो, यह जानकर बहुत खुशी होती है कि आज अलेक्जेंड्रिया शहर के केंद्र में बंदरगाह के पास बने बिब्लियोथेका एलेक्जेंड्रिना के रूप में एक सुंदर और पुस्तकालय की लुभावनी इमारत शान से खड़ी है। हमें बताया गया कि 11 मंजिला इमारत में 80 लाख किताबें रखी जा सकती हैं। हम पूरे विस्मय के साथ विशाल इमारत के चारों तरफ घूमते हुए इसके अद्वितीय डिजाइन और वास्तुकला को और आश्चर्य के साथ देख रहे थे, यहां प्राकृतिक प्रकाश का उपयोग अधिकतम किया गया है। मुख्य वाचनालय 220,000 वर्गफुट में विस्तार लिए हुए है।

1974 में, अलेक्जेंड्रिया विश्वविद्यालय ने पुस्तकालय का पुनरुद्धार करने का निर्णय लिया और निर्माण 1995 में शुरू हो गया था और अक्टूबर 2002 में इस परिसर का उद्घाटन किया गया; लागत आई थी 220 मिलियन डॉलर 2009 में, फ्रांस ने करीब 500,000 पुस्तकें दान की थीं।

लेकिन फिरौन और संग्रहालयों के साथ, नील क्रूज और अबू सिंबल मंदिर (विवरण अगले अंक में), मिस्र अपने भोजन के लिए भी प्रसिद्ध है। काहिरा में हमारी पहली रात, हमारे गाइड मनाल

और रमादान को शुक्रिया, हम सोभ कबीर रेस्तरां में रात के खाने के लिए गए, वहां जबरदस्त भीड़ थी, और बाहर टेबल के लिए इंतजार कर रहे लोगों की भीड़ देख कर लगा जैसे वे मुफ्त में खाना बाँट रहे हों! लेकिन अंत में, रमजान की जान पहचान इसके मालिक से थी सो, हमें एक मेज मिल गई - और आप जानते हैं किसी भी रेस्तरां में 15 लोगों के लिए एक मेज मिलना आसान नहीं है!

उस शाम और बाद में हम जितने दिन ठहरे खाना बहुत ही स्वादिष्ट था। कई तरह के कोफ्ते, कबाब और शावरमा, लेकिन आश्चर्य की बात तो यह थी कि हमारे बीच दो शाकाहारी लोगों को कोई परेशानी नहीं हुई उन्हें अपनी पसंद का स्वादिष्ट शाकाहारी भोजन हर जगह मिल जाता था। पेटा ब्रेड, हम्मस, फलाफल, बाबा गनौश और सलाद सभी स्वादिष्ट थे। सबसे सुगंधित चावल के व्यंजनों में से एक थी चावल और सब्जियों को अंगूर के पत्तों में लपेट कर उन्हें और स्टीम किया गया था (ग्रीक व्यंजनों में इसे *डोलमा* कहा जाता है)। एक और स्वादिष्ट व्यंजन कोश्यारी था, जो मिस्र का एक पारंपरिक भोजन है, जो पास्ता, मिस्र के तले हुए चावल, सेंवई और भूरे रंग की दाल से बना होता है, और ऊपर एक ज़ायकेदार टमाटर की चटनी, लहसुन के सिरके के साथ सबसे ऊपर छोले और तले हुए कुरकुरे प्याज के साथ गार्निश किया जाता है। मिस्र में शराब आसानी से नहीं मिलती, लेकिन अपने भोजन को पेट में उतारने के लिए के लिए सबसे स्फूर्तिदायक हिबिस्कस पेय और निश्चित रूप से ताजे फलों के रस आजमाएं!

अंत में मीठे व्यंजन में, हमने कई तरह के *कुनाफा* चखे और यह स्वादिष्ट थे। सबसे अच्छी बात यह थी कि यह भोजन मसालेदार और स्वादिष्ट होने के साथ-साथ पूरी तरह से भारतीय स्वाद के अनुकूल था और सस्ता भी। मिस्र की पाउंड मुद्रा के हाल में अवमूल्यन के साथ, भारतीय रुपया को फायदा हुआ था चाहे वह भोजन या खरीदारी हो!

लेकिन उस पर अधिक चर्चा अगले अंक में; नील क्रूज और खूबसूरत और मनमोहक अबू सिंबल मंदिर, लक्सर से गुब्बारे की सवारी और किंग्स की अद्भुत घाटी।

(अगले अंक में जारी)

काइरो में एक दुकान।

चित्र: रशीदा भगत

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

Rotary PEOPLE OF ACTION

एक झलक

टीम रोटरी न्यूज़

मुंबई अस्पताल को मिली सोनोग्राफी मशीन

इप्का (IPCA) के एम डी ए के जैन ने आईपीडीजी राजेन्द्र जैन की उपस्थिति में सोनोग्राफी मशीन का उदघाटन किया।

रोटरी क्लब मुंबई कांदिवली वेस्ट, रो ई मंडल 3141 की ओर से इप्का (IPCA) लेबोरेटरीस के कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) की मदद से शहर के के ऐच एम मल्टी-स्पेसियालिटी हॉस्पिटल को ₹29.5 लाख की अल्ट्रासाउंड सोनोग्राफी मशीन दी गई। इस सोनोग्राफी मशीन से हर महीने लगभग 1500 गरीब मरीज लाभान्वित होंगे। ■

रो ई निदेशक कोटबागी हुए सम्मानित

आईआईएस विश्वविद्यालय, जयपुर के चांसलर अशोक गुप्ता (दाएं) की उपस्थिति में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला (बाएं से दूसरे) से रो ई निदेशक महेश कोटबागी ने डी लिट की डिग्री प्राप्त की।

रो ई निदेशक महेश कोटबागी को स्वास्थ्य सेवा और समाज सेवा में उनके योगदान के लिए आईआईएस विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा डी लिट (डॉक्टर ऑफ लेटर्स) - मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। अपने स्वीकृति भाषण में, उन्होंने अपनी उपलब्धियों के लिए अपने परिवार, विशेष रूप से अपनी माँ को श्रेय दिया, जो 75 वर्ष की आयु में पीएचडी स्नातक बनी। अपनी तीन दशक की लंबी रोटरी यात्रा में, कोटबागी वंचितों के लिए स्वच्छ पेयजल, स्वच्छता सुविधाओं और शिक्षा के प्रावधान सहित कई परियोजनाओं में शामिल थे। एक चिकित्सक के रूप में, स्वास्थ्य सेवाओं को सभी के लिए सुलभ बनाने में उनका योगदान महत्वपूर्ण हैं। वह अफ्रीका में रोटरी चिकित्सा मिशन का हिस्सा रहे हैं, और उन्होंने ग्रामीण भारत में चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया है। कोविड के दौरान, उन्होंने ग्रामीण अस्पतालों को ऑक्सीजन कंसंट्रेटर प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, यहां तक कि उन्होंने अपने ही अस्पताल में बहुमूल्य चिकित्सा सेवा प्रदान की। ■

जामनगर क्लब ने चलाया सरवाइकल कैंसर जागरूकता अभियान

रोटरी क्लब सेनोरस, जामनगर, रो ई मंडल 3060 की ओर से सरवाइकल कैंसर से बचाव के लिए लड़कियों और महिलाओं के लिए टीकाकरण अभियान चलाया गया। इस प्रोजेक्ट की अध्यक्षता डीजीएन निहिर दवे ने की। इस प्रोजेक्ट के द्वारा इस वर्ष मार्च तक 1500 किशोर बालिकाओं को टीके दिए गए। ■

चेन्नई के सरकारी स्कूलों के छात्रों को सुबह का नाश्ता कराया गया

छात्र नाश्ते का आनंद ले रहे हैं।

रोटरी चेन्नई मोगाप्पाएर, रो ई मंडल 3232 की ओर से पाँच सरकारी स्कूलों के 400 छात्रों को सुबह का नाश्ता कराया गया ताकि स्कूलों में छात्रों की उपस्थिति बढ़ाई जा सके। प्रत्येक महीने ₹10,000 नाश्ते पर खर्च किया जाता है। ■

डीजी के बाबूमोन, उनकी पत्नी बीना और प्रोजेक्ट परिनयम समन्वयक कर्नल के जी पिल्लई नवविवाहित नेत्रहीन जोड़े के साथ।

Rotary PEOPLE OF ACTION

निःशक्त जोड़ों का भव्य सामूहिक विवाह

वी मुत्तुकुमारन

एक मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति, रो ई मंडल 3211 ने प्रोजेक्ट परिनयम के तहत, 30 विकलांग जोड़ों का विवाह कैमलॉट कन्वेंशन सेंटर, एलेप्पी में प्रायोजित किया, इस विशाल वैवाहिक समारोह ने उनके जीवन में आशा और विश्वास का पुनः संचार किया है।

प्रत्येक युगल को प्रायोजकों की ओर से एक स्वर्ण मंगलसूत्र, ₹30,000 का नकद पुरस्कार और ₹5,000 का यात्रा खर्च दिया गया। रोटरी क्लब और अन्य लोगों ने मिल कर व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक जोड़े को ₹30,000 के घरेलू सामान और उपकरण उपहार में दिए। नवविवाहित जोड़ों को छह महीने के लिए किराने का सामान भी दिया गया था, उन्होंने बताया। अक्षम होने के उपरान्त भी जब उन्होंने, एक दूसरे को वर माला पहनाई तो मंत्री,

बाएं से: शादी में अलापुला जिला कलेक्टर कृष्णा तेजा, विधायक पीपी चितरंजन, बीना, एमपी ए एम आरिफ, पीडीजी राजशेखर श्रीनिवासन, पीडीजी थॉमस ववानीकुन्नेल, पीडीजी ई के ल्यूक, डीजी बाबूमोन, परिनयम *अध्यक्ष पी एस श्रीधरन, परियोजना सलाहकार पीडीजी के पी रामचंद्रन नायर, के जी पिल्लई, महासचिव विजयलक्ष्मी नायर, पीडीजी स्कारिया जोस, RRFC जॉन डेनियल, केरल राज्य विकलांग व्यक्ति कल्याण निगम के प्रमुख एम वी जयदली और नगरपालिका अध्यक्ष सौम्या राज।*

सांसद, विधायक और नगर निगम अधिकारियों सहित वहां उपस्थित कई लोगों की आँखे नम हो गईं। वर माला और पवित्र मंगल सूत्र पहनाने के लिए कुछ व्हीलचेयर पर, कुछ वाकर और बैसाखियों की सहायता से पहुंचे थे। दो नेत्रहीन युगल के वैवाहिक गठबंधन में रोटेरियन्स ने सहायता की थी, बाबूमोन याद करते हैं।

समारोह में पधारी सम्मानित अतिथियों में से एक, एम वी जयदली, अध्यक्ष, केरल राज्य विकलांग कल्याण निगम, जो खुद बचपन में पोलियो की शिकार रही थीं, बोलीं, ''मैंने इतने बड़े स्तर पर कभी भी शारीरिक रूप से अक्षम दुल्हनों और दूल्हों के लिए आयोजित सामूहिक विवाह समारोह में ना तो कभी भाग लिया और ना ही सुना है।''

रोटेरियन ने विवाहित युगल में से योग्य व्यक्तियों को नौकरी दी है ताकि उन्हें स्थायी आजीविका मिलती रहे। कार्यक्रम के अध्यक्ष पी एस श्रीधरन, डिस्ट्रिक्ट ट्रेनर पीडीजी के पी रामचंद्रन नायर और पूर्व गवर्नरों की गरिमामय उपस्थिति से परिनयम का विशाल आयोजन सफल रहा।

प्रोजेक्ट अमृतम

प्रोजेक्ट अमृतम, स्कूली छात्रों के लिए एक चिकित्सा शिविर ने अभी तक दक्षिण केरल के पांच राजस्व जिलों के 1,200 निजी और सरकारी, दोनों स्कूलों के पांच लाख छात्रों की जांच कर चुका है।

वर्तमान में, 156 क्लब मस्वस्थ और प्रसन्न बच्चेफ टैगलाइन के साथ अमृतम शिविर आयोजित कर चुके हैं। मंडल के क्लबों ने अपने प्रारम्भिक लक्ष्यों को पहले ही पूरा कर लिया है, ''इन चिकित्सा शिविरों के माध्यम से अब हम 50,000 छात्रों की जांच और करेंगे। मार्च तक, हम दृष्टि दोष पाए जाने वाले लोगों को 50,000 चश्मे बाँट चुके हैं; और कान की समस्या से ग्रसित छात्रों को 100 श्रवण यंत्र दे चुके हैं।''

आईपीएस, आईएएस और आईआरएस जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए 100 छात्रों को मुफ्त कोचिंग दी जा रही है; कुल मिला कर 75 क्लब *प्रोजेक्ट वलसालयम* कर रहे हैं जो युवाओं को उज्ज्वल कैरियर के लिए आवश्यक शैक्षणिक लक्ष्य प्राप्त करने के लिए तैयार करता है, बाबूमोन बताते हैं।

विकलांग बच्चों के लिए, *अमृतहस्थम* (मदद करने वाले हाथ) परियोजना ने सरकार के राष्ट्रीय कैरियर सेवा केंद्र (NCSC) के साथ एक संयुक्त परियोजना में 1,500 लाभार्थियों को श्रवण यंत्र, व्हीलचेयर, चलने की छड़ी और मोबाइल फोन वितरित किए हैं, जिनकी कीमत ₹1 करोड़ है। क्या आप इन चारों प्रभावशाली परियोजनाओं को नए नेतृत्व में अगले साल भी जारी रखेंगे, डीजी बाबूमोन कहते हैं, डीजीई सुमित्रन ने सभी को जारी रखने का विचार किया है। उम्मीद है, वह इनका और अधिक विस्तार करेंगे। ■

आपके गवर्नर्स से मिलिए

वी मुत्तुकुमारन

एन नंदकुमार
मैक्सिलोफेशियल सर्जन,
रोटरी क्लब मद्रास वाडपलानी, रो ई मंडल 3232

विभाजन के बाद, हमारा विकास होगा

रो ई मंडल 3232 का आसान प्रशासन के लिए 2024 में विभाजन करना तय किया गया। ''चेन्नई मंडल 170 से अधिक क्लबों और 7,000 से अधिक सदस्यों के साथ बड़ा बन गया है। लेकिन हर बार जब इस मंडल का विभाजन किया जाता है, तो नए क्लबों और सदस्य संख्या में वृद्धि होती है। हमें दोबारा इसी तरह की वृद्धि देखने को मिल सकती हैं,'' एन नंदकुमार कहते हैं।

हालांकि वह 2000 में रोटरी में शामिल हुए थे लेकिन 2011 में जब उन्होंने एक विशाल चिकित्सा पुनर्वास शिविर में भाग लेने के लिए जाफना, श्रीलंका का दौरा बेहद प्रभावित हुआ। उनकी प्रमुख *परियोजना शक्ति* (वैश्विक अनुदान: 600,000 डॉलर) के अंतर्गत 10 सरकारी और चैरिटी अस्पतालों को मैमोग्राम मशीनें दान की गई।

चेन्नई निगम और श्री रामचंद्र कॉलेज के साथ मिलकर रोटरी क्लब मद्रास सेंट्रल आदित्य ने हाल ही में *प्रोजेक्ट नलम* के तहत PHCयों में मरीजों की जांच करने हेतु एक हृदय देखभाल बस (वैश्विक अनुदान: ₹1 करोड़) की शुरुआत की। रोटरी क्लब मद्रास वाडपलानी और मद्रास वेस्ट द्वारा की गई एक परियोजना के अंतर्गत कैंसर की जांच करने के लिए एक और बस (₹1.4 करोड़) तैयार है।

TRF के लिए उनका लक्ष्य 2.2 मिलियन डॉलर एकत्रित करने का है। वह कहते है उनकी पत्नी डॉ सुमेधा, जो 15 साल से एक रोटेरियन हैं, के समर्थन से, ''रोटरी ने मुझे वंचितों तक अपनी चिकित्सा पहुँचाने में मदद की।'' नंदकुमार आगे कहते हैं, ''इस प्रक्रिया-उन्मुख संगठन ने एक आदर्श वैश्विक नागरिक के रूप में मेरे दृष्टिकोण को आकार दिया है।'' ■

बी एलंगकुमारन
शिक्षा, रोटरी क्लब तिरुपुर साउथ, रो ई मंडल 3203

तिरुपुर में ₹90 करोड़ की लागत से एक कैंसर देखभाल केंद्र

स्कूल के दिनों के दौरान जब भी वह किसी रोटरी क्लब के सामने से गुजरते थे मुझे इस क्लब में शामिल होने की तीव्र इच्छा पैदा हुई जिसमें हमेशा कुछ न कुछ गतिविधियां होती रहती थी, एलंगकुमारन याद करते हैं। और वह 2008 में अपने क्लब से जुड़े।

अब रोटरी तिरुपुर और पब्लिक वेलफेयर ट्रस्ट, के सचिव के रूप में उनका ध्यान इस अस्पताल परियोजना पर केंद्रित हैं जो तमिलनाडु सरकार के साथ इसकी *नामाकू नामे थिट्टम* (आत्मनिर्भरता योजना) के अंतर्गत एक संयुक्त पहल है। इस पूर्ण रूप से सुसज्जित, चार मंजिला 75,000 वर्ग फुट के कैंसर केंद्र को तिरुपुर सरकारी मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल को सौंप दिया जाएगा। जहाँ इस परियोजना के लिए रोटरी द्वारा ₹30 करोड़ लगाए जाएंगे वहीं सरकार इस परियोजना के लिए 60 करोड़ प्रदान करेगी।

अस्पताल के लिए एक अनुदान संचयन मैराथन में 18,000 लोगों ने भाग लिया और इस से ₹85 लाख जुटाए। पिछले दो वर्षों में रोटरी क्लब मेट्टुपलायम प्राइम ने सी एस आर निधि की मदद से 500 मोटरचालित कृत्रिम अंग वितरित किए। रोटरी क्लब तिरुपुर भारती द्वारा एकत्रित किए गए ₹80 लाख की मदद से आठ कक्षाओं (5,000 वर्ग फुट) वाला एक स्कूल भवन निर्माणाधीन है। कुल मिलाकर 12 वैश्विक अनुदान परियोजनाएं प्रक्रियाधीन हैं, जिनमें से प्रत्येक की लागत लगभग 50,000 डॉलर हैं। ''हम सरकारी माध्यमिक शालाओं में 100 छोटे पुस्तकालय स्थापित कर रहे हैं।'' TRF को देने के लिए उनका लक्ष्य 1 मिलियन डॉलर का है। ■

RID 3120 के डिस्कॉन में रोटेरीयनों का मेल मिलाप

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी मंडल अधिवेशन समागम (3 - 5 फरवरी) रो ई मंडल 3120 की ओर से आयोजित की गई। आयोजन में रोटरी विषयों जैसे- नेतृत्व करना, सामूहिक कार्यक्षेत्र और सामुदायिक सेवा पर कार्यशालाएं हुईं। मुख्य वक्ताओं ने कार्यक्रम को जीवंत बनाए रखा। कार्यक्रम में 1000 से भी अधिक रोटेरियन शामिल हुए।

डी जी अनिल अग्रवाल ने मेजबान क्लब रोटरी क्लब इलाहाबाद रॉयल्स की तारीफ की, यह क्लब सिर्फ महिलाओं द्वारा संचालित की जाती है, इस क्लब ने कार्यक्रम स्थल पर सभी व्यवस्थाएं की थीं। कार्यक्रम के उद्घाटन के बाद पद्मश्री आनंद कुमार (संस्थापक सुपर 30- जहाँ IIT उम्मीदवारों को प्रशिक्षित किया जाता है) ने अपने सफलता के संघर्ष की कहानी बताई और रोटरी के कार्यों की सराहना की, उन्होने कहा कि शिक्षा जीवन की सतत प्रक्रिया है और यह मौलिक अधिकार सभी को मिलनी चाहिए। सम्मेलन की अध्यक्ष पूनम गुलाटी ने प्रतिनिधियों का स्वागत किया जबकि मेजबान क्लब की अध्यक्ष विनीता अग्रवाल ने अपने क्लब के प्रोजेक्स दिखाए।

डीजी अनिल अग्रवाल, कविता, पीडीजी समीर हरियानी और रूपा उद्घाटन के अवसर पर।

आरआईपीआर पीडीजी समीर हरियानी ने डी जी अग्रवाल और उनकी टीम को कार्यक्रम की व्यवस्था के लिए सराहा। रूपा हरियानी ने विविधता, हिस्सेदारी और समावेश पर लोगों को संबोधित किया। दीपक वोहरा (आईएफएस ऑफिसर और प्रधानमंत्री मोदी के सलाहकार), एन्टरप्रेन्योर प्रफुल बिल्लोर जो कि एम बीए चायवाला के नाम से भी जाने जाते हैं और अभिनेत्री (कैंसर विजेता) महिमा चौधरी ने लोगों को संबोधित किया। रोटरी फ़ाउंडेशन में दान करने के लिए अभिनेत्री ने लोगों को प्रोत्साहित किया, जिन सदस्यों ने महिमा चौधरी के साथ तस्वीरें लीं, उन्होने TRF में 500 डॉलर देने का आश्वासन दिया। रोटेरियन आशुतोष अग्रवाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया और आने वाले वर्षों में रोटरी के कार्यों के बारे में बताया। ■

RNT की कार्यकारी समिति के सदस्य - 2023-24

बाएं से: रो ई मंडल 3212 के डीजीई मुत्तैया पिल्लई (कोषाध्यक्ष), रो ई मंडल 3132 के डीजीई स्वाति हरकल (अध्यक्ष), रो ई मंडल 3291 के डीजीई हीरालाल यादव (सचिव) और रो ई मंडल 3142 के डीजीई मिलिंद कुलकर्णी (सलाहकार)।

गर्मी को मात देने के कूल तरीके

प्रीति मेहरा

इस गर्मी में ऊर्जा बचाने के लिए स्थायी विकल्प।

जैसे ही गर्मी प्रारंभ होती है, उष्णकटिबंधीय इलाकों में रहने वाले तमाम लोगों के लिए ठंडा रहना प्राथमिकता बन जाता है। अगले कुछ महीनों के लिए असाधारण रूप से गर्म मौसम के अनुमान हैं। इसके अलावा, यह अनुमान लगाया गया है कि आने वाले सालों में चरम मौसम की घटनाएं भारत के कई भागों को प्रभावित करेंगी और गर्मी के मौसम में तापमान सहनीय सीमा से ज्यादा बढ़ जाएगा।

एक एयर कंडीशनर स्थापित करना उन लोगों की स्पष्ट प्रतिक्रिया है जो इसे वहन कर सकते हैं। हालांकि, एयर कंडीशनर वातावरण में जहरीला उत्सर्जन छोड़ते हैं, बिजली की खपत करते हैं और पर्यावरण को और भी गर्म करते हैं, इस प्रकार एक दुष्चक्र बनाते हैं। कुदरत पर प्रभाव को कम करते हुए हमें अपने आराम क्षेत्र में रखने के लिए यहां कुछ आसान कदम उठाए जा सकते हैं।

प्रारंभ के लिए, हम अपने घरों के भीतर के तापमान को कम करने और एयर कंडीशनिंग पर हमारे द्वारा डाले गए भार को नीचे लाने के लिए हाइब्रिड सुलझावों के बारे में सोच सकते हैं। आपका घर जितना ठंडा होगा, विद्युत् का भार उतना ही नीचे आएगा और आपका कार्बन फुटप्रिंट भी उतना ही नीचे आएगा। आप हैरान रह जाएंगे कि बढ़ते हुए पौधे-घर के भीतर और बाहर-क्या फर्क ला सकते हैं।

पर्यावरण माहिरों के अनुसार, रणनीतिक रूप से लगाए जाने पर हरियाली घर के भीतर के तापमान में अहम कमी ला सकती है। एक घर के पूर्व और पश्चिम की ओर बढ़ते पेड़ सूरज को अवरुद्ध करने और घर के भीतर अपेक्षाकृत ठंडा रखने में सहायता करते हैं। इसलिए, अगर आप एक ऐसे शहरी वातावरण में रहते हैं जो साल के ज्यादातर वक़्त गर्म रहता है, तो यह सलाह दी जाती है कि आप बड़े और पत्तेदार पेड़ों को लगाएं ताकि आने वाले सालों में वे वांछित छाया प्रदान कर सकें।

अनुमान लगाया गया है कि आने वाले सालों में चरम मौसम की घटनाएं भारत के कई भागों को प्रभावित करेंगी और गर्मी के मौसम में तापमान सहनीय सीमा से ज्यादा बढ़ जाएगा।

छोटे पौधों का भी शीतलन प्रभाव होता है। कुछ सबसे अच्छे घर वे हैं जो अपनी बाहरी दीवारों पर पर्वतारोहियों को उगाते हैं। हरे और रंगीन ज़रूर दिखते हैं, उस के अलावा , खास कर के फूलों के मौसम में, वे भीतर के तापमान को नीचे लाते हैं। क्रीपर्स रेलिंग, हेजेज और बालकनी ग्रिल को भी बहुत प्रभाव में ला सकते हैं। अगर वे कोई फल या सब्जी देते हैं, तो और भी बेहतर।

बहुत से लोग परावर्तक श्वेत पेंट का इस्तेमाल करते हैं जो कंक्रीट की छतों द्वारा अवशोषित गर्मी की मात्रा को कम करता है। मेरे कुछ दोस्तों की छत पर उद्यान है। हालांकि यह छत की जगह लेता है, यह गर्मी को नीचे लाने में बहुत सहायता करता है।

खिड़कियों को सजाना एक और कदम है जो कूलिंग में इजाफा कर सकता है। घर को सीधी सूरज के किरणों से बचाने के लिए आप खिड़की की रिफ्लेक्टिव टिनिंग का इस्तेमाल कर सकते हैं या बाहर शामियाना लगा सकते हैं। या बस एक सफेद परावर्तक अस्तर के साथ काले पर्दे का इस्तेमाल करें। इससे काफी गर्मी दूर रहती है।

फिर अन्य स्पष्ट हरे सुलझाव हैं। आप पर्यावरण के अनुकूल और विद्युत् की बचत करने वाले पंखों में निवेश कर सकते हैं। उच्च गति वाले, धूल रहित पंखे हैं जो उनकी ऊर्जा दक्षता के लिए प्रमाणित हैं। इस साल जनवरी से, पंखे के लिए ब्यूरो ऑफ एनर्जी एफिशिएंसी रेटिंग अनिवार्य है जिसका निर्माणकर्ताओं को पालन करना होगा। सीधे लफ़्ज़ों में कहें, तो यह आपको दिखाता है कि खपत किए गए हर एक वाट के लिए पंखा कितना हवा वितरण करेगा। उच्च सेवा मूल्य का मतलब है हवा परिसंचरण से समझौता किए बिना पंखे की ज्यादा ऊर्जा कुशलता।

डीह्यूमिडिफ़ायर ख़रीदना भी सोचने लायक विचार है, खासकर अगर आप तटीय नगर या शहर में रहते हैं। यहां जितनी गर्मी है उतनी ही उमस भी है जो आपको बेहद असहज कर देती है। डीह्यूमिडिफ़ायर हवा से अतिरिक्त पानी सोख लेता है, जिससे आप कई डिग्री तक ठंडक महसूस करते हैं। अतिरिक्त फायदा के रूप में यह घर को फफूंदी रहित रखने में सहायता करता है।

अगर आपको एयर कंडीशनिंग की ज़रुरत महसूस होती है, तो ऐसी यूनिट की पहचान करना अक़्लमंदी होगी जो पर्यावरण के अनुकूल और ऊर्जा सुजान हो। अपने एयर कंडीशनर पर ऊर्जा बचाने के तरीके के बारे में यहां कुछ सुझाव दिए गए हैं:

आपका सबसे अच्छा दांव ऊर्जा दक्षता ब्यूरो द्वारा प्रदान की गई उच्चतम स्टार रेटिंग वाली यूनिट में निवेश करना होगा, भले ही प्रारंभिक लागत कम सुजान मॉडल से ज्यादा हो। AC की स्टार रेटिंग उसकी कूलिंग एफिशिएंसी को दर्शाती है। उच्चतम रेटिंग 5-सितारा है और यह इंगित करता है कि कम बिजली की खपत करते हुए विशेष मॉडल तेजी से ठंडा होता है। यह दक्षता स्तर चार, तीन, दो या एक सितारों के रूप में प्रमाणित पिछली के साथ नीचे चला जाता है।

जब आप गर्मियों के लिए खुद को तैयार करते हैं, तो पर्यावरण और कुदरत के बारे में विचार करें जो हमें बनाए रखती है।

एक बार जब आप अपने AC पर ध्यान केंद्रित कर लेते हैं, तो आपको इसकी स्थापना के बारे में होशियार रहना चाहिए। स्थानीय इलेक्ट्रीशियन के बजाय निर्माताओं द्वारा अनुशंसित या प्रदान किए गए काबिल तकनीशियनों की सेवाओं को नियोजित करना अक़्लमंदी है। आपको यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि -उ की बाहरी यूनिट ऐसी दिशा में स्थापित नहीं है जहां यह बहुत ज्यादा सीधी सूरज की रौशनी के संपर्क में आती है। दरवाजे और खिड़कियों वाला एक कमरा जिसे मजबूती से सुरक्षित किया जा सकता है, आपके AC पर लोड कम करने में भी सहायता करता है।

हो सकता है कि अपने AC को आराम देना और उसे 24/7 न चलाना बुरा विचार न हो। और अपने थर्मोस्टेट को 20-25 डिग्री सेल्सियस के बीच सुखद तापमान पर सेट करें। कुछ माहिरों का कहना है कि 24 डिग्री आदर्श तापमान है जब AC ऊर्जा कुशल है और आपके कमरे को एक परिवेशी और माकूल ठंडे तापमान पर रखता है।

किसी भी चीज से ज्यादा, जब आप गर्मियों के लिए खुद को तैयार करते हैं, तो पर्यावरण और कुदरत के बारे में विचार करें जो हमें बनाए रखती है। हम मुश्किल वक़्त से गुजर रहे हैं जब बचाई गई ऊर्जा की हर एक यूनिट सहायता करती है। आप शांत और जिम्मेदार बनकर अपना कार्य कर सकते हैं।

लेखिका एक वरिष्ठ पत्रकार हैं, जो पर्यावरण के मुद्दों पर लिखती हैं।

संगीत और माधुर्य

शंकर-जयकिशन

बॉलीवुड संगीत के अन्वेषक

एस आर मधु

इस देश पर हिंदी फिल्म संगीत का नशा कब चढ़ने लगा, कब राष्ट्रीय उन्माद में बदल कर ये पूरे देश पर छा गया? यह हुआ था 1949 की अतुलनीय फिल्म *बरसात* के बाद, जिसके लिए शंकर-जयकिशन (एसजे) ने दुनिया को लता मंगेशकर के सात एकल सहित 11 प्रस्तुतियां दी थी। *बरसात* के बाद ही हिंदी फिल्म संगीत, भारत में होने वाली सभी प्रकार के संगीत की कुल बिक्री का 70 प्रतिशत हिस्सा बन गया था।

''वे संगीतकार नहीं हैं, वे जादूगर हैं,'' संगीतज्ञ नौशाद ने एक बार एसजे के बारे में ये कहा था। 1950 और 60 के दशक में, यह ''राम-लक्ष्मण'' की जोड़ी व्यावसायिक सफलता की पराकाष्ठा थी।

संगीतकार ओपी नैय्यर ने शंकर को ''फिल्मों में सर्वाधिक पूर्ण संगीतज्ञ'' के रूप में वर्णित किया था। संगीतकार प्यारेलाल ने कहा था कि हालांकि उन्होंने और लक्ष्मीकांत ने *दोस्ती* के लिए 1964 का फिल्मफेयर सर्वश्रेष्ठ संगीत पुरस्कार जीता था, पर उनकी नज़र में एसजे की फिल्म *संगम* का संगीत *दोस्ती* से बेहतर था।

एसजे ऐसे पहले संगीतकार थे जिनके करियर की शुरुआत *बरसात* जैसी अभूतपूर्व फिल्म के धमाके के साथ हुई थी। नौशाद, एसडी बर्मन और ओ पी नय्यर जैसे महान संगीतकारों को भी एक हिट फिल्म देने से पहले कुछ फ्लॉप फिल्मों का स्वाद चखना पड़ा था। एसजे ने बरसात फिल्म से ही से कुछ और रिकॉर्ड भी पहली बार स्थापित किए। इसने बॉलीवुड को इसका पहला प्रसिद्ध *बरसात* गीत (*बरसात* में हमसे मिले), इसका पहला प्रसिद्ध कैबरे गीत (पतली कमर है) और इसका पहला शीर्षक गीत बरसात में हमसे मिले तुम दिया है।

एसजे ने *आवारा (तेरे बिना आग ये चांदनी)* के माध्यम से बॉलीवुड को अपना पहला प्रसिद्ध ड्रीम सीक्वेंस भी दिया, और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध होने वाला पहला गाना था - *आवारा हूं।* एसजे पहले संगीतकार थे जिन्हें एक फिल्म के लिए नियमित रूप से ₹5 लाख का भुगतान दिया जाता था।

जावेद अख्तर ने कहा था कि गुणवत्ता और मात्रा, दोनों में इनका जवाब नहीं। उनके संगीत ने मनोरंजन को एक नई ऊंचाईयों पर पहुंचाया था, साथ ही उन्होंने लगातार ढेर सारे ब्लॉकबस्टर दिए हैं, प्रत्येक ब्लॉकबस्टर

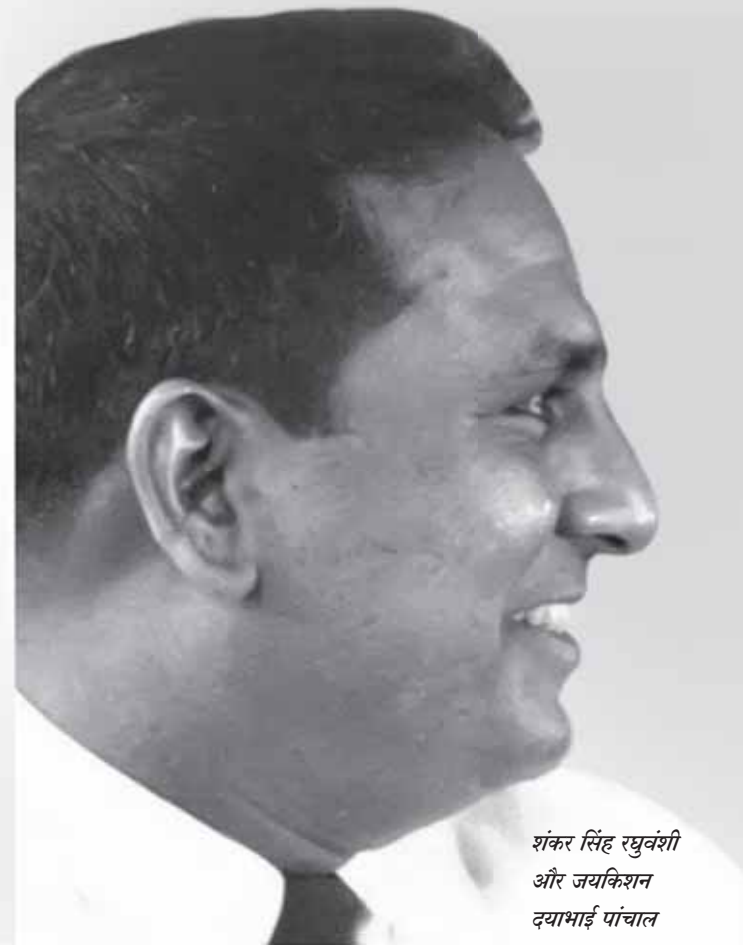

शंकर सिंह रघुवंशी और जयकिशन दयाभाई पांचाल

फिल्म में एक नहीं बल्कि कई - कई हिट गाने थे, जो उनके करियर की एक विशिष्टता थी। उनके संगीत की रेंज और विविधता - हर शैली, हर मिजाज, हर प्रेरणा- काबिल-ए-तारीफ़ थी।

दोनों ने लगभग 170 फिल्मों के लिए संगीत दिया; इनमें 75 प्रतिशत फिल्मों के हिट होने के साथ, कई ने तो स्वर्ण/रजत जयंती मनाई हैं।

उनकी सफलता ने कई निर्देशकों, सितारों और गायकों और अरेंजर्स, इंस्ट्रुमेंटलिस्ट्स, पर्क्युसिनिस्ट्स के पूरे संगीत उद्योग को अपनी चपेट में ले लिया। कोई आश्चर्य नहीं कि इस जोड़ी को सफलता का चमकता तावीज़ माना जाता था। अगर फिल्म में इनका संगीत हो तो फिल्म को वित्त का आश्वासन सहजता से मिल जाता था, अभिनेता कोई भी हो।

शंकर की हिंदुस्तानी शास्त्रीय व कर्नाटक संगीत पर गहरी पकड़ थी और विभिन्न वाद्ययंत्रों के साथ भाव प्रधान व नृत्य आधारित गीतों की रचना में उन्हें महारथ हासिल था, दोनों में शंकर अधिक प्रतिभाशाली थे।

इस जोड़ी ने नौ फिल्मफेयर पुरस्कार जीते थे - *चोरी चोरी* (1956), *अनाड़ी* (1959), *दिल अपना और प्रीत पराई* (1960), *प्रोफेसर* (1962), *सूरज* (1966), *ब्रह्मचारी* (1968), *पहचान* (1970), *मेरा नाम जोकर* (1971) *और बेईमान* (1972)। उन्हें 1968 में पद्म श्री से सम्मानित किया गया था।

एसजे की कई उपलब्धियों में से एक है राग जैज़ स्टाइल नाम से एक एलपी रिकॉर्ड था जिसमें उन्होंने रागा जैज़ शैली में 11 राग प्रस्तुत किए गए हैं।

शंकर बनाम जयकिशन

शंकर और जयकिशन के व्यक्तित्व और शैली परस्पर विरोधी थी। जयकिशन से उम्र में करीब 10 साल बड़े शंकर शांत चित्त और रूढ़िवादी थे और शराब नहीं पीते थे। वह आमतौर पर जल्दी काम पर पहुँच जाते थे और शाम तक रहते थे, कभी-कभी चाय पीने क्रिकेट क्लब ऑफ़ इंडिया चले जाते थे। वहीं जयकिशन स्कॉच और फैंसी कारों के साथ महंगे रेस्तरां के शौक़ीन थे और वह किसी भी पार्टी की जान थे। एक अवसर पर, गेलॉर्ड्स में एक भव्य बॉलीवुड पार्टी चल रही थी। वहां भारतीय सिनेमा के शीर्ष पर बैठी त्रिमूर्ति- राज कपूर, दिलीप कुमार, देव आनंद - उपस्थित थे, और प्रशंसकों और गेट-क्रैशर्स की भीड़ से घिरे हुए थे। अचानक शोर मच गया - जयकिशन आ गए। प्रशंसकों की भीड़ ने इन तीनों को छोड़ दिया और ऑटोग्राफ के लिए इस आकर्षक संगीतकार की ओर मुड़ गए। अभिनेता अन्नू कपूर कहते हैं, मफ्तीनों हैरान रह गए, लेकिन फिर मुस्कुरा दिए.फ़फ़

शंकर की हिंदुस्तानी शास्त्रीय व कर्नाटक संगीत पर गहरी पकड़ थी और विभिन्न वाद्ययंत्रों के साथ भाव प्रधान व नृत्य आधारित गीतों की रचना में उन्हें महारथ हासिल था, दोनों में शंकर अधिक प्रतिभाशाली थे। जयकिशन की हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के साथ साथ पाश्चात्य संगीत/ की भी अच्छी समझ थी, जिसकी वजह से वे पार्श्व संगीत यानी बैक ग्राउंड म्यूजिक और रोमांटिक गीतों की संगीत रचना में पारंगत थे। शंकर को राग भैरवी अधिक प्रिय था, और जयकिशन को राग शिवरंजिनी। शंकर अपने दाहिने हाथ से पियानो को ट्यून किया करते थे, जयकिशन बाएं हाथ से। शंकर ने आमतौर पर शैलेंद्र के लिखे गीतों को सुरों से सजाया तो जयकिशन ने हसरत-जयपुरी के साथ अधिक काम किया।

शंकर और जयकिशन को बॉलीवुड संगीत के दिग्गजों में शुमार किया जाता है। उन्होंने माधुर्य में नवाचारों के साथ एक नया पथ प्रज्वलित किया। पृष्ठभूमि, संगीत और इंस्ट्रूमेंटेशन, फिल्म निर्माताओं, संगीतकारों और तकनीशियनों पर उनका गहरा प्रभाव था।

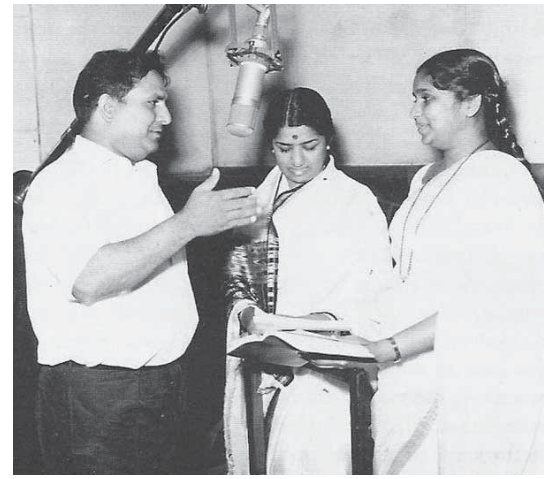

दक्षिणावर्तः रफ़ी और अन्य संगीतकारों के साथ शंकर और जयकिशन; फिल्म बेगुनाह *में जयकिशन; शंकर, लता, जयकिशन और मुकेश; पृथ्वीराज कपूर के साथ एस जे; फिल्म* सूरज *के लिए पुरस्कार जीतने के बाद एसजे के साथ शारदा; फिल्म* श्री 420 *के एक दृश्य में नरगिस और राजकपूर; नूतन के साथ, फिल्म* सूरज *के लिए सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशक का फिल्मफेयर पुरस्कार प्राप्त करने के बाद; लता मंगेशकर और आशा भोसले के साथ शंकर।*

1963 में जयकिशन ने एक बिजनेसमैन की बेटी पल्लवी से शादी की थी। कन्या के माता-पिता इस रिश्ते के खिलाफ थे। उस समय शंकर ने पिता की अनुपस्थिति में दुल्हन के लिए *कन्यादान* किया था।

एसजे करियर का उत्थान

शंकर सिंह रघुवंशी का जन्म मध्य प्रदेश के पंजाबी परिवार में हुआ था और आंध्र प्रदेश में पल कर बड़े हुए। वह एक निपुण तबला वादक, एक अच्छे पहलवान साथ ही कत्थक नृत्य में भी प्रशिक्षित थे। बंबई आकर उन्होंने सितार और अकॉर्डियन जैसे वाद्य यंत्रों में दक्षता हासिल की। उन्होंने पृथ्वीराज कपूर के पृथ्वी थिएटर में कुछ भूमिकाएँ भी थीं।

1929 में गुजरात के बलसार में पैदा हुए जयकिशन पांचाल हारमोनियम बजाने में निष्णात थे, और बंबई जाने से पहले उन्होंने गुरुओं से हारमोनियम और संगीत दोनों की शिक्षा ली थी।

शंकर और जयकिशन की मुलाकात बंबई में हुई थी और जल्दी ही वो अच्छे दोस्त बन गए। शंकर ने जयकिशन को पृथ्वी थिएटर में हारमोनियम वादक की नौकरी दिलवाई थी। बाद में राज कपूर ने अपनी पहली फिल्म आग के लिए संगीत निर्देशक राम गांगुली के सहायक के रूप में दोनों को रख लिया था; हालांकि संगीत औसत से सफल रहा, लेकिन फिल्म फ्लॉप हो गई।

राज कपूर अंदाज़ फिल्म में नौशाद के संगीत से काफी प्रभावित थे और वो चाहते थे कि *बरसात, अंदाज़* को पीछे छोड़ दे। वो लोगों के कटाक्ष से बहुत आहत हुए थे आग से जल गया था, अब *बरसात* में बह जायेगा। कुछ मतभेदों की वजह से उन्होंने गांगुली को छोड़ दिया और *बरसात* के लिए संगीतकार के रूप में शंकर को अनुबंधित कर लिया।

शंकर के कहने पर, फिल्म को संगीतबद्ध करने में जयकिशन उनके कंपोजिंग पार्टनर

एक दूसरे की पूरक थी दोनों की व्यक्तिगत प्रतिभा जिसने दोनों को सशक्त बनाया। एक से बढ़ कर एक उत्कृष्ट गायकों ने उनकी सम्मोहक धुनों को अपनी आवाज़ दी है।

बने। उस टीम में गीतकार शैलेंद्र और हसरत-जयपुरी भी शामिल थे, और इस फिल्म के गाने जबरदस्त हिट हुए थे।

एसजे के अविश्वसनीय उत्कृष्ट करियर को तीन चरणों में विभाजित किया जा सकता है; युवा राज कपूर का युग, जिसमें बॉलीवुड संगीत को फिर से परिभाषित करने वाली फिल्में शामिल हैं: *बरसात, आवारा, आह, श्री 420, बूट पोलिश, चोरी चोरी।* इन छह फिल्मों ने बॉलीवुड को 50 धुनें दीं, जिनमें से अधिकांश शानदार हैं।

जवान हों या वृद्ध, पूरा भारत इन गानों में डूब गया था : *मुझे किसी से प्यार हो गया* (*बरसात* में लता); *आवारा हूं* (*आवारा* में मुकेश, एक गीत ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर धूम मचाई); *मेरा जूता है जापानी* (मुकेश *श्री 420*); *प्यार हुआ इकरार हुआ* (*श्री 420* में लता और मन्ना डे); *रसिक बलमा* (*चोरी चोरी* में लता)।

दूसरे चरण में शास्त्रीय संगीत में उनकी प्रतिभा का वर्चस्व दिखा। 1956 में फिल्म *सीमा* से इसकी शुरुआत हुई थी, एसजे के लिए लता की मादक आवाज़ में गाई *मन मोहना* को हिंदी सिनेमा की सर्वाधिक कठिन शास्त्रीय संगीत रचना माना जाता है। फिल्म में मन्ना डे की अमर रचना *तू प्यार का सागर है* भी शामिल है।

बसंत बहार के बाद, मन्ना डे (*सुर ना सजे*) और मोहम्मद रफी *(दुनिया ना भाये)* दोनों एकल ने हैरान कर दिया था। लेकिन ऐतिहासिक युगल गीत था *केतकी गुलाब जूही,* जिसे फिल्म में मन्ना डे और हिंदुस्तानी संगीत के दिग्गज, पंडित भीमसेन जोशी के बीच एक संगीत प्रतियोगिता के रूप में दर्शाया गया था। मन्ना डे भीमसेन जोशी का सामना करने से बचने के लिए बॉम्बे छोड़ने वाले थे, लेकिन उनकी पत्नी ने मना कर दिया था। इस गीत को सिनेमा में शास्त्रीय संगीत की जीत के रूप में भी सराहा गया।

आइए 1960 के दशक की ओर चलते हैं, बॉलीवुड का सबसे समृद्ध दशक, झूमते, जगमगाते गीतों का दौर - लोक, शास्त्रीय, रॉक एंड रोल, भजन और कव्वालियां।

एक पार्टी में दिलीप कुमार, राज कपूर और संगीतकार जोड़ी शंकर जयकिशन।

एसजे की कार्यशैली

वो क्या था जिसने दो दशकों तक जनता को एसजे के संगीत की गिरफ्त में जकड़े रखा? एक दूसरे की पूरक थी दोनों की व्यक्तिगत प्रतिभा जिसने दोनों को सशक्त बनाया। एक से बढ़ कर एक उत्कृष्ट गायकों ने उनकी सम्मोहक धुनों को अपनी आवाज़ दी है। एक और वजह : उनके जंबो ऑर्केस्ट्रा में 60 गायक, तकनीशियन और संगतकारों द्वारा रचित संगीत, हार्मोनिक रिद्म से उपजी स्वर लहरी में झूमकर श्रोता अभिभूत हुए।

रिश्तों में दरार

दुर्भाग्य से, 1960 के दशक के दौरान एसजे के आपसी रिश्तों में तनाव पैदा हो गया था । कहा जाता है कि फिल्म उद्योग और जनता में जयकिशन की लोकप्रियता को ले कर शंकर निर्माताओं ने पहाड़ी इलाकों में रोमांटिक फ़िल्में बनाईं जिन के गाने दुनिया की ग्लैमर राजधानियों - पेरिस, टोक्यो, लंदन, रोम में फिल्माए गए।

एसजे का तीसरा चरण इसी दशक में शुरू हुआ, जब ये जोड़ी फिल्मों की व्यावसायिक सफलता के साथ शीर्ष पर जा पहुंची। *सूरज, असली नकली, झुक गया आसमान, प्रिंस, हरियाली और रास्ता, एन इवनिंग इन पेरिस, संगम, लव इन टोक्यो, प्रोफेसर, जिंदगी, आई मिलन की बेला, दुनिया, दिल एक मंदिर, राजकुमार, तुमसे अच्छा कौन है, दिल अपना और प्रीत पराई, ब्रह्मचारी, गुमराह, तीसरी कसम।*

याद हैं, *अजीब दास्तान है ये* (लता, *दिल अपना और प्रीत पराई,* 1960); *तेरा मेरा प्यार अमर* (लता: *असली नकली,* 1962); *याद ना जाय बीते दिनों की* (रफ़ी: *दिल एक मंदिर,* 1963); *दोस्त दोस्त ना रहा* (मुकेश: *संगम,* 1964); *बहारों फूल बरसाओ* (रफी, सूरज, 1966); पान खाये सैंया हमार (आशा भोसले: *तीसरी कसम,* 1966); *बदन पे सितारे* (रफ़ी: *प्रिंस,* 1969)?

बाएं से: मनोज कुमार, शंकर, राजेंद्र कुमार, राज कपूर, जयकिशन और दिलीप कुमार।

1950 और 60 के दशक में, यह ''राम-लक्ष्मण'' की जोड़ी व्यावसायिक सफलता की पराकाष्ठा थी।

बाएं से: हसरत जयपुरी, जयकिशन, राज कपूर, शंकर और शैलेंद्र।

जलते थे। उन्होंने 1960 के दशक में (हमेशा एसजे बैनर के तहत ही) अलग से संगीत की रचना शुरू कर दी जिसने धीरे-धीरे संगीत की गुणवत्ता को प्रभावित करना शुरू कर दिया था। *फिल्मफेयर* में जयकिशन ने लेख में खुलासा किया कि उन्होंने *संगम* फिल्म के गीत *ये मेरा प्रेम पत्र पढ़ कर* के लिए संगीत तैयार किया था, जिससे शंकर नाराज़ हुए थे। इसने उनके गोपनीयता कोड का उल्लंघन किया कि दोनों में से कौन किस गीत की रचना करता था। इसके अलावा, बिनाका गीत माला (संगीत की लोकप्रियता का लिटमस टेस्ट माना जाता है) ने जयकिशन द्वारा रचित *ये मेरा प्रेम पत्र पढ़ कर* को शंकर द्वारा उसी फिल्म के लिए रचित *दोस्त दोस्त ना रहा* पर शीर्ष स्थान दिया। इस पर शंकर के चहेतों ने हेरफेर का आरोप लगाया था।

शंकर द्वारा शारदा की आवाज का इस्तेमाल करने की जिद से ये मनमुटाव और बढ़ गया। (लता का कथन 'प्यार लोगों को अंधा बना देता है, लेकिन मुझे नहीं पता था कि यह उन्हें बहरा भी बना देता है' पूरे उद्योग में फ़ैल गया, जिससे शंकर बहुत व्यथित हुए थे।) पल्लवी जयकिशन ने आरोप लगाया था कि शंकर के साथ अनबन के चलते उनके पति शराब में और डूबते चले गए।

मृत्यु और अपकर्ष

12 सितंबर 1971 को लीवर सिरोसिस के कारण जयकिशन का निधन हो गया। वह केवल 42 वर्ष के थे। शंकर बर्बाद हो गए थे, लेकिन एसजे के बैनर तले काम करना जारी रखा। उधर, आरके और अन्य बड़े फिल्म निर्माताओं ने अन्य संगीतकारों का रुख कर लिया। उन्होंने शंकर से आर्केस्ट्रा भी छोटा करवाया था। लेकिन जब 1973 में राज ने लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल को *बॉबी* का संगीत दिया तो उन्हें गहरा आघात लगा। शंकर ने मेहनत करना जारी रखा और कुछ अच्छी धुनें भी बनाईं, लेकिन जयकिशन के बिना, गीतकार शैलेंद्र की अनुपस्थिति में, जिनका निधन भी हो चुका था, लता के सहारे के बिना, वे स्वयं की पूर्व छवि मात्र रह गए थे। टूट चुके शंकर का निधन 26 अप्रैल 1987 को हो गया।

शंकर और जयकिशन को बॉलीवुड संगीत के दिग्गजों में शुमार किया जाता है। उन्होंने माधुर्य में नवाचारों के साथ एक नया पथ प्रज्वलित किया। पृष्ठभूमि, संगीत और इंस्ट्रूमेंटेशन, फिल्म निर्माताओं, संगीतकारों और तकनीशियनों पर उनका गहरा प्रभाव था। उनके सदाबहार गीतों का आनंद कभी ख़त्म नहीं होगा और वो जनता का मनोरंजन कर झूमने पर विवश करते रहेंगे।

लेखक वरिष्ठ पत्रकार और रोटरी क्लब मद्रास साउथ के सदस्य हैं।

हमारी प्रसन्नता हमारे पेट से जुड़ी है

भरत और शालन सवुर

हमारे पास दो शक्तिशाली सहयोगी हैं - हमारा मस्तिष्क और हमारा पेट। ये दोनों हमें किसी भी परेशानी से बाहर निकालकर दोबारा मजबूती और शांत मन के साथ खड़े होने में हमारी मदद कर सकते हैं।

काम उड़ान देता है

दवा सुस्त बनाती है और समय उपचार करता है। इस बीच, काम या किसी भी अन्य गतिविधि पर हमारा ध्यान केंद्रित करना समझदारी है, हमारे दिमाग को केवल इससे हटाने के लिए ही नहीं बल्कि इसे उपचार पथ पर दोबारा लाने के लिए भी। यह इसे निराशा और मेरा-क्या-होगा के डर से दूर करता है। पूरे दिन हाथ-पैर सिकुड़कर सोना आसान है और इससे हमें कुछ वक्त के लिए अपने दर्द को भूलने में भी मदद मिलती है। उसके बाद, स्वयं को किसी काम में व्यस्त रखना अच्छा होता है।

गतिविधि मन को व्यक्तिगत तूफानों से मुक्त एक धरातल पर स्थायी रहने में सक्षम बनाती है। यह हमें नीचे खींचने वाली चीजों को भूलने में मदद करता है ताकि हम ऊपर उड़ सकें। यह हमारे अंदर के डर को हटाकर वहाँ आत्मविश्वास भर देता है, तो जहाँ भारीपन महसूस हो रहा था वहाँ अब हल्कापन महसूस होने लगता है। युक्ति इसे बनाए रखने में है।

हम कौन हैं?

70 देशों में तीस वर्षों के व्यापक शोध ने एक दिलचस्प बात सामने लाई है: स्पष्ट रूप से जीवन से जुड़ी हमारी संतुष्टि का केवल 15 प्रतिशत हिस्सा वित्तीय और सामाजिक स्थिति, शिक्षा, शौक, जातीयता और उम्र जैसी बाहरी परिस्थितियों से प्रभावित होता है; 25 प्रतिशत हिस्सा वंशाणु निर्धारित करते है; और 60 प्रतिशत हिस्सा इस बात पर निर्भर होता है कि हम क्या सोचते हैं और कैसे काम करते हैं, कैसे प्रतिक्रिया देते हैं, हमारी जीवन शैली कैसी है इत्यादि। यह जानना भी बहुत महत्वपूर्ण है कि हमारे वंशाणु केवल एक ब्लूप्रिंट मात्र हैं। जो हमारी समझ और जीवन शैली से प्रेरित होते हैं। यह आकर्षक है।

इस खोज ने मनोचिकित्सकों को बड़े पैमाने पर विचार करने और कुछ विवेकपूर्ण एवं उपयोगी निष्कर्षों पर पहुँचने के लिए कुछ तथ्यों को जोड़ने हेतु प्रेरित किया। चूंकि हमारे पेट में 39 ट्रिलियन सूक्ष्मजीव होते हैं जिनमें एक निश्चित मात्रा में आनुवंशिक सामग्री मौजूद होती है तो क्या खुशी के प्रति हमारा झुकाव हमारे पेट पर निर्भर हो सकता है? और क्या हम उन्हें सक्रिय कर सकते हैं? यदि हाँ, तो कैसे?

दिलचस्प बात यह है कि शोधकर्ताओं ने यह पाया कि FMT नामक एक प्रक्रिया के माध्यम से एक खुश व्यक्ति के स्वस्थ बैक्टीरिया को एक उदासीन रोगी व्यक्ति के जठरांत्र संबंधी मार्ग में डालने पर उस रोगी के स्वभाव में काफी सुधार आया! तो, हमारे पेट और अवसाद के बीच में क्या संबंध है? ऐसा है कि: हमारा पेट और मस्तिष्क एक दूसरे के साथ संवाद करते हैं।

पेट या आंतों में बैक्टीरिया, वायरस और कवक जैसे 39 ट्रिलियन सूक्ष्मजीव होते हैं। जब हम खाते हैं तो ये जीव उपयोगी रसायनों का उत्पादन करते हैं। वे वेगस तंत्रिका तंत्र के माध्यम से मस्तिष्क को संदेश देते हैं। यह तंत्रिका मस्तिष्क से शुरू होकर कैरोटिड धमनियों के साथ-साथ गर्दन से छाती तक जाती है फिर हमारी आंतों सहित हमारे अन्य अंगों तक

वितरित होती हैं। इस प्रकार, यह तंत्रिका पाचन के दौरान पेट के संकुचन या पेरिस्टलसिस के नियंत्रण के साथ-साथ हमारी हृदय गति को भी नियंत्रित करती है।

आंत और मस्तिष्क की हलचल

यह एक दो-तरफा संचार मार्ग है। हमारे द्वारा खाए जाने वाले भोजन से परेशान एक असहज आंत जो हमारे मस्तिष्क को पीड़ा के संकेत भेजती है। और चिंता, परेशानी या उदासी से ग्रस्त मस्तिष्क हमारी आंतों को पीड़ा के संकेत भेजता है। संक्षेप में: पेट की पीड़ा, चिंता और अवसाद की वजह या इसका परिणाम हो सकती है। हम सभी ने कभी न कभी इस संबंध का अनुभव किया है: घबराहट से पेट में बैचैनी होना, कोई बुरी खबर सुनने पर उल्टी जैसा महसूस होना... मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कहना है कि एक आदर्श स्थिति वो होती है जब हमारे पेट में विभिन्न तरह के बैक्टीरिया मौजूद हो और हमारा मस्तिष्क शांत हो। इससे हमारा शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

अच्छे बैक्टीरिया, बुरे बैक्टीरिया

हम तभी स्वस्थ रहते हैं जब हमारे अच्छे और बुरे बैक्टीरिया संतुलित होते हैं। अच्छे बैक्टीरिया को अच्छा इसलिए कहा गया क्योंकि यह न केवल पाचन में मदद करते है बल्कि खराब बैक्टीरिया को भी नियंत्रण में रखते है। इसलिए, अच्छे बैक्टीरिया के उच्च स्तर को बनाए रखने के लिए हमें अपने आहार और दवाओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है। एंटीबायोटिक समेत कई दवाएं हमारे पेट में बैक्टीरिया की आबादी को खराब कर सकती हैं। कुछ बैक्टीरिया गायब हो जाते हैं, कुछ स्वस्थ मापदंडों से अधिक बढ़ जाते हैं और नए संतुलन में हमें ऐसे बैक्टीरिया मिलते हैं जो दवाओं का विरोध करने में सक्षम हो जाते हैं। उम्र भी एक अन्य कारक है - जैसे-जैसे हमारी उम्र बढ़ती है हमारे अंदर बैक्टीरिया की विविधता कम हो जाती है। खैर, हमारी उम्र जो भी हो हमें एक खुशहाल, स्वस्थ जीवन जीने की आवश्यकता है ताकि हमारा पेट और हमारा मस्तिष्क दोनों अपनी आदर्श अवस्था में रहें।

यहाँ कुछ उपयोगी एवं व्यावहारिक सुझाव दिए गए हैं:

- **एक अनुकूल आहार अपनाएं।** संसाधित खाद्य पदार्थों, चीनी और लाल मांस को खाने से बचें। इससे आपके पेट को काफी जल्दी ठीक होने का अवसर मिलता है। अध्ययनों से पता चलता है कि एंटीबायोटिक दवाओं के बाद स्वस्थ व्यक्तियों को अपनी आधार रेखा पर लौटने में दो महीने लगते हैं; और गैर-स्वस्थ व्यक्तियों को इसमें 1-2 साल का समय लगता है।

- **प्रीबायोटिक्स अपनाएं।** इनमें फाइबर, इनुलिन, फल शर्करा होते हैं जो हमारे पेट को पोषित करते हैं और अच्छे बैक्टीरिया को सक्रिय रखते हैं। पोषण विशेषज्ञ प्याज, लहसुन, केला, अखरोट, किशमिश, तैलीय मछली और जई या ओट्स खाने की सलाह देते हैं।

- **प्रोबायोटिक्स भी खाएं।** इनमें वास्तविक बैक्टीरिया शामिल होते हैं जिन्हें पेट अवशोषित करता हैं और वे अच्छे बैक्टीरिया की संख्या को बढ़ाते हैं। इनमें दही, इडली, पनीर, हरी मटर, सेब शामिल हैं। मुझे प्रसिद्ध आहार विशेषज्ञ रुजुता दिवेकर से प्रीबायोटिक और प्रोबायोटिक भोजन को संयोजित करने का यह अद्भुत विचार प्राप्त हुआ। कटोरे के निचले हिस्से में काली किशमिश (प्रीबायोटिक्स) रखें। इसमें गुनगुना दूध डालें। इसे 32 बार हिलाएं और फिर इसे जमाने के लिए इसमें थोड़ा सा दही डालें।

गर्मियों में यह कुछ ही घंटों में और ठंड के मौसम में अगली सुबह तक खाने के लिए तैयार हो जाता है। रुजुता कहती है कि यह संयोजन दांतों और मसूड़ों, हड्डियों और जोड़ों के लिए अच्छा होता है, कब्ज को कम करता है, कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रित करता है, रक्तचाप को कम करता है और वजन घटाने में मदद करता है।

यदि आप कुछ नयापन चाहते हैं तो इसमें किशमिश की जगह खजूर का उपयोग कर सकते हैं। सावधानी: किशमिश या खजूर पर अधिक

यह एक दो-तरफा संचार मार्ग है। हमारे द्वारा खाए जाने वाले भोजन से परेशान एक असहज आंत जो हमारे मस्तिष्क को पीड़ा के संकेत भेजती है।

सेवन न करें खासकर तब जब आपको मधुमेह हो या आपका मप्री-डायबिटिकफ के रूप में निदान किया गया हो।

- **उदासी से दूर रहें।** प्राकृतिक जगह पर घूमना हमेशा से एक सुंदर अनुभव होता है। आप शांत और आरामदायक महसूस करते हैं। स्नान के बाद ये शांत भावनाएं और बढ़ जाती हैं। यहाँ अच्छी बात यह है कि कोई भी एरोबिक गतिविधि आपकी पेट की आबादी की विविधता में सुधार लाती है। विशेषज्ञ सप्ताह में 5 दिन 30 मिनट की तेज चाल या 15 मिनट की दौड़ करने का सुझाव देते हैं।

- **नियमित आदतें।** आज, डॉ रयान बैरिश जैसे मकार्यात्मक जीवन शैली चिकित्साफ के विशेषज्ञ मौजूद हैं जो कहते हैं, महमारे शरीर को स्थिरता और पूर्वानुमेयता पसंद है, अर्थात: हमें हर दिन एक ही समय पर सोना और जागना चाहिए। हमें एक ही समय पर भोजन करना चाहिए और सप्ताहांत पर भी वैसा ही करना चाहिए।फ इस नियमितता से तनाव कम होता है, सूजन में भी कमी आती है और पेट शांत एवं स्वस्थ रहता है।

आप अपने पेट की आबादी का ख्याल रखें और आपके पेट की आबादी आपका ख्याल रखेगी।

लेखक फिटनेस फॉर लाइफ, *और*
बी सिम्पली स्पिरिचुअल - यू आर नैचुरली
डिवाइन *के लेखक है और फिटनेस*
फॉर लाइफ कार्यक्रम के शिक्षक है।

शब्दों की दुनिया

विश्व युद्ध की कहानियां

संध्या राव

एक अंतर्राष्ट्रीय उड़ान, एक औपचारिक बातचीत, एक विध्वंस और एक किताब... और भी बहुत कुछ

आपको ज़रा भी आभास नहीं है, कि आपकी ज़िन्दगी में कब, कहां और क्या घट जाये। मुझे अमेरिकी पत्रिका MAD की याद आ रही है जिसमें मस्पाई वर्सेस स्पाईफ नामक एक कॉमिक स्ट्रिप चला करती थी, जिसमें ख़ुफ़िया जासूसों की बहुत ही रोमांचक कहानीयां हुआ करती थी, उसमें एक चरित्र को सारे कपड़े काले और दूसरे को पूरे सफेद कपड़े पहने हुए दिखाया जाता था। विकिपीडिया के अनुसार यह क्यूबा के प्रवासी कार्टूनिस्ट एंटोनियो प्रोहियास द्वारा शीत युद्ध की विचारधाराओं की पैरोडी करने के लिए बनाया गया था। पहली बार 1952 में इसका प्रकाशन एक कॉमिक के रूप में किया गया था, जल्द ही यह प्रभावशाली पत्रिका चारों तरफ छा गई, जिसमें राजनीति और संस्कृति की खुले रूप से निंदा की जाती थी। 1970 के दशक में कॉलेज जाने वाली हमारी पीढ़ी इसकी बड़ी प्रशंसक थी!

चलिए, अपनी उड़ान की तरफ लौटते हैं, कागज का एक पुर्जा जिस पर कुछ लिखा था, हैंडबैग खाली करते हुए बाहर गिर पड़ा, मुझे एक सहयात्री के साथ हुई बातचीत की याद ताज़ा हो गई, जब कुछ साल पहले हमने अटलांटिक के ऊपर से उड़ान भरी थी। उसका सबंध लंदन में एक बड़े होटल के साथ था; उसका परिवार इज़राइल से आया था; उसके तीन बच्चे थे और पत्नी लेखिका थीं। विशेष रूप से उनकी एक किताब ने बहुत धूम मचाई थी। कागज के टुकड़े पर यही लिखा था : *टू प्रेयर्स बिफोर बेडटाइम...* नादिन वोजाकोवस्की। बिलकुल सही सोच रहे हैं आप, मैंने किताब का आर्डर दे दिया था, लेकिन आने के बाद ये सीधे बुकशेल्फ़ में चली गई, अभी तक बिना पढ़ी रखी है ।

टू प्रेयर्स बिफोर बेडटाइम का पृष्ठ आवरण बताता है कि यह 11+ उम्र के पाठकों के लिए है और यह मसंस्मरण और युद्ध- काल के एम्स्टर्डम में प्रेम और उसे खो देने की की कहानीफ : 11 और उससे बड़ी उम्र के सभी लोगों के लिए है ये किताब। हम सभी जानते हैं कि मयुद्ध- काल के एम्स्टर्डमम के क्या मायने हैं और हम में से कई लोगों ने नरसंहार विषय के इर्द गिर्द लिखी गई कई किताबें पढ़ी हैं हैं। सबसे लोकप्रिय, शायद, *द डायरी ऑफ़ ऐनी फ्रैंक* है, जिसे लेखक के पिता, ओटो फ्रैंक द्वारा मरणोपरांत प्रकाशित किया गया था। ऐनी फ्रैंक, अपनी माँ और बहन के साथ, 1945 में एक यातना शिविर में रहते हुए मर गईं; वह मुश्किल से 16 साल की थी। किताब एक डायरी है जिसे उसने नीदरलैंड के नाजी कब्जे के एम्स्टर्डम में छिपने के दौरान साथ रखा था।

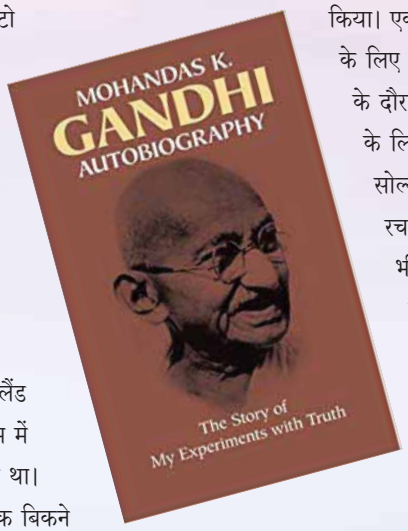

एक और सबसे अधिक बिकने वाला उपन्यास, मेग वाइट क्लेटन द्वारा *द लास्ट ट्रेन टू लंदन* है, फिर से, यह वैसी ही कहानी पर आधारित है कि कैसे यूरोप से बाहर हजारों यहूदी बच्चों को तस्करी कर सुरक्षित

कई किताबें! उन मुश्किल हालात में, अकेलेपन और उत्पीड़न के डर के दौरान, पढ़ने और लिखने से समय व्यतीत करने में उन्हें काफी मदद मिली।

देशों में स्थानांतरित कर दिया गया था, एक डच महिला, ट्रूसविस्मुल्र के साहस को धन्यवाद, या टांटेट्रूस जैसा कि उसे बुलाया जाता था। ऑपरेशन और खतरनाक हो गया था क्योंकि देशों ने अपनी सीमाओं को बंद कर दिया - जिस तरह अभी हाल के दिनों में सीरियाई शरणार्थियों के लिए कई देशों ने अपनी सीमाओं को बंद कर दिया या सीरिया में भूकंप प्रभावितों की मदद से इनकार कर दिया, या कैसे दुनिया भर के देशों ने गृहयुद्ध और उत्पीड़न के चलते, देश छोड़ कर भाग रहे लोगों को शरण नहीं देने की नीति बनाई। ट्रूस विजस्मुल्र के अपने बच्चे नहीं थे, लेकिन यहूदी बच्चों को सुरक्षित लाने के लिए उसने वह दुस्साहस भरा काम किया। एक समय पर, सहायता के लिए उसने दूसरे विश्व युद्ध के दौरान यहूदियों के नरसंहार के लिए कुख्यात मफाइनल सोल्यूशनफ योजना के रचनाकार एडॉल्फ इचमैन से भी संपर्क किया था। आप इस पुस्तक के बारे में *वर्ल्डवर्ल्ड* जनवरी 2021 अंक में और अधिक पढ़ सकते हैं।

टू प्रेयर्स बिफोर बेडटाइम में क्लेटन की लेखन शक्ति या साहित्यिक उत्कृष्टता ज़रा भी नहीं दिखती है; बल्कि आप यह भी कह सकते हैं कि बाकि विध्वंस और नरसंहार लेखन में इससे भी दारुण कहानियाँ दर्ज हैं। फिर भी,

यह सीधे दिल से निकली है और जैसा कि एक युवा समीक्षक ने कहा, यह निश्चित रूप से युद्ध के बारे में बहुत कुछ सिखाती है। लेखिका हमें बताती है कि मकहानी / संस्मरण मेरी दादी, सिल्वी बिटरमैन की सच्ची कहानी पर आधारित है, और कैसे उन्हें और मेरे दादा यूजेन को, अपनी बेटी रेनाटा (मेरी मां) और बेटे आर्थर को द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान छिपने के लिए गुप्त स्थान पर भेजना पड़ा था।यह वाय और आर्ट वर्सनेल के साहसिक प्रयासों के बारे में भी बताती है, जिन्होंने नाज़ी के कब्जे वाले हॉलैंड में एक यहूदी बच्चे को छुपाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाली थी।फ पुस्तक के अंत में दी गई तस्वीरें अनुभव को जीवंत करती हैं। महत्वपूर्ण रूप से, यह पुस्तक युद्ध की निरर्थकता और घृणा व भेदभाव के दुष्परिणामों की एक बार फिर से याद दिलाती है। यह मानवीय भावना का भी एक दस्तावेज़ है जिसे अमानवीय कृत्यों से ऊपर उठकर खुद को प्रकट करने के लिए लगातार कहा जाता है, चाहे वह व्यक्तियों द्वारा किया गया कृत्य हो या राज्य द्वारा प्रेरित हो। यह इस विश्वास को दोहराता है कि मानवीय भावना हमेशा प्रबल रहेगी।

यह पुस्तक सिल्वा, नायक, और उसके पति, एडमंड के पात्रों के माध्यम से जीवित अनुभवों की कहानी है, जिन्हें अपने बच्चों, लगभग छह साल के एक लड़के और लगभग दो साल की एक लड़की को प्रतिरोध बलों द्वारा बनाये गए सुरक्षित घरों में भेजने के लिए मजबूर किया जाता है। गेस्टापो, नाजी पुलिस से बचने के लिए, उन्हें खुद भी, छिपने के लिए, अलग-अलग शहरों/कस्बों में,अलग-अलग जगहों पर जाना पड़ता है। वे किसी तरह अंधेरे, तंग आवास में रहने, शौचालय सुविधाओं तक सीमित पहुंच, थोड़ा भोजन और शायद ही ताजी हवा के बावजूद, बच जाते हैं । दिन, सप्ताह, महीने घिसटते हुए प्रतीत होते हैं, युद्ध का कोई अंत नहीं है। सबसे बुरी सजा है अपने छोटे बच्चों से अलग होना; वे उनकी खबर के लिए तरसते रहते हैं।

कई बार उन्हें इस सब से राहत मिलती थी, जैसे कि जब वे हंस और एला बोक के घर में बनी अटारी में छिपे थे: मअटारी में काफी जगह थी जिसे परिवार द्वारा भंडारण के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। मअटारी दूसरी मंजिल की छत में गुप्त रूप से बनाई गई थी और वहां सीढ़ी से ही पहुँचा जा सकता था। अटारी को और अधिक आरामदायक बनाने के लिए बोक्स ने बहुत मेहनत की थी। उन्होंने चेंजिंग रूम बनाने के लिए एक क्षेत्र में पार्टीशन लगाया, पुराने कालीन बिछाए, अटारी के छोटे छोटे झरोखों पर पर्दे लटकाए, और एक टेबल, कुछ कुर्सियाँ और कई किताबें रख दी थी।

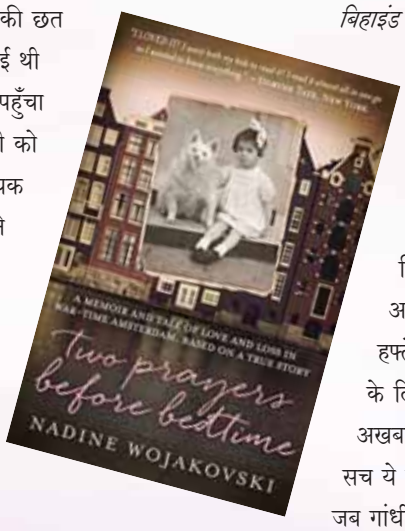

कई किताबें! उन मुश्किल हालात में, अकेलेपन और उत्पीड़न के डर के दौरान, पढ़ने और लिखने से समय व्यतीत करने में उन्हें काफी मदद मिली। उन्होंने पढ़ा या उन्होंने लिखा; कभी-कभी वे पढ़ते और लिखते थे। ऐनी फ्रैंक एक डायरी रखती थी, जवाहरलाल नेहरू ने जेल में रहते हुए अपनी कुछ सबसे प्रसिद्ध पुस्तकें लिखीं, जेफरी आर्चर ने तीन-खंड के संस्मरण लिखे, (*ए प्रिज़न डायरी* (जिसे मैंने अभी पढ़ना शुरू किया है... कोरोनावायरस-प्रेरित लॉकडाउन के दौरान किताबें एक शक्तिशाली, तनाव मुक्ति का सकारात्मक अस्त्र थी।

खाली कुर्सियां, खाली घर, खाली आत्माएं। संकेत हर जगह मौजूद थे – विशेष रूप से गर्मियों में जब ऑशविट्ज़ यातना कैंप से बचे लोगों की बाहों पर गहरे नीले रंग की स्याही से लिखी संख्या से मौत की संख्या मालूम पड़ी थी।

ऐसा जान पड़ता है कि अगर बोलीविया के कैदी किताबें पढ़ें तो वो अपनी जेल की अवधि कम कर सकते हैं! यह कार्यक्रम *'बुक्स बिहाइंड बार्स,'* ब्राजील में इसी तरह की कोशिश के बाद तैयार किया गया है! ऐसा प्रतीत होता है कि महात्मा गांधी की पुस्तक 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग की कहानी' तिहाड़ जेल, दिल्ली में सबसे अधिक मांग में रही है: '... हर हफ्ते कम से कम 10 कैदी पढ़ने के लिए ये किताब लेते हैंफ एक अखबार की रिपोर्ट ये कहती है। सच ये है कि मयह तब लिखी गई थी जब गांधी खुद एक कैदी थे - यरवदा जेल में - यही इसकी लोकप्रियता का कारण है'

सिल्वा के लिए, छिपने के सभी स्थान उतने अच्छे, सुविधापूर्ण नहीं थे, और युद्ध की समाप्ति तक, सिल्वा और एडमंड 900 से अधिक दिन छिप कर रहे थे; वे लगभग 1000 दिवस अपने बच्चों से अलग रहे थे! वे भाग्यशाली रहे क्योंकि अंततः उनका परिवार फिर से मिल गया, इस बीच उन्होंने अपने कई रिश्तेदारों को खो दिया। उन्हें, हर किसी की तरह, इन मानसिक आघात के दुष्प्रभावों से गुजरना पड़ा था। नाडीन लिखती है: ''इस बात को याद दिलाते निशाँ हर जगह मौजूद थे-बिना पत्नी के पुरुष, बिना पति के पत्नी, बिना बच्चों के माता-पिता, बिन माँ-बाप के बच्चे, लावारिस बच्चा। खाली कुर्सियां, खाली घर, खाली आत्माएं। संकेत हर जगह मौजूद थे - विशेष रूप से गर्मियों में जब ऑशविट्ज़ यातना कैंप से बचे लोगों की बाहों पर गहरे नीले रंग की स्याही से लिखी संख्या से मौत की संख्या मालूम पड़ी थी ...''

अप्रत्यक्ष रूप से कहूँ तो, ये हमें याद दिलाती है कि दुनिया और अधिक संख्याओं को स्याही में रंगे बिना रह सकती है।

स्तंभकार बच्चों की लेखिका और वरिष्ठ पत्रकार हैं।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब पांडिचेरी लेगसी - रो ई मंडल 2981

क्लब ने पुडुचेरी के इंदिरा गांधी मेडिकल कॉलेज एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट को ₹4.5 लाख की लागत से तीन CPAP और चार BiPAP मशीनें दान की।

रोटरी क्लब गाज़ियाबाद नॉर्थ - रो ई मंडल 3012

विजय नगर के सरकारी छात्रा इंटर कॉलेज के परिसर की क्षतिग्रस्त दीवार का ₹2 लाख की लागत से पुनर्निर्माण एवं जीर्णोद्धार किया गया।

रोटरी क्लब सेलम फीनिक्स - रो ई मंडल 2982

दृष्टिबाधितों के लिए 23 नए सदस्यों वाले एक नवगठित रोटरेक्ट क्लब फीनिक्स विझिगल ने एक विकलांग को ट्राईसाइकिल दान की।

रोटरी क्लब वैज़ाग कपल्स - रो ई मंडल 3020

दुर्गानगर के बी वी के हाई स्कूल की कक्षा 2-8 के आठ योग्य परंतु वंचित विद्यार्थियों को क्लब द्वारा प्रायोजित किया जा रहा है।

रोटरी क्लब तिरुचिरापल्ली मिडटाउन - रो ई मंडल 3000

क्लब ने शंकर हेल्थ फाउंडेशन के साथ साझेदारी में त्रिची के हिंदू मिशन अस्पताल में शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्तियों को कृत्रिम पैर दिए।

रोटरी क्लब मिल्क सिटी संगम चालीसगांव - रो ई मंडल 3030

सरकारी जिला परिषद उच्च प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की मदद से कन्नड घाट के जूनोन गांव में 1,000 से अधिक पेड़ लगाए गए।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब बुरहानपुर - रो ई मंडल 3040

आदिवासी लड़कों के एक छात्रावास में 65 छात्रों को नए ट्रैकसूट, जूते और क्रिकेट की किटें वितरित की गई।

रोटरी क्लब चिखली रिवरफ्रंट - रो ई मंडल 3060

नवसारी के रोटरी आई इंस्टीट्यूट की मदद से दो गांवों के दो नेत्र शिविरों में लगभग 500 रोगियों की जांच की गई।

रोटरी क्लब जोधपुर पद्मिनी - रो ई मंडल 3053

सरकारी स्कूलों को ₹15.5 लाख की लागत से 595 डेस्क-बेंच दान किए गए।

रोटरी क्लब पटियाला मिड टाउन - रो ई मंडल 3090

विश्व स्वास्थ्य दिवस के मौके पर रौंगला के एक आश्रम के रहवासियों को हेल्पिंग हैंड्स इंडिया द्वारा प्रायोजित 12 व्हीलचेयर और वॉकिंग स्टिक दान की गईं।

रोटरी क्लब श्री माधोपुर सनराइज़ - रो ई मंडल 3054

जयपुर के शंकर नेत्र अस्पताल में 40 रोगियों का मोतियाबिंद के लिए इलाज किया गया। अब तक 947 मरीजों की सर्जरियाँ की जा चुकी है।

रोटरी क्लब अलाहाबाद मिडटाउन - रो ई मंडल 3120

नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के सहयोग से आयोजित किए गए एक कृत्रिम अंग फिटमेंट शिविर में लगभग 360 विकलांगों को लाभ हुआ।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब कराड - रो ई मंडल 3132

संस्कार नेत्र रुग्णालय के सहयोग से पाथरवाड़ी गांव में एक नेत्र शिविर का आयोजन किया गया।

रोटरी क्लब सावंतवाड़ी - रो ई मंडल 3170

रोटरी क्लब ठाणे इम्पीरियल के साथ संयुक्त रूप से आयोजित किए गए RYLA में 300 रोटरेकटरों ने भाग लिया। प्रश्नोत्तरी, नृत्य, मनोरंजन शो और प्रेरक सत्रों ने इस कार्यक्रम में जान डाल दी।

रोटरी क्लब मीरा रोड - रो ई मंडल 3141

ग्रामीण विद्यालय, मीरा गांव में एक पुस्तकालय स्थापित किया गया। जहाँ आनंद भटकल ने अलमारी दान की वहीं उदय कुलकर्णी द्वारा किताबें प्रायोजित की गई।

रोटरी क्लब नीलमंगला - रो ई मंडल 3190

नगीनाहल्ली के एक परिवार के तीन विकलांग बच्चों को व्हीलचेयर दान की गई।

रोटरी क्लब मंगलागिरी - रो ई मंडल 3150

रोटरी क्लब हैदराबाद डेक्कन और रोटरी क्लब लेक डिस्ट्रिक्ट मोइनाबाद के साथ एक संयुक्त पहल में फेरीवालों को लगभग 200 ठेला गाड़ियाँ वितरित की गई।

रोटरी क्लब पेरुम्बवूर सेंट्रल - रो ई मंडल 3201

डीजी राजमोहन नायर ने *प्रोजेक्ट परपीदम* के अंतर्गत एक लाभार्थी को एक नए घर की चाबी सौंपी।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब इरोड नॉर्थ - रो ई मंडल 3203

डीजी बी एलंगकुमारन ने इरोड मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के कर्मचारियों द्वारा निकाली गई विश्व टीबी रैली के बाद डॉक्टरों और स्वयंसेवकों को सम्मानित किया।

रोटरी क्लब तूतीकोरिन ट्रेलब्लेज़र्स - रो ई मंडल 3212

तूत्तुकुडी के एक्सटेंशन मिडिल स्कूल के लगभग 40 छात्रों की एक दंत शिविर में जांच की गई और उन्हें दंत किटें वितरित की गई।

रोटरी क्लब पिलाथरा - रो ई मंडल 3204

क्लब अध्यक्ष के रवींद्रन ने चेरुथाळम के सरकारी हाई स्कूल की छात्राओं को साइकिलें दान की।

रोटरी क्लब मद्रास साउथ - रो ई मंडल 3232

फोर्ड कंपनी के साथ एक संयुक्त पहल में क्लब ने एक डिजिटल साक्षरता अभियान के अंतर्गत स्कूलों एवं संस्थानों को 17,000 लैपटॉप और कंप्यूटर दान किए।

रोटरी क्लब अलेप्पी ग्रेटर - रो ई मंडल 3211

क्लब अध्यक्ष विजयकुमार की उपस्थिति में अलेप्पी के सरकारी महिला एवं बाल अस्पताल को कपड़े दान किए गए।

रोटरी क्लब भुवनेश्वर मेडोज़ - रो ई मंडल 3262

एक स्वास्थ्य जांच शिविर में 25 से अधिक वयस्कों और 12 बच्चों की जांच की गई। क्लब के सचिव विकास और सदस्य विजयलक्ष्मी कर ने इस शिविर का प्रबंधन किया।

वी मुत्तुकुमारन द्वारा संकलित

गर्मियों का नैराश्य

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

इस साल उत्तर भारत में वसंत का महीना शानदार गुजरा। पूरे मार्च में तापमान 15 से 30 डिग्री सेल्सियस के बीच डोलता रहा। आमतौर पर यह 33-35 तक चला जाता है। कभी कभार बारिश भी होती रही और बीच-बीच में तेज हवाएं भी चलीं। दोनों की वजह से प्रदूषण दूर-दूर तक नहीं दिखा। पक्षियों ने भी अच्छे समय का आनंद लिया और वो देर शाम तक चहचहाते रहे । फूलों को प्रस्फुटित में ज़रूर थोड़ी देर हो गई थी लेकिन मार्च के दूसरे सप्ताह के आसपास अंततः खिल गए, इस अद्भुत छठा को निहारने का आनंद ही अलग था। वास्तव में, जैसा कि एक कवि ने कहा है कि लार्क पंख पर था और घोंघा कांटे पर था और दुनिया में सब कुछ सब सही था।

बढ़िया समय अप्रैल के पहले सप्ताह तक चला और जब मैं ये पंक्तियाँ लिख रहा हूँ, हम दूसरे सप्ताह में प्रवेश कर चुके हैं। मौसम अभी भी बहुत सुहावना है। लेकिन, जिस प्रकार निश्चित रूप से दिन के बाद रात होती है, मैं गर्मी की दस्तक को महसूस कर सकता हूं, नथुने अभी हलके से कुनमुनाते हैं, लेकिन, कुछ समय बाद आग उगल रहे होंगे।

अप्रैल की शुरुआत में, मैं और मेरी मित्र एक दोपहर लंच पर गए थे। आने वाली गर्मी का पहला संकेत सड़क पर उड़ती धूल से बनने वाले छोटे-छोटे भंवर को देख कर महसूस किया जा सकता था। मेरी महिला मित्र केरल में पश्चिमी घाट की पहाड़ियों में पली-बढ़ी थी, उसने चेन्नई के कॉलेज में गुजारे अपने पहले महीने की बात करना शुरू किया। गर्मी का झटका बहुत तेज था। वो बोली कि वह विश्वास नहीं कर सकती कि इतनी गर्मी भी पड़ सकती है। रात को वह अपने गद्दे को ठंडा रखने के लिए उस पर पानी डालती थी।

लेकिन, मैंने कहा, शाम 4 बजे के बाद जब समुद्री हवा चलने लगती हैं,चेन्नई ठंडा हो जाता है। उसने कहा कि छात्रावास के कमरों की खिड़कियां पश्चिम की तरफ हैं और पंखे नहीं थे इसलिए कमरे भट्टी की तरह हो जाते थे, सुगंधित रहते थे, उन इत्रों की वजह से जो लड़कियां इस्तेमाल करती थीं, साथ ही नरक की तरह गर्म रहते थे। इसलिए जब एक महीने बाद उसके पिता मिलने आए तो वह खूब रोई थी। वह तुरंत प्रिंसिपल के पास गए और पूरे विंग के लिए पंखे लगाने का मशवरा दे डाला!

लेकिन मेरी किस्मत ऐसी नहीं थी, मैं बोला। जब मैं दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रावास में रहता था तब मेरे पिताजी एक बार भी नहीं आए। हमारे पास पंखे भी नहीं होते थे और ₹10 प्रति माह के हिसाब से टेबल पंखा किराए पर लेना पड़ता था। समस्या यह थी कि कमरे में केवल एक बिजली का सॉकेट था और हम या तो पंखा चला सकते थे या डेस्क पर टेबल लैंप। फैन जीत गया था। जो लोग दिल्ली से अपरिचित हैं, यहां बता दूँ कि यह अत्यधिक गर्म हो जाती है, 42^0 सेल्सियस से ऊपर। मैं और मेरे दोस्त कमरों को ठंडा करने के लिए बिस्तरों और पर्दों पर पानी डालते थे। लेकिन चेन्नई के विपरीत, दिल्ली की गर्मी बहुत शुष्क है और एक घंटे में सारी नमी वाष्पित हो जाएगी।

दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रावास में हमारे पास पंखे भी नहीं होते थे और ₹10 प्रति माह के हिसाब से टेबल पंखा किराए पर लेना पड़ता था। समस्या यह थी कि कमरे में केवल एक बिजली का सॉकेट था और हम या तो पंखा चला सकते थे या डेस्क पर टेबल लैंप। फैन जीत गया था।

कभी-कभार, मैं और मेरे दोस्त लॉन में घास पर भी सोते थे। उन दिनों दिल्ली में मच्छर नहीं हुआ करते थे क्योंकि वहां वनस्पति बहुत कम होती थी। अब हमारे पास मच्छर और एयर कंडीशनर दोनों हैं, जो तब तक अच्छा है जब तक कि मच्छर भी एयर कंडीशनिंग पसंद ना करने लगें। ऐसा मानसून के महीनों में होता है। इसलिए हम उन जहरीले मच्छर भगाने वाले आल आउट को प्लग में लगा देते हैं। पंद्रह साल पहले हम मच्छर भगाओ अगरबत्ती जलाया करते थे जिनसे कमरा धुएँ से भर जाता था। इसलिए हम खिड़कियाँ खोल दिया करते थे - और मच्छरों को अंदर आने देने के लिए। और निश्चित रूप से, हमें एसी बंद करना पड़ता था क्योंकि गर्म नम हवा अंदर आती थी। मैंने अपने दोस्त से कहा कि ये लड़ाई नहीं जीत सकते थी। अब हम पांच महीने की अत्यधिक परेशानी के लिए खुद को तैयार कर रहे हैं। आज जो नीला आसमान और ठंडी हवाएं हमारे पास है, हमारी यादों में होगा और उसकी जगह होगा उनके ऊपर महीन धूल की परत से सजा वह विशाल उत्तर भारतीय मैदान। ■

Rtn. Jennifer E.Jones
R.I.Preisident

Rtn. AKS. V.R.Muthu
District Governor

Rotary

IMAGINE ROTARY

END POLIO NOW

ADVT.

More than 2.5 billion Children saved from Polio

Thank you so much for your Donation towards Polio

YOUR MONEY WILL BE SPENT ON

- Raising Awareness
- Vaccines
- Getting vaccine to the children
- Detecting disease
- Remuneration to Epidemiologists
- Research

Contact :
Dr.Chinnadurai Abdullah
EPNC - Zone 5
98424 21334

Now is our chance to change the world. To Make sure no child is disabled by polio ever again. Join in. Speak out. Donate. Be a part of history.
endpolionow.org

We Are This Close To Ending Polio

To reach a Polio free World...

Donate Rs.1 Lakh
(as one time payment)
Get recognized as
END POLIO FELLOW

Donate 100 USD
and give a pledge to donate
100 USD every year till polio is eradicated.
Get recognized as Polio Plus Society Member

A.R.Rahman

LEKHA ad/Apr 2023/R.I/03

COURTESY

IDHAYAM Mantra
SAY IDHAYAM • SPELL HEALTH

Registered No. TN/CCN/359/2021-2023 | Total number of pages in this monthly
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP 421/21-23 | issue, including cover, 84. Price: ₹40
Registered with Registrar of News Papers for India TNHIN/2001/05271 Rotary Samachar Published on the first week of every month. Posted at Egmore RMS Patrika channel.

ADVT.

Excel group
www.excelgroup.co.in
Project Cargo Specialist..!!

Customer | Service | Quality
FIRST

Excel maritime
Your Global Logistics Partner
Transportation of Windmill Turbine Sections & Nacelle across India

Contact: +91 44 49166999 | +91 93827 50004
Mail: excel@excelgroup.co.in
/ excelgroup | www.excelgroup.co.in

MMMTRICHY
PDG AKS Rtn Muruganandam M
B.E., M.B.A., M.S., M.F.T., PGDMM., DEM.,
RPIC - Zone 5 (2023-2026) | District Trainer (2023-24)
District Governor (2016-17) | RID 3000
Chairman - Excel Group of Companies

மாறு..!! மாற்று..!!
/ mmmtrichy | www.mmmtrichy.com